भाषा भारती

कक्षा 8

समग्र शिक्षा

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगल-दायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

(हर देश का अपना एक विशिष्ट झंडा और राष्ट्रगान होता है। ''तिरंगा झंडा'' भारतवर्ष का राष्ट्रध्वज है और ''जनगणमन'' राष्ट्रगान। राष्ट्रध्वज में ऊपर की पट्टी केसरिया रंग की और नीचे की हरे रंग की होती है। बीच की सफेद पट्टी के बीचों बीच २४ शलाकाओं का नीले रंग में गोल-चक्र होता है। केसरिया रंग त्याग का, सफेद शांति का और हरा रंग प्रकृति की सुन्दरता का प्रतीक है। चक्र का स्वरूप अशोक की सारनाथ-स्थित सिंहमुद्रा में अंकित चक्र की भाँति है यह चक्र सत्य और सब धर्मों का प्रतीक है।

राष्ट्रगान की रचना गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। इसमें संपूर्ण देश के लिए मंगल-कामना है। राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। जब राष्ट्रगान गाया जाये या उसकी धुन बजाई जाये अथवा राष्ट्रध्वज फहराया जाये, तब हमें सावधान की स्थिति में खड़े होकर इसे सम्मान देना चाहिए।)

भाषा भारती

(हिन्दी विशिष्ट)

कक्षा - 8

म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

सा विद्या या विमुक्तये

समग्र शिक्षा

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

इस पुस्तक के मुद्रण में उपयोग किए गए कागज का स्पेसिफिकेशन
अन्त: पृष्ठों का मुद्रण कागज, 70 जी.एस.एम. वाटर मार्क मेपलिथो BIS गुणवत्ता IS 1848 (Part-I) : 2018
बाह्य पृष्ठों का कवर कागज- 250 जी.एस.एम., कोटेड एम.जी.
'पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर वाटर मार्क है'

l = **2025-26**

प्रकाशन वर्ष-2007 © म. प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, बी-विंग, अरेरा हिल्स,
पुनर्मुद्रण-2008, से पुनर्ससंशोधन-2017, 2018, 2019,2020, 2021, 2022, 2023

- **निदेशन** : **एम. के. सिंह, आयुक्त**, म. प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **मार्गदर्शन** : **संतोष मिश्रा,** अपर संचालक, म. प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **संयोजन** : **शकुन्तला श्रीवास्तव,** म. प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
  संशोधन समन्वयक डॉ. लोकेश खरे, राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **समन्वयक** : ◆ **सुधा मिश्रा,** ◆ **डॉ. वन्दना पाराशर**, राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **सम्पादक** ◆ **डॉ. देवेन्द्र दीपक**, निदेशक साहित्य अकादमी भोपाल ◆ **डॉ. रामेश्वर मिश्र 'पंकज'**, न्यासी सचिव भारत भवन भोपाल ◆ **डॉ. प्रेम भारती**, शिक्षाविद् एवं सदस्य, राज्य स्तरीय साधारण सभा व कार्यकारिणी, म.प्र. सर्व शिक्षा अभियान
- **मॉडरेटर** : **श्रीमती श्यामा शुक्ला**, प्राचार्य, सरस्वती शिशु मंदिर, खरगोन (म.प्र.)
- **लेखक गण** : ◆ **डॉ. मुरारीलाल उपाध्याय**, पूर्व वरिष्ठ व्याख्याता, मुरैना। ◆ **डॉ. वंदना मिश्र**, व्याख्याता, उत्कृष्ट उच्चतर मा.वि., बीना ◆ **साहिब सिंह तोमर**, पूर्व प्रधानाध्यापक, मुरैना ◆ **डॉ. सी. एल. मिश्रा**, पूर्व उप नियंत्रक म.प्र. व्यवसायिक परीक्षा मंडल, भोपाल ◆ **डॉ. नरेन्द्र मिश्र**, सहायक प्राध्यापक साधु वासवानी कॉलेज, भोपाल। ◆ **छाया पाठक,** सहायक प्राध्यापक डी.ए.व्ही. महाविद्यालय, भोपाल। ◆ **पी. एन. शर्मा,** व्याख्याता, डाइट, देवास। ◆ **प्रदीप सोनी 'शून्य'** बी.ए.सी. जनपद शिक्षा केन्द्र, बेगमगंज (रायसेन) ◆ **देवकृष्ण व्यास**, सहायक शिक्षक मा.वि. राजौदा (देवास)।
- **सहयोग** : ◆ **डॉ. लोकेश खरे,** ◆ **सुमन सिंह,** ◆ **सोनल वशिष्ठ**, राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **मुखपृष्ठ** : **विकास मालवीय** • **चित्रांकन :** इम्तियाज खान, विनय सप्रे
- **आकल्पन** : **संकेत ग्राफिक्स,** भोपाल • **प्री-प्रेस कार्य :** मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

म.प्र. पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित

1.	**डॉ. गोविन्द शर्मा,** पूर्व अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा मध्यप्रदेश शासन, ग्वालियर	**अध्यक्ष**
2.	**डॉ. उमराव सिंह चौधरी,** पूर्व कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर	**सदस्य**
3.	**प्रो. उदय जैन,** पूर्व प्राचार्य, श्री वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर	**सदस्य**
4.	**डॉ. सुभाष गुप्ता,** डीन, छात्र कल्याण, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर	**सदस्य**
5.	**डॉ. (श्रीमती) बिनय राजाराम,** हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री सत्यसाई महिला महाविद्यालय, भोपाल	**सदस्य**
6.	**प्रो. सुरेश्वर शर्मा,** पूर्व कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर	**सदस्य**
7.	**डॉ. प्रकाश बरतुनिया,** सहायक महाप्रबंधक, आई.डी.बी. आई, भोपाल	**सदस्य**
8.	**डॉ. मनमोहन उपाध्याय,** शिक्षाविद् एवं उपाध्यक्ष, म.प्र. संस्कृत बोर्ड, भोपाल	**सदस्य**
9.	**श्री भगीरथ कुमरावत,** शिक्षाविद् भोपाल	**सदस्य**
10.	**आयुक्त राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल**	**सदस्य सचिव**
11.	**आयुक्त (पदेन) लोकशिक्षण संचालनालय, भोपाल**	**सदस्य**
12.	**सचिव (पदेन) माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल**	**सदस्य**
13.	**प्रबन्ध संचालक (पदेन) मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल**	**सदस्य**
14.	**प्रतिनिधि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, भोपाल**	**सदस्य**
15.	**प्रतिनिधि नवोदय विद्यालय, भोपाल**	**सदस्य**
16.	**डॉ. प्रेम भारती,** शिक्षाविद् एवं सदस्य, राज्य स्तरीय साधारण सभा व कार्यकारिणी, म.प्र. सर्व शिक्षा अभियान	**आमंत्रित सदस्य**

पुस्तक के बारे में ....

भाषा अध्ययन - अध्यापन मात्र एक विषय के रूप में सीमित न रहते हुए सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास की महत्वपूर्ण धुरी है। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल का यह प्रयास रहा है कि पुस्तक सर्व शिक्षा अभियान का अभिन्न अंग बन सके। इस दृष्टि से प्रयास है कि पुस्तक बस्ते से बाहर निकलकर दैनिक जीवन में अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके। नवीन पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है कि शिक्षा मात्र विषयवस्तु याद कराने तक सीमित न रहकर भाषा शिक्षण की अपेक्षित दक्षताओं को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करें।

छात्रों, पालकों, शिक्षकों और भाषा विशेषज्ञों द्वारा मिले सुझावों को आधार मानकर पुस्तक को नए स्वरूप में रचा गया है। पुस्तकें सीखने में प्रमुख सहयोगी होती हैं। यदि पुस्तक से बच्चों की मित्रता हो जाए तो वो बोलने लगती हैं। प्रत्येक अभ्यास के साथ बच्चे खेलने लगते हैं। आकर्षक आवरण, चित्रात्मक प्रस्तुति, बोधगम्य भाषा, विषयवस्तु की क्रमबद्धता, अभिव्यक्ति की रोचकता के माध्यम से प्रस्तुत पुस्तक को आकर्षक और सार्थक बनाने का प्रयास किया है।

मानवीय प्रेम, साम्प्रदायिक सद्भाव, प्रकृति तथा पर्यावरण संवेदना और राष्ट्रप्रेम आदि मूल्यपरक विषयवस्तु को बालमन के लिए आकर्षक बनाते हुए विभिन्न भाषागत विधाओं यथा-कविता, कहानी, संस्मरण, एकांकी, जीवनी, संवाद, वार्तालाप, लेख, निबन्ध, पत्र, व्यंग्य, डायरी आदि में सँजोने का प्रयास किया गया है। भारतीय संस्कृति और गौरव के साथ-साथ मध्यप्रदेश के सन्दर्भ व साहित्यकारों की कृतियों को समावेशित किया गया है।

अधिगम को सुगम एवं उद्देश्यनिष्ठ बनाने के लिए अभ्यास में उच्चारण शुद्धता, वर्तनी, शब्द निर्माण, कल्पनाशक्ति, मौलिक चिन्तन, व्यावहारिक व्याकरण, भावों एवं विचारों की पकड़, सृजनात्मकता, तर्कशक्ति तथा स्वतन्त्र अभिव्यक्ति आदि दक्षताओं के विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान करने का प्रयास किया है। प्रत्येक पाठ के आरम्भ में '**आइए सीखें**' दिया गया है। इसमें पाठ के उद्देश्य तथा उसमें समाहित दक्षताएँ दी गई हैं। पृष्ठ के नीचे '**शिक्षण संकेत**' दिए हैं। ये पाठ पढ़ाने के सम्भावित तरीकों पर सुझाव मात्र है। अभ्यास को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा है - **1. बोध प्रश्न 2. भाषा अध्ययन 3. योग्यता विस्तार।**

बोध प्रश्न के अन्तर्गत पाठ को पढ़कर अर्थ ग्रहण या भाव ग्रहण से सम्बन्धित प्रश्न हैं। भाषा अध्ययन के अन्तर्गत व्यावहारिक व्याकरण, शब्द सामर्थ्य आदि से सम्बन्धित अभ्यास हैं, योग्यता विस्तार के अन्तर्गत पठित वस्तु को समझने, उस पर विचार करने तथा भाषा का प्रभावी प्रयोग करने के अवसर दिए गए हैं। पाठ में आए कठिन शब्द पाठ के अन्त में दिए गए हैं।

सम्पूर्ण सत्र की शिक्षण प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए पुस्तक मुख्यत: तीन भागों में विभक्त है पहला भाग अगस्त अन्त तक दूसरा भाग नवम्बर अन्त तक तथा तीसरा भाग फरवरी अन्त तक पूरा होना अपेक्षित है। प्रत्येक भाग के बाद विविध प्रश्नावली दी गई है। जिसमें विभिन्न तरीकों के प्रश्न दिए गए हैं। ये सुझावात्मक हैं। इस प्रकार के अन्य प्रश्न बनाए जा सकते हैं ताकि बच्चे किसी भी तरीके से पूछने पर प्रश्नों के उत्तर दे सकें। तभी रटकर उत्तर याद करने के स्थान पर समझकर दक्षता विकास सम्भव हो सकता है। पुस्तक के अन्त में अभ्यास प्रश्न-पत्र दिया गया है। यह भी सुझावात्मक है कि इससे शिक्षकों को प्रश्न-पत्र बनाने में सुविधा होगी।

आशा है कि पुस्तक आपकी कसौटी पर खरी उतरेगी। भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने की दृष्टि से पुस्तक के सम्बन्ध में आपके बहुमूल्य सुझाव सदैव आमन्त्रित हैं।

आयुक्त
मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र,
भोपाल

कक्षा-8 भाषा

क्र.	अधिगम क्षेत्र	अधिगम प्रतिफल	कालखंड
1.	सुनना	1.8.1 स्थानीय बोली के प्रभाव से मुक्त होकर मानक भाषा को सुनकर समझ सकेंगे। 1.8.2 पाठ, संवाद, समाचार, वार्ताएँ, नाटक, पत्र, कविता को रेडियो, टी.वी. या अन्य माध्यमों से सुनकर अर्थग्रहण कर सकेंगे। 1.8.3 वक्ता के कथन का प्रारंभ से अन्त तक क्रमानुसार अर्थबोध के साथ अनुसरण कर सकेंगे। 1.8.4 वक्ता के कथन में महत्वपूर्ण तथ्यों, विचारों ,निहित व्यंग्य/विनोद और भावनाओं को समझकर उनका मूल्यांकन कर सकेंगे।	1. पाठ्यपुस्तक-80 2. निबन्ध, पत्र-20 3. भाषा अध्ययन-40 4. कविता, कहानी सुनना, बोलना एवं अन्य पाठ्येत्तर गतिविधियाँ-40 **योग - 180**
2.	बोलना	2.8.1 शुद्ध उच्चारण, उचित गति, बलाघात अनुतान और प्रवाह के साथ विषय को ध्यान में रखकर हाव-भाव के साथ बोल सकेंगे। 2.8.2 अपने विचारों और भावों को शुद्ध स्पष्ट रोचक प्रवाहपूर्ण ढंग से व्यक्त कर सकेंगे। 2.8.3 वांछित सामग्री को व्यवस्थित रूप में बोल कर प्रस्तुत कर सकेंगे। 2.8.4 अपनी कही गई बात को स्पष्ट करने के लिए पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे। 2.8.5 मानक भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी बात कह सकेंगे एवं शब्द भण्डार में वदिध कर सकेंगे।	
3.	पढ़ना	3.8.1 भाव के अनुरूप उचित आरोह-अवरोह के साथ पढ़ सकेंगे। 3.8.2 पढ़ते समय श्रोता की स्थिति एवं विषय के अनुसार गति और स्वर को नियंत्रित कर सकेंगे। 3.8.3 विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए पढ़ सकेंगे तथा शुद्ध एवं अशुद्ध वर्तनी, विरामचिह्नों में भेद कर सकेंगे।	

शेष कालखंडों में उपचारात्मक शिक्षण, विषय वस्तु की पुनरावृत्ति एवं मूल्यांकन कराया जाए।

क्र.	अधिगम क्षेत्र	अधिगम प्रतिफल	कालखंड
		3.8.4 एकांकी, कविता, कहानी, निबन्ध आदि का शुद्ध उच्चारण करते हुए गति के साथ पठन कर सकेंगे। 3.8.5 वाक्यों को सही अर्थ अन्वितियों एवं पद बंधों के अनुसार पढ़ सकेंगे। 3.8.6 समुचित गति और बोध के साथ मौन पठन की आदत विकसित कर सकेंगे। 3.8.7 सन्दर्भ के अनुसार शब्दों के (कठिन शब्दों के) अर्थ समझ सकेंगे तथा शब्दों के अर्थ भेदों को जान सकेंगे।	
4.	लिखना	4.8.1 विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए सुन्दर और सुवाच्य अक्षरों में गतिपूर्वक लिख सकेंगे। 4.8.2 गद्य रचना को अनुच्छेदों में बाँटकर लिखने की आदत विकसित कर सकेंगे। 4.8.3 पठित पाठों का सारांश एवं पठित सामग्री पर संक्षिप्त टिप्पणी लिख सकेंगे। 4.8.4 भावपूर्ण एवं विचारपूर्ण पद्यांशों, गद्यांशों का सरल अर्थ लिख सकेंगे। 4.8.5 अपठित गद्यांश में आवश्यकतानुसार शीर्षक, उपशीर्षक देकर एक मुख्य विचार व्यक्त कर सकेंगे।	
		4.8.6 विभिन्न प्रकार के आवेदन पत्र लिख सकेंगे एवं प्रपत्रों को भर सकेंगे। 4.8.7 विभिन्न अधिकारियों एवं सम्पादकों के नाम पत्र लिख सकेंगे। 4.8.8 विभिन्न क्षेत्रों से आवश्यक सूचना प्राप्त करके निबन्ध लिख सकेंगे। 4.8.9 दी गई कहानी की रूपरेखा के आधार पर कहानी का सारांश लिख सकेंगे।	
5.	व्यावहारिक व्याकरण	5.8.1 व्याकरण सम्मत प्रभावशाली भाषा का प्रयोग कर सकेंगे। 5.8.2 अर्थ के आधार पर विधि सूचक, निषेध सूचक, आज्ञा सूचक, प्रश्न सूचक, विस्मय सूचक, इच्छा सूचक, संदेह सूचक, संदेश सूचक वाक्य का प्रयोग कर सकेंगे। 5.8.3 मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग एवं अन्तर जान सकेंगे। 5.8.4 सन्धियों की जानकारी, समास की जानकारी भेद सहित प्राप्त कर सकेंगे। 5.8.5 शब्दालंकार एवं अर्थालंकार में अन्तर तथा यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षालंकार का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे। 5.8.6 छन्दों का सामान्य परिचय, दोहा, चौपाई, सोरठा, रोला, कुण्डलियों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।	

पाठ्यवस्तु का मासिक विभाजन

क्र.	माह	पाठ्यवस्तु
1.	पहला	कक्षा 7 की दक्षताओं पर आधारित पुनरावृत्ति। **पाठ 1 वर दे!** राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करना। उपमा अलंकार, 'र के विभिन्न रूपों की पहचान, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द। **पाठ 2. आत्मविश्वास** आत्मविश्वास का विकास। उच्चारण में स, श, च्छ, क्ष, श्र पर विशेष ध्यान। प्रत्यय, उपसर्ग, विलोम शब्द, हिन्दी मानक शब्द, समास व समास विग्रह, अपठित गद्यांश। **सहायक वाचन, मासिक मूल्यांकन।**
2.	दूसरा	**पाठ 3 मध्यप्रदेश की संगीत विरासत** संगीत और संगीतकारों पर चर्चा। सामासिक शब्दों का अभ्यास, संधि। **पाठ 4. अपराजिता** विकलांग व्यक्तियों के प्रति सहायता का भाव जाग्रत करना। ऑ की ध्वनि का ज्ञान, मुहावरे, रचना के आधार पर वाक्य भेद, विराम चिह्न, अपठित गद्यांश। **पाठ 5. श्री मुफ्तानंद जी से मिलिए** शब्द युग्म, सूक्ष्म अंतर वाले शब्द, मुहावरे, कहावतें, विराम-चिह्न, हिन्दी मानक शब्द, सर्वनाम, विशेषण। **सहायक वाचन, मासिक मूल्यांकन।**
3.	तीसरा	**पाठ 6. भक्ति के पद** ईश्वर के प्रति आस्था का भाव जाग्रत करना। तत्सम्, पर्यायवाची शब्द, दोहा व सोरठा का ज्ञान। **पाठ 7. भेड़ाघाट** दर्शनीय स्थलों पर चर्चा। पुनरुक्ति शब्द, वाक्य निर्माण, शुद्ध वर्तनी। **पाठ 8. गणितज्ञ ज्योतिषी आर्यभट** भारतीय वैज्ञानिकों की जानकारी। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास। शैक्षणिक तकनीकी शब्दों का ज्ञान। आगत शब्द, विलोम शब्द, वाक्य रचना, उपसर्ग, भिन्नार्थक शब्द। **सहायक वाचन, मासिक मूल्यांकन।**
4.	चौथा	**पाठ 9. बिरसा मुण्डा** भारत व मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों पर चर्चा। देश-प्रेम व नेतृत्व क्षमता का विकास करना। 1857 की क्रांति पर चर्चा। संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, शुद्ध शब्द/शब्दों का प्रयोग। **पाठ 10. प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए** पर्यावरण के विषय पर चर्चा । संधि, समास, विलोम शब्द, मुहावरे, शुद्ध उच्चारण। **सहायक वाचन, मासिक मूल्यांकन।**
5.	पाँचवाँ	**पाठ 11. गिरधर की कुण्डलियाँ** अलंकार, रोला, चौपाई, अनुस्वार, अनुनासिक, पर्यायवाची, वाक्य प्रयोग। **पाठ 12. याचक और दाता** ईमानदारी, सेवाभाव का विकास। उपसर्ग, प्रत्यय, मुहावरे, अवतरण चिह्न। **सहायक वाचन, मासिक मूल्यांकन।**
6.	छठवाँ	**पाठ 13. न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है** इतिहास से प्रेरणा। रस परिचय, छंद, तुकान्त, अतुकांत, वाक्य प्रयोग, विलोम, पर्यायवाची शब्द। **पाठ 14. नव संवत्सर :** विभिन्न भारतीय नववर्षों पर चर्चा। पौराणिक कथाओं पर चर्चा। प्रत्यय, संधि, समास, विशेषण । **सहायक वाचन, अर्द्धवार्षिक मूल्यांकन।**
7.	सातवाँ	**पाठ 15.महेश्वर** प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की जानकारी। समास, संधि, वाक्यांश के लिए एक शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, पत्र लेखन, यात्रा वर्णन। **पाठ 16. पथिक से** सांसारिक समस्याओं का साहस और विवेक पूर्वक सामना करना। पर्यायवाची, समानोच्चारित शब्द, अलंकार - रूपक और उत्प्रेक्षा। **पाठ 17. वसीयतनामे का रहस्य** विभिन्न नैतिक मूल्यों का विकास। कारकों की विभक्ति का ज्ञान, संयुक्त व मिश्र वाक्य। **सहायक वाचन, मासिक मूल्यांकन ।**
8.	आठवाँ	**पाठ 18. युद्ध गीता** राम-रावण युद्ध और काव्य में आए प्रतीकों को स्पष्ट करना। उपसर्ग प्रत्यय, विलोम, विराम चिह्न, समास-विग्रह, दोहा, चौपाई अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक अलंकार का ज्ञान। **पाठ 19. बहादुर बेटा :** सेवा, भाव, त्याग, समर्पण, देश और समाज के प्रति प्रतिबद्धता। योजक चिह्न, पर्यायवाची, उपसर्ग, प्रत्यय, मुहावरे। **सहायक वाचन, मासिक मूल्यांकन।**
9.	नौवाँ	**पाठ 20. नन्हा सत्याग्रही** स्वाभिमानी बनने की प्रेरणा। प्रत्यय, क्रिया के रूपों की पहचान। **पाठ 21. सालिम अली** जिज्ञासा और संकल्प की प्रेरणा। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द। अपठित गद्यांश। **पाठ 22. गीता का मर्म।** पुनरावृत्ति - अभ्यास - विशेष जाँच एवं उपचारात्मक शिक्षण, वाचन, चर्चा, अभ्यास कार्य। **मासिक मूल्यांकन। पाठ 23.** महान विभूति: दानवीर डॉ. सर हरिसिंह गौर
10	दसवाँ	पुनरावृत्ति। **वार्षिक मूल्यांकन।**

सीखने के प्रतिफल

H-801. विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे- पाठ्यपुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई सालिम अली की किताब पढ़कर चर्चा करते हैं।

H-802. हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।

H-803. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

H-804. अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनाते हैं।

H-805. पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक /सांकेतिक भाषा में बताते हैं।

H-806. विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों, जैसे- जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाज़ों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं, जैसे- अपने मोहल्ले के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना।

H-807. किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे- अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं- रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती?

H-808. विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं।

H-809. पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

H-810. विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।

H-811. कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।

H-812. विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं।

H-813. किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे- शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।

H-814. अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।

H-815. पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं।

H-816. भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे- कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना।

H-817. विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे- स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गाँव के मेले के दुकानदारों से बातचीत।

H-818. अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे- विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) कोई अनुभव लिखना।

H-819. दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे- सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि।

H-820. विविध कलाओं, जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे- कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति।

H-821. अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।

H-822. अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं, जैसे- कविता, कहानी, निबंध आदि।

H-823. पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित/ब्रेल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।

कक्षा - 8

हिन्दी विशिष्ट

अनुक्रमणिका

क्रम	पाठ	विधा	रचनाकार	पृष्ठ क्रमांक
1.	वर दे	कविता	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	1
2.	आत्मविश्वास	निबन्ध	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	7
3.	मध्यप्रदेश की संगीत विरासत	निबन्ध	लेखकगण	14
4.	अपराजिता	संस्मरण	शिवानी	20
5.	श्री मुफ्तानन्दजी से मिलिए	व्यंग्य	बरसाने लाल चतुर्वेदी	30
6.	भक्ति के पद	कविता	सूर, तुलसी, रैदास, मीरा	37
7.	भेड़ाघाट	यात्रा वृत्तान्त	माखनलाल चतुर्वेदी	46
8.	गणितज्ञ, ज्योतिषी आर्यभट	निबन्ध	गुणाकर मुले	55
●	**विविध प्रश्नावली-1**			65
9.	बिरसा मुण्डा	जीवनी	लेखकगण	68
10.	प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए	निबन्ध	लेखकगण	75
11.	गिरधर की कुण्डलियाँ	कविता	गिरधर	81
12.	याचक और दाता	कहानी	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	87
13.	न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है	कविता	रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'	96
14.	नवसंवत्सर	वार्तालाप	लेखकगण	103
●	**विविध प्रश्नावली-2**			112
15.	महेश्वर	पत्र	लेखकगण	115
16.	पथिक से	कविता	शिवमंगल सिंह सुमन	120
17.	वसीयतनामे का रहस्य	कहानी	डॉ. परशुराम शुक्ल	126
18.	युद्ध-गीता	कविता	तुलसीदास	137
19.	बहादुर बेटा	एकांकी	विष्णु प्रभाकर	146
20.	नन्हा सत्याग्रही	कहानी	आलम शाह खान	155
21.	सालिम अली	निबंध	दिलीप मधुकर साल्वी	
22.	गीता का मर्म	कहानी	संकलित	170
23.	महान विभूति: दानवीर डॉ. सर हरिसिंह गौर	जीवनी	लेखकगण	178
24.	egf"k ij'kjke	जीवनी	संकलित	183
●	**विविध प्रश्नावली-3**			187
●	शब्दकोश			190
●	**अभ्यास प्रश्न पत्र**			198

पाठ–1

वर दे!

आइए, सीखें : ● राष्ट्र-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना ● उपमा अलंकार का परिचय ● 'र' के विभिन्न रूपों की पहचान ● पर्यायवाची शब्द एवं विलोम शब्द

*(**पाठ-परिचय :** इस कविता में कवि ने देवी सरस्वती की वन्दना की है। कवि माँ सरस्वती से नव-निर्माण हेतु वर माँगते हुए समूचे संसार को आलोकित करने की प्रार्थना कर रहा है।)*

वर दे, वीणावादिनि, वर दे ।
प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नव
भारत में भर दे !

काट अन्ध उर के बन्धन स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष भेद, तम हर, प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे !

नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे !

– **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'**

शिक्षण-संकेत : ■ कविता को हाव-भाव और लय के साथ बच्चों को सुनाएँ और उनसे भी सुनें। ■ कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों की सहभागिता से स्पष्ट करें। ■ कविता के भाव बच्चों की सहभागिता से स्पष्ट करें।

कवि परिचय – निराला जी का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर में सन् 1897 में हुआ था। आपके पिता उन्नाव जिले में गढ़ाकोला गाँव के रहने वाले थे। आपका कार्य क्षेत्र प्रमुख रूप से उत्तरप्रदेश ही रहा है। आपकी रचनाओं में प्रेम, सौन्दर्य, उल्लास, ओज और भक्ति के स्वर हैं। हिन्दी के छायावादी कवियों की त्रिमूर्ति- निराला, प्रसाद और पंत में से निराला जी एक हैं। हिन्दी कविता को मुक्त छंद आपकी ही देन है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए –

वीणावादिनि	-------------	मन्द्र रव	-------------
नव	-------------	उर	-------------
अंध-उर	-------------	जननि	-------------
बंधन-स्तर	-------------	तम	-------------
विहगवृन्द	-------------	पर	-------------
कलुष	-------------	कलुष भेद	-------------
तम हर	-------------	जगमग जग कर दे	-------------
प्रकाश	-------------	ज्योतिर्मय निर्झर	-------------
नवल	-------------		

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए –

क. 'नव नभ' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

ख. इस कविता में कवि किससे वरदान माँग रहा है?

ग. कवि भारत में कौन-सा मंत्र भरने की बात कह रहा है?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए –

क. कवि माँ सरस्वती से क्या वरदान चाह रहा है?

ख. कवि प्रकृति की हर वस्तु में नया रूप क्यों देखना चाह रहा है?

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों की उचित शब्दों से पूर्ति कीजिए -

क कलुष भेद, तम हर .... भर।

ख काट अन्ध उर .... स्तर।

ग बहा .... ज्योतिर्मय निर्झर ।

घ नव .... स्वर दे।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

क. काट अन्ध उर के बन्धन स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर।

ख. नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे।

प्रश्न 6. सही विकल्प चुनकर लिखिए -

क. 'नव नभ के नव विहग वृन्द को' पंक्ति में अलंकार है -

(अ) यमक (आ) अनुप्रास (इ) श्लेष

ख. 'वर दे' कविता के रचयिता हैं -

(अ) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (आ) जयशंकर प्रसाद (इ) गिरधर

ग. विहग वृन्द का आशय है -

(अ) पशुओं का समूह (आ) मनुष्यों का समूह (इ) पक्षियों का समूह

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए -

वीणावादिनि, स्वतंत्र, अमृत, ज्योतिर्मय, विहग वृन्द, बन्धन, निर्झर, जननि।

> वर दे! कविता में 'वीणावादिनि' और 'जननि' शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जब कि हिन्दी में इनके मानक स्वरूप 'वीणावादिनी' और 'जननी' हैं। सम्बोधन में अंतिम ईकारान्त शब्द इकारान्त हो जाता है। कविता में छन्द की लय के अनुरोध से भी ऐसा किया जाता है।

प्रश्न 2. **वर दे! पाठ में आए 'र' के विभिन्न रूप (ॅ, ् और र) वाले शब्द छाँटकर लिखिए।**

प्रश्न 3. **निम्नलिखित शब्दों के नीचे बनी पहेली से दो-दो पर्यायवाची शब्द खोजकर लिखिए-**

अमृत, जननि, रात, जग, आकाश, विहग,

सु	अ	मि	य	रा	मा	ता
धा	ख	ग	न	त्रि	सं	ज
प	क्षी	म	भ	नि	सा	ग
ग	ग	न	माँ	शा	र	त

अमृत - सुधा , अमिय

जननि - .... , ...

रात - .... , ...

जग - .... , ...

आकाश - .... , ...

विहग - .... , ...

प्रश्न 4. 'तम हर' 'प्रकाश भर' में एक दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इस प्रकार के पाँच शब्द लिखिए, जिनसे विपरीत अर्थ (विलोम) प्रगट होता है।

	शब्द	**विलोम शब्द**
1.	तम	प्रकाश
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....

यह भी जानिए -

''नन्दन वन-सी फूल उठी वह छोटी-सी कुटिया मेरी'' इस पंक्ति में 'कुटिया' **उपमेय,** 'नन्दन वन' **उपमान** 'फूल उठी' **साधारण धर्म** तथा 'सी' **वाचक शब्द** हैं।

इस प्रकार उपमा के चार अंग होते हैं-उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द।

उपमेय - जिस व्यक्ति या वस्तु की किसी अन्य से तुलना की जाती है उसे उपमेय कहा जाता है। यथा- कुटिया शब्द उपमेय है क्योंकि कुटिया की तुलना नन्दनवन से की गई है।

उपमान- जिस प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु से उपमेय की समानता (तुलना) की जाए उसे उपमान कहा जाता है। यथा- नन्दन वन की समानता कुटिया से की गई है। अत: वह उपमान है।

साधारण धर्म- उपमेय और उपमान में पाया जाने वाला समान गुण साधारण धर्म है। जैसे- फूल उठी

वाचक शब्द - वाचक वे शब्द हैं जो उपमेय और उपमान में पाए जाने वाले गुण की समानता प्रकट करते हैं, यथा 'सी' इसके अतिरिक्त 'जैसा' 'सम', 'सरिस' 'तुल्य' आदि शब्द समानता बताने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

परिभाषा

जहाँ एक वस्तु की दूसरी वस्तु से समानता या तुलना की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। दो वस्तुओं में रूप, गुण आदि के आधार पर समता या तुलना की जाती है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित उदाहरणों में से उपमेय, उपमान, साधारण धर्म, वाचक शब्द छाँटकर तालिका में लिखिए।

1. सीता का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।
2. पीपर पात सरिस मन डोला।
3. हरिपद कोमल कमल से।
4. नन्दन वन-सी फूल उठी वह छोटी-सी कुटिया मेरी।''

क्र.	उपमेय	उपमान	साधारण धर्म	वाचक शब्द
1.				
2.				
3.				
4.				

योग्यता विस्तार

1. ‘वर दे’ कविता को कण्ठस्थ कीजिए और विद्यालय में प्रार्थना के समय इसका गायन सामूहिक रूप से कीजिए।
2. इस कविता को पढ़कर आपके मन में जो विचार उत्पन्न हुए हैं, उन्हें अपने साथियों को सुनाइए।
3. इसी प्रकार की अन्य कविताएँ अपने शिक्षक की सहायता से संग्रहीत कीजिए।

प्रार्थना से मन को शांति मिलती है।

पाठ-2

आत्मविश्वास

आइए सीखें : ● आत्मविश्वास की भावना का विकास ● प्रत्यय और उपसर्ग ● विलोम शब्द, हिन्दी के मानक शब्द ● समास विग्रह ● अपठित गद्यांश पढ़कर समझना।

*(**पाठ परिचय :** जीवन में सफलता प्राप्त करने का एक शक्तिशाली मंत्र है - आत्मविश्वास। हमें अपने जीवन में पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस जीवन-संग्राम में वही सफल होता है, जिसे अपनी शक्ति और अपने प्रयासों पर विश्वास होता है। प्रस्तुत निबंध में निबंधकार ने इतिहास से अनेक उदाहरण देते हुए इसी सत्य को सिद्ध किया है।)*

''बाली से कौन लड़ सकता है? महाराज!'' - ''क्यों, ऐसी उसमें क्या बात है?''

''महाराज ! उसे ऐसा वरदान प्राप्त है कि जो उसके सामने आता है, उसकी आधी ताकत उसमें आ जाती है और वह उसे आसानी से पछाड़ देता है।''

सुग्रीव ने राम से अपने भाई बाली के संबंध में यह बात कही थी। दूसरे की, सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींचने की शक्ति का जो वरदान बाली को प्राप्त था, वह हम सबको भी प्राप्त है। विडम्बना यह है कि हमने कभी उसका उपयोग नहीं किया। इसलिए विरोधी हमें पीटते रहे हैं और हम उस पीटने को अनिवार्य समझकर पिटते रहे हैं।

सच बात यह है कि जब कोई विरोधी हमारे सामने आता है, तो हम अपनी आत्महीनता से, कायरता से, कुसंस्कार से, आत्मविश्वास की कमी से, विरोधी का और अपना बल तौले बिना ही उसे अपने से

शिक्षण-संकेत - ■ शुद्ध उच्चारण का ध्यान रखते हुए पाठ का पठन-पाठन करें-कराएँ। ■ विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। 'स', श, च्छ, क्ष; 'श्र' आदि वर्णों के उच्चारण के लिए पर्याप्त अवसर प्रत्येक विद्यार्थी को दें।

शक्तिशाली मान लेते हैं। बस, यही मानना हमारी शक्ति को आधी कर देता है और हम से ही वह आधी शक्ति हमारे विरोधी को प्राप्त हो जाती है और इस अर्थ में हम उससे आधे रह जाते हैं। हममें आत्मविश्वास हो तो उससे हम विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं, उसकी आधी शक्ति अपने में ले सकते हैं।

आत्मविश्वास की सबसे बड़ी दुश्मन है दुविधा। दुविधा एकाग्रता को नष्ट कर देती है। आदमी की शक्ति को बाँट देती है। आधा इधर और आधा उधर। बस इस तरह आदमी खंडित हो जाता है।

मेरे एक मित्र अपनी पत्नी के साथ जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठे बातें कर रहे थे। बात करते-करते पत्नी सो गई। वे उपन्यास पढ़ने लगे। अचानक उन्हें लगा कि सामने से भेड़िया चला आ रहा है- उन्हीं की तरफ़। भेड़िया- एक खूँखार जानवर। ये सोचकर वे इतने घबरा गए कि पत्नी को सोता छोड़कर ही भाग खड़े हुए। भाग्य से कुछ दूर ही उन्हें एक बंदूकधारी सज्जन मिल गए। वे उनके पैरों पर गिर पड़े। 'मेरी पत्नी को बचाइए, भेड़िया उसे खा जाएगा। वे गिड़गिड़ाए।

शिकारी दौड़ा-दौड़ा उनके साथ पेड़ के पास आया, तो उनकी पत्नी यथापूर्व सो रही थी और भेड़िया उसके पास रखी टोकरी में मुँह डाले पूरियाँ खा रहा था।

‘‘कहाँ है भेड़िया?’’ शिकारी ने बंदूक साधते हुए पूछा। वे काँपते हुए बोले, ‘‘वह है तो सामने।’’

शिकारी बहुत जोर-से हँस पड़ा, ‘‘भले मानस! वह तो बेचारा कुत्ता है।’’ क्या बात हुई यह कि भय ने उन्हें आत्मविश्वासहीन कर दिया।

कृष्ण ने महाभारत में सर्वोत्तम काम यही तो किया कि पाण्डवों को उन्होंने आत्मविश्वास से भर दिया। वे अपने कार्य के महत्व को समझते थे। तभी तो पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने अर्जुन को कहा था, ‘‘संशय मत कर। परेशान मत हो, युद्ध कर। तू निश्चित रूप से युद्ध में अपने शत्रुओं पर विजय पाएगा।’’

नेता जी सुभाषचंद्र बोस जब आई.सी.एस. की प्रतियोगिता में बैठे तो अंग्रेज परीक्षक ने पूरी तेज़ी से घूमते हुए बिजली के पंखे की ओर इशारा कर उनसे पूछा, ‘‘क्या इसकी पंखुड़ियाँ गिनी जा सकती हैं?’’ सुभाष बाबू ने झट से पंखा बंद कर दिया और बोले, ‘‘जी हाँ, सुगमता के साथ।’’

परीक्षक प्रसन्न हो गया, परन्तु उसने उन्हें एक बार और कसौटी पर कसा। उसने अपनी अँगूठी उनके पास रखकर पूछा, ‘‘क्या इसमें से सुभाषचंद्र बोस पास हो सकता है?’’ सुभाष बाबू ने अपने नाम का विज़िटिंग कार्ड मोड़कर उसमें से पास करते हुए कहा, ‘‘जी, इस तरह!’’ यह है अटूट आत्मविश्वास। इसके अभाव में यदि वे घबरा जाते और ऊटपटाँग जवाब देते तो फ़ेल हो जाते।

दूसरे हमारी क्षमता पर विश्वास करें और हमारी सफलता को निश्चित मानें, इसके लिए आवश्यक शर्त यही है कि हमारा अपनी क्षमता और सफलता में अखण्ड विश्वास हो। हमारे भीतर उगा भय, शंका और अधैर्य ऐसे डायनामाइट हैं, जो हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खण्डित कर देते हैं।

हमारे विद्यालय में, जो नगर से दूर जंगल में था, चौदह वर्ष का एक बालक अपने घर से अकेला पढ़ने आया करता था। कुछ महीने बाद दूसरा बालक भी उसके साथ आने लगा। वह दूसरा बालक डरपोक था। वह भूतों और चोरों की कहानियाँ उसे सुनाया करता। इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि पहला बालक भी डरपोक हो गया और वे दोनों प्रतीक्षा करते रहते कि मैं चलूँ तो वे भी मेरे साथ चलें।

सूत्र यह बताता है-‘‘हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों और सदा असफलता का ही मर्सिया पढ़ने वालों के सम्पर्क से दूर रहो।’’ नीति का वचन है कि जहाँ अपनी, अपने कुल की और अपने देश की निंदा हो और उसका मुँह तोड़ उत्तर देना सम्भव न हो, तो वहाँ से

उठ जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि इसमें आत्मगौरव और आत्मविश्वास की भावना खण्डित होने का भय रहता है।

अनुभव वाणी है, ''मनुष्य के जीवन के लिए इससे अच्छी और कोई बात नहीं है कि वह सदा महानता अनुभव करता रहे कि मेरे लिए सब कुछ अच्छा ही होगा। जो भी कार्य मैं हाथ में लूँगा, उसमें मुझे सफलता अवश्य मिलेगी।''

बहुत से मनुष्य यह सोच-सोचकर कि हमें कभी सफलता नहीं मिलेगी, देव हमारे विपरीत है, अपनी सफलता को अपने ही हाथों पीछे धकेल देते हैं। उनका मानसिक भाव सफलता और विजय के अनुकूल बनता ही नहीं, तो सफलता और विजय कहाँ? यदि हमारा मन शंका और निराशा से भरा है तो हमारे कामों का परिचय भी निराशाजनक ही होगा, क्योंकि सफलता की, विजय की, उन्नति की कुंजी तो अविचल श्रद्‌धा ही है।

क्या मैं अभागा हूँ ? क्या मैं भाग्यवान हूँ ?

इन प्रश्नों का सही उत्तर जानने के लिए किसी ज्योतिषी से पूछने की आवश्यकता नहीं। इसके लिए तो आप अपने से ही पूछिए कि आप अपने को अभागा अनुभव करते हैं या भाग्यवान? अभागा अनुभव करते हैं तो कोई आपको भाग्यवान नहीं बना सकता और भाग्यवान अनुभव करते हैं, तो कोई अभागा नहीं बना सकता।

अपने मन को सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता के विचारों और भावनाओं से सदा भरपूर रखिए और सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता की ओर आगे बढ़ते रहिए।

जीवन में उतार भी हैं और चढ़ाव भी। जो लोग हमेशा उतार की ही बात सोचते हैं, वे उन लोगों की तरह हैं जो कूड़ाघरों के पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं।

जन्म से ही अंधी-बहरी, पर विचारक और लेखिका के रूप में विश्वविख्यात 'हेलेन केलर' की यह सूक्ति सदा याद रखिए, **''सुख का एक द्‌वार बंद होने पर तुरंत दूसरा द्‌वार खुल जाता है, लेकिन कई बार हम उस बंद द्‌वार की ओर इतनी तल्लीनता से ताकते रहते हैं कि हमारे लिए जो द्‌वार खोल दिया गया है, हम उसे देख नहीं पाते।''**

युद्‌ध में वे विजयी नहीं होते, जो खंदक-खाइयों को ताकते-झाँकते हैं। विजयमाला पड़ती है उनके गले, जो अपनी संपूर्ण शक्ति को तौलकर छलाँग लगाते हैं, खतरों से खेलते हैं। जीवन के इस अनुभव को कभी मत भूलिए -

जो हड़बड़ा के रह गया वो रह गया इधर।

जिसने लगाई एड़ वो खंदक के पार था।

- कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

लेखक-परिचय : कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबंद नगर में सन् 1906 में हुआ था। स्वतंत्रता-आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें अनेक बार कारावास का दण्ड भोगना पड़ा। प्रभाकर जी एक ख्याति प्राप्त पत्रकार थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने सराहनीय कार्य किया। 'ज्ञानोदय', 'नया जीवन', 'विकास' जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन करके आपने पत्रकारिता को काफी ऊँचाई प्रदान की। साहित्य के क्षेत्र में आपने रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और रिपोर्ताज आदि विधाओं पर अपनी कलम का प्रभाव दिखाया। 'जिंदगी मुस्कराई' 'माटी हो गई फूल', 'आकाश के तारे', 'धरती के फूल', 'दीप जले, शंख बजे', आदि आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

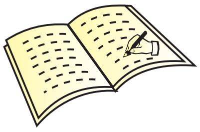

अभ्यास

बोध प्रश्न :

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

दुर्भाग्य	----------------	सुगमता	----------------
आत्महीनता	----------------	दुविधा	----------------
एकाग्रता	----------------	यथापूर्व	----------------
क्षमता	----------------	अविचल	----------------
विश्वविख्यात	----------------	सूक्ति	----------------
तल्लीनता	----------------	अखण्ड	----------------
अभंग	----------------	मर्सिया	----------------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क. बाली को क्या वरदान प्राप्त था ?

ख. राम बाली के सामने आकर क्यों नहीं लड़े ?

ग. कृष्ण ने महाभारत में सर्वोत्तम काम क्या किया ?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

क. सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींच लेने की शक्ति हम सबमें है। कैसे?

ख. लेखक ने **हेलन केलर** का उदाहरण देकर हमें क्या समझाना चाहा है ?

ग. "आत्मविश्वास के बूते पर जीवन में सब कुछ करना संभव है।" किसी एक महापुरुष का उदाहरण देते हुए उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4. नीचे लिखे गद्यांशों की प्रसंग देते हुए व्याख्या कीजिए-

क. जो लोग हमेशा उतार की ही बात सोचते हैं, वे उन लोगों की तरह हैं जो कूड़ाघरों के पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं।

ख. जब कोई विरोधी हमारे सामने आता है तो हम अपनी आत्महीनता से, कायरता से, कुसंस्कार से, आत्मविश्वास की कमी से विरोधी का और अपना बल तौले बिना ही उसे अपने से शक्तिशाली मान लेते हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों का भाव स्पष्ट कीजिए -

क. सफलता की, विजय की, उन्नति की कुंजी अविचल श्रद्धा ही है।

ख. हम अपनी सोच के कारण ही सफल, असफल होते हैं।

ग. हममें आत्मविश्वास हो तो इससे हम विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए -

दुर्भाग्य, शक्तिशाली, आत्महीन, सर्वोत्तम, निश्चित, हतोत्साहियों

प्रश्न 2. 'जीवन में उतार भी हैं और चढ़ाव भी' - इस वाक्य में 'उतार' और 'चढ़ाव' परस्पर विलोम शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इसी प्रकार एक ही वाक्य में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग कीजिए -

भला-बुरा, दाता-याचक, सपूत-कपूत, निश्चित-अनिश्चित, भाग्यवान-भाग्यहीन, पाप-पुण्य, सुख-दुख।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के स्थान पर हिन्दी मानक शब्द लिखिए -

ताकत, विजिटिंग कार्ड, इशारा, मर्सिया।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय और उपसर्ग पहचान करके अलग-अलग कीजिए-

तल्लीन, दुर्भाग्य, शक्तिशाली, कायरता, एकाग्रता, खण्डित, अभागा।

प्रश्न 5. निम्नलिखित सामासिक पदों का समास विग्रह करते हुए उनमें निहित समास पहचानकर लिखिए-

आत्मविश्वास, कूड़ाघर, खन्दक-खाइयों, शक्तिहीन, यथापूर्व, विश्वविख्यात।

प्रश्न 6. नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

काँच के एक विशाल महल में एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। इस महल में वह जिधर भी देखता, उधर ही उसे कुत्ते दिखाई देते थे। उसने इन कुत्तों को देखकर सोचा कि ये सभी कुत्ते उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए जब उसने भौंकना शुरु किया तब उसे चारों ओर कुत्ते भौंकते सुनाई दिए। उसका दिल धड़कने लगा और वह बुरी तरह घबरा गया। वह उन कुत्तों पर झपटा। तब उसने देखा कि वे कुत्ते भी उस पर झपट रहे हैं। वह जोर-जोर, से भौंका, कूदा किन्तु शीघ्र ही बेहोश होकर गिर पड़ा।

क. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

ख. इस गद्यांश में प्रयुक्त मुहावरे को छाँटिए और अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।

ग. महल में कुत्ते को अपने चारों ओर कुत्ते क्यों दिखाई दे रहे थे ?

घ. कुत्ते ने भौंकना क्यों शुरू किया ?

ङ उपर्युक्त गद्यांश में से साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य छाँटकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. "सुख का एक द्वार बन्द होने पर तुरंत दूसरा द्वार खुल जाता है।" इस कथन के संबंध में कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. आपके जीवन में जो उतार-चढ़ाव आए हैं, उन्हें संक्षेप में लिखिए।
3. आत्मविश्वास से संबंधित कोई कहानी/घटना कक्षा में सुनाइए।
4. शिक्षक की सहायता से ऐसे महान व्यक्तियों की सूची तैयार कीजिए, जिन्होंने आत्मविश्वास के बल पर सफलता प्राप्त की हो।

आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है।

पाठ-3

मध्यप्रदेश की संगीत विरासत

आइए सीखें : ● संगीत के प्रति रुझान ● मध्यप्रदेश के संदर्भ में संगीत और संगीतज्ञों की जानकारी ● सामासिक शब्दों का अभ्यास ● संधि की पहचान ● संधि से संबंधित कुछ शब्द ।

(**पाठ परिचय**-*मध्यप्रदेश में भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने का भगीरथ प्रयास किया गया है। संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। प्रस्तुत पाठ, संगीत की साधना-स्थली मध्यप्रदेश के जीवन-राग का परिचय देता है और संगीत के क्षेत्र में विशेष योगदान को रेखांकित भी करता है।*)

स्वतंत्रता के लिए रणभेरी से लेकर विकास की मधुर तान तक की यात्रा, मध्यप्रदेश के गौरव और इतिहास की यात्रा है। यहाँ की मिट्टी, पत्थरों और हवाओं में वैभव की सुगन्ध विद्यमान है। प्रकृति की छटा देखकर जहाँ शब्द कविता बनकर बह निकले, उल्लास, उमंग ने भावनाओं को झंकृत कर नृत्य को रचा, वहीं स्वर- आलाप ने अपने जादू से हृदयों को मंत्र-मुग्ध कर संगीत का संसार बसाया।

आराधना, साधना और प्रार्थना ने संगीत को संजीवनी बनाया। अतीत से वर्तमान तक मध्यप्रदेश अपने इतिहास में संगीत के कीर्तिमान स्थापित करता चला आ रहा है। संगीत की शक्ति से दीप जलाना और वर्षा कराना संगीत की साधना की विजय है।

संगीत सम्राट तानसेन को कौन नहीं जानता? एक बार की बात है, बादशाह अकबर ने अपने दरबार में तानसेन से अपने संगीत का प्रभाव दिखाने का हठ किया। तानसेन ने तन्मय होकर दीपक राग की साधना की। धीरे-धीरे स्वर आलाप सिद्ध होते गए और देखते-ही-देखते दरबार में रखे दीप जल उठे।

सोलहवीं सदी के महान गायक तानसेन का जन्म ग्वालियर के पास स्थित बेहट ग्राम में हुआ था। स्वामी हरिदास उनके गुरु थे एवं बैजू बावरा उनके गुरु भाई थे। मध्यकालीन भारत में संगीत की अनूठी परम्परा रही है। यह परम्परा ग्वालियर घराने से प्रारंभ हुई। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ध्रुपद गायन के प्रणेता और संगीत प्रेमी थे। ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में अखिल भारतीय तानसेन समारोह का तीन दिवसीय आयोजन किया जाता है। यह आयोजन संयुक्त रूप से समाधिस्थल ग्वालियर और उनके जन्मस्थान बेहट में किया जाता है।

शिक्षण संकेत : ■ कोई सरल गीत गाकर उसकी मधुरता और उसके प्रभाव पर चर्चा करें ■ बच्चों से गीत सुनाने को कहें ■ संगीत के बारे में बच्चों से पूर्व से प्राप्त जानकारी के आधार पर आगे चर्चा करें।

स्वर सम्राट तानसेन

तानसेन संगीत की दुनिया के सम्राट कहे जाते हैं।

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में दरबारी, तोड़ी, मियाँ मल्हार और मियाँ की सारंग आदि अनेक राग-रागिनियों की रचना तानसेन ने ही की थी। तानसेन ने संगीत की जो तान छेड़ी, वह आज भी हमारी धड़कनों में बसी है। उनकी उपलब्धियाँ सृजन, यश के रूप में आज भी जीवंत हैं।

संगीत की महागंगा तानसेन के बेहट से ग्वालियर होती हुई मैहर को भी पावन करती है। मैहर की शारदा भवानी का पुण्य-तीर्थ प्रख्यात सरोद-वादक उस्ताद अलाउद्दीन खाँ को पाकर संगीत का तीर्थ हो गया। सरोद की खनक से उत्पन्न गीतों की सुरमय ध्वनियाँ आज भी उस्ताद की याद दिलाती हैं। विदेशों तक अपने संगीत की पताका मैहर बैण्ड के माध्यम से आज भी फहरा रही है। उनकी स्मृति में अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी की स्थापना की गई है।

ऋषि, मुनियों और साधकों की हजारों वर्षों की तपस्या एवं परिश्रम का प्रतिफल है - संगीत। कहा जाता है कि जिस समाज में कला का स्थान नहीं होता वह समाज भी प्राणहीन हो जाता है। जिस समाज में कुमार गंधर्व जैसे संगीत-प्रेमी पैदा हो जाते हैं, वह देश धन्य हो जाता है। कुमार गंधर्व का वास्तविक नाम सिद्राम कोमकली था। आपने पण्डित बी. आर. देवधर से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। सात वर्ष की अल्पायु में ही वे बाल-गायक के रूप में विख्यात हो गए थे।

कुमार गंधर्व ने जहाँ मालवी गीतों को राग दरबारी ढंग से गाकर नए आयाम दिए, वहीं सूर, तुलसी, कबीर और मीरा के पदों को गाकर उन्हें जन-सामान्य तक स्वर-सरिता के माध्यम से प्रेषित किया। राग-मालवती, लग्न-गंधार, सहेली तोड़ी और गांधी मल्हार रागों की रचना की। 'अनूप राग-विलास' नामक पुस्तक लिखकर संगीत प्रेमियों को संगीत की सीख भी दी। संगीत-सेवा हेतु आपको पद्मभूषण, पद्मविभूषण, कालिदास सम्मान और शिखर सम्मान से विभूषित किया गया। देवास में प्रतिवर्ष 'कुमार गंधर्व संगीत समारोह' का आयोजन होता है

संगीत साधक कुमार गंधर्व

जिसमें संगीत के प्रति श्रद्धा, विश्वास और प्रेरणा हेतु 'कुमार गंधर्व सम्मान' प्रदान किया जाता है।

संगीत की महिमा अनंत है। संगीत की शास्त्रीयता जहाँ साधना को महत्व देती है, वहीं उसकी मधुरता, आत्मिक शांति और जीवन जीने की उमंग उत्पन्न करती है। संगीत में पगे गीतों को सुनकर जहाँ आदमी थिरक उठता है, वहीं करुणा में डूबकर आँसू बहाने पर विवश हो जाता है। संगीत जब जन-साधारण को प्रभावित करने लगता है, तब उसका सामाजिक महत्व बढ़ जाता है। इस संदर्भ में फिल्मी गीतों को विस्मृत नहीं किया जा सकता। 'ऐ मेरे वतन के लोगो .... ' ऐसा गीत था कि जब इसे गाया गया तब प्रत्येक सुनने वाले व्यक्ति की आँखों में आँसू और हृदय में राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम व्याप्त था। इस गीत को इतने प्रभावशाली ढंग से गाया था स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने।

मध्यप्रदेश के इंदौर नगर में जन्मी लता मंगेशकर ने गायन की यात्रा 1947 से प्रारंभ की। उन्होंने हर भाव, धर्म और भाषा के गीतों में अपने स्वरों को सँजोया, इसलिए वे समूचे राष्ट्र की गायिका हैं। कहते हैं उनके गले में सरस्वती स्वयं विराजमान हैं। तभी तो आयु के इस पड़ाव में भी उनके गायन में अभी भी आकर्षण है। यह उनकी संगीत की साधना और निरन्तर तपस्या का फल है। वे अपनी दिनचर्या के प्रति सदैव सचेत रहती हैं। उनकी इच्छा-शक्ति ही उनकी सफलता का मूलमंत्र है।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर

लताजी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया। उनको प्रदत्त अन्य पुरस्कारों में 'दादा साहब फालके', 'पद्मभूषण' एवं 'पद्मविभूषण' प्रमुख पुरस्कार हैं।

संगीत और मध्यप्रदेश एक दूसरे के पूरक लगते हैं। संगीत की चर्चा मध्यप्रदेश का उल्लेख किए बिना पूरी नहीं हो सकती। संगीत की कोई सीमा नहीं है। प्रदेश का हृदय भी विस्तृत है। विभिन्न कलाएँ यहाँ की मिट्टी में अंकुरित होकर पल्लवित होती रही हैं। संगीत का वट-वृक्ष यहाँ स्वर-प्रेमियों को छाया और सहृदय जनों को सुरभि प्रदान कर रहा है।

-लेखक गण

शिक्षण संकेत : ■ बच्चों को पुस्तक में आए सूर, तुलसी, कबीर आदि के पदों को गाने के लिए प्रेरित करें।

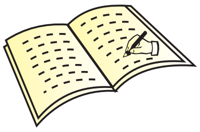

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

ध्रुपद	----------------	गुरुभाई	----------------
विरासत	----------------	जीवन्त	----------------
प्रणेता	----------------		

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

क. मध्यप्रदेश में कौन-कौन से प्रमुख संगीतकारों ने संगीत की साधना की ?

ख. मध्यप्रदेश में संगीत की राज्य अकादमी किस महान संगीतकार के नाम से कहाँ पर स्थापित की गई है?

ग. भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान संगीत के क्षेत्र में किसे दिया गया था?

घ. कुमार गंधर्व का वास्तविक नाम क्या था ?

ङ. सरस्वती किस संगीतज्ञ के गले में विराजमान मानी जाती है?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

क. संगीत का वास्तविक महत्व कब होता है ?

ख. कुमार गंधर्व ने कौन-कौन-से रागों की रचना की ?

ग. बादशाह अकबर के दरबार में तानसेन ने क्या चमत्कार कर दिखाया था ?

घ. लता मंगेशकर को कौन-कौन-से सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए हैं?

ङ. संगीत की महिमा अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

च. पाठ में आए संगीतकारों में से आपको कौन-सा संगीतकार सबसे अच्छा लगा और क्यों?

प्रश्न 4. सही विकल्प चुनकर लिखिए -

(क) तानसेन के गुरु थे -

1. बैजू बावरा
2. स्वामी हरिदास
3. राजा मानसिंह तोमर
4. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

(ख) प्रख्यात सरोद वादक थे –

1. अलाउद्दीन खाँ 2. कुमार गंधर्व

3. तानसेन 4. बिस्मिल्लाह खाँ

प्रश्न 5 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

अ. बालगायक के रूप में ----------- अल्पायु में विख्यात हो गए थे।

आ. ----------- संगीत सम्राट कहे जाते हैं।

इ संगीत नृत्य का अखिल भारतीय कार्यक्रम संगीतकार --- की स्मृति में होता है।

ई. जिस समाज में कला का स्थान नहीं वह ---------- हो जाता है ।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए –

झंकृत, समृद्ध, अन्वेषण, ध्रुपद, अन्तर्राष्ट्रीय, शास्त्रीय, अक्षुण्ण, वैशिष्ट्य, श्रद्धांजलि।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों में से सामासिक शब्द छाँटकर, उनके समास का नाम लिखिए–

क. राजपुत्र प्रतिदिन माता–पिता को प्रणाम करता था।

ख. पीताम्बर धारण किए कमल–नयन भगवान प्रकट हुए।

ग. राजभवन के रसोईघर एवं शयनकक्ष बहुत विशाल हैं।

प्रश्न 3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित शब्दों की सही जोड़ियाँ बनाइए –

अनूठी	मुग्ध
ग्वालियर	तान
मंत्र	परम्परा
रण	घराना
मधुर	भेरी

प्रश्न 4. 'प्राण' शब्द में 'हीन' जोड़कर 'प्राणहीन' शब्द बना है। इसी प्रकार 'हीन' जोड़कर पाँच अन्य शब्द बनाइए।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए और संधि का प्रकार भी लिखिए–

दिगम्बर, उल्लास, सम्मान, इत्यादि।

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर कीजिए-

(संगीत सम्राट, दीपक राग, स्वामी हरिदास, बाल गायक, भारत रत्न)

अ. तानसेन ने तन्मय होकर -------- की साधना की।

आ. लता मंगेशकर जी ने भारत का सर्वोच्च पुरस्कार -------- प्राप्त किया।

इ. ---------- तानसेन को कौन नहीं जानता है।

ई. तानसेन के गुरु ----------- थे ।

उ. कुमार गंधर्व सात वर्ष की आयु में ---------- के रूप में विख्यात हुए।

योग्यता विस्तार

1. पाठ में आए संगीतकारों के अतिरिक्त प्रदेश व देश के अन्य प्रमुख संगीतकारों के नाम और संगीत के प्रति उनके योगदान की जानकारी पुस्तकालय से एकत्रित कीजिए।

2. लता मंगेशकर द्वारा गाए राष्ट्रीय गीतों को संकलित कीजिए एवं उन्हें लयबद्ध रूप में गाने का प्रयास कीजिए।

3. मालवा, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड एवं निमाड़ के लोकगीतों का संकलन कीजिए।

4. आपको किस प्रकार का संगीत अच्छा लगता है? अपने शब्दों में लिखिए तथा कक्षा में बताइए।

अच्छा साहित्य और संगीत मन को आनंद देता है।

पाठ-4

अपराजिता

आइए सीखें : ● दृढ़ इच्छा-शक्ति, धैर्य, साहस और निरन्तर साधना जैसे गुणों का विकास ● 'ऑ' की ध्वनि का ज्ञान ● रचना के आधार पर वाक्य भेद ● अपठित गद्यांशों का अभ्यास ● विराम चिह्नों का प्रयोग।

*(**पाठ-परिचय :** यह एक ऐसी विकलांग महिला की मार्मिक कथा है जिसने अद्भुत धैर्य, दृढ़ इच्छा-शक्ति और अनवरत साधना से अपने जीवन को सक्रिय और सफल बनाया। विषम परिस्थितियों में वह साहसपूर्वक आगे बढ़ती रही, विजय प्राप्त करती रही तथा अपराजित (जो कभी न हारी हो) बनी रही।)*

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है,जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अन्तर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दण्डित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर, हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है, जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने ऐसी अभिशप्त काया देखी, जिसे विधाता ने कठोरतम दण्ड दिया है, किन्तु वह उसे नतमस्तक, आनन्दी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उस कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक ह्वील चेयर निकालकर सामने रख दी और भीतर चली गई। दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे, बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती-ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो।

शिक्षण-संकेत : ■ बच्चों को हाव-भाव के साथ संस्मरण सुनाएँ तथा उनसे भी सुनें ■ बच्चों का ध्यान विकलांग व्यक्तियों की ओर आकर्षित करें तथा संवेदनशीलता का भाव जाग्रत करें ■ पाठ में आए कठिन शब्दों तथा प्रश्नोत्तर को जानने में बच्चों की सहभागिता को सुनिश्चित करें।

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सुसज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहिन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिए के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए पर बायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ मानसिक सन्तुलन भी खो बैठा। केवल हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चन्द्रा, जिसका निचला धड़ है, निष्प्राण मांसपिण्ड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त, आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्वाकांक्षाएँ।

'मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय, माइक्रोबायोलाजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?'

''मैडम, आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकती है?''

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कण्ठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है। और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। आजकल वह आई. आई. टी. मद्रास (वर्तमान में चैन्नई)में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन के नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव

कर दिया हो, उसने किस अद्‌भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

'मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसीलिए एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।''

उसने मुझे तस्वीरें दिखाईं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर से उतार सकती थी। किंतु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''हमने आज तक दो व्यक्तियों द्‌वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाते अपने ही विषय में सुना था, किंतु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए।'' डॉ. चंद्रा और उनकी अद्‌भुत साहसी जननी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की। और इस साधना का सुखद अंत हुआ 1976 में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में। अपंग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं।

''जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा ''आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवनभर गरदन ही हिला

पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।'' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कण्ठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका छोटा भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बाबजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो। इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरंतर इसके जीवन की भीख माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों; में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।''

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गई थीं। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कार्मेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कान्वेण्ट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की चेयर लेकर कौन पूरे क्लासरूम में घुमाता फिरेगा?''

''आप चिंता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड-दर-पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी.एस-सी. किया। प्राणिशास्त्र में एम. एस-सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफ़ेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानियाँ से चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा!

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें? मैंने जब वे कविताएँ देखी, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आ पाई वह अनजाने में ही उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसके अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुन्दर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैर का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी।

यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रखकर वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करते डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुस्कुराती खड़ी डॉ. चन्द्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जाकेट में जकड़ी, बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चन्द्रा।''

मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉक्टर मैरी वर्गीज़ के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया, मेरा निचला धड़ निर्जीव है, सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी। किंतु डॉ. चंद्रा के प्रोफ़ेसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया, वह विज्ञान ने पाया।''

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ पर उनकी जननी का बड़ा-सा चित्र, जिसमें वे जे.सी. बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रहीं हैं,-'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्‌भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता, यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।''

-शिवानी

लेखिका-परिचय : गौरा पन्त 'शिवानी'- हिन्दी की लोकप्रिय कथा-लेखिका हैं। आपका जन्म 1933 में राजकोट गुजरात में हुआ था। आपकी शिक्षा शान्ति निकेतन और कोलकाता विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने देश-विदेश का भ्रमण किया। आपको लेखन में कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं, इनमें 'पद्‌मश्री' प्रमुख है।

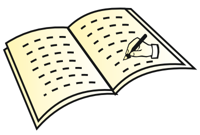

अभ्यास

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

विलक्षण	----------	उत्फुल्ल	----------
अकस्मात	----------	विषाद	----------
विच्छिन्न	----------	बुद्धिदीप्त	----------
		जिजीविषा	----------

कंठगत	----------	पटुता	----------
उत्कट	----------	ख्याति	----------
नियति	----------	आघात	----------
क्षत-विक्षत	----------	व्यथा	----------
आभामण्डित	----------	नूरमंजिल	----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) अपराजिता संस्मरण की लेखिका कौन हैं ?

(ख) डॉ. चंद्रा की माताजी का क्या नाम है ?

(ग) डॉ. चंद्रा को सामान्य ज्वर के बाद कौन-सी बीमारी हो गई थी?

(घ) 'वीर जननी' का पुरस्कार किसे मिला?

प्रश्न 3. निम्नलिखि प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(क) लेखिका की दृष्टि में डॉ. चंद्रा सामान्य जनों से किन बातों में भिन्न थीं?

(ख) लेखिका ने जब चंद्रा को कार से उतरते देखा तो वे आश्चर्य चकित क्यों रह गईं?

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) बित्ते भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

(ख) मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा भी सहारा न दे।

(ग) चिकित्सा ने जो खोया, वह विज्ञान ने पाया।

(घ) बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्वाकांक्षाएँ।

भाषा-अध्ययन

आजकल अंग्रेजी के शब्द हिन्दी में प्रयुक्त हो रहे हैं, जिनमें 'ऑ' ध्वनि का उच्चारण होता है इस प्रकार हिन्दी में 'ऑ' की ध्वनि का आगम अँग्रेजी से हुआ है। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है। जैसे - डॉक्टर, कॉलिज, हॉल। कुछ शब्दों में इसके प्रयोग से अन्तर आ जाता है। इसके अन्तर को समझिए-

काल	-	समय	(आ की ध्वनि)
कॉल	-	बुलाना, पुकारना	(ऑ ध्वनि)

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए-

डॉक्टर, कॉलिज, बॉल, ऑफ, ऑफिस, कान्वेण्ट

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण, कीजिए और उन्हें लिखिए-

व्यक्तित्व, रिक्तता, अभिशप्त, विच्छिन्न, निष्प्राण, जिजीविषा, बुद्धिदीप्त, सुब्रह्मण्यम्।

प्रश्न 3. सही विकल्प चुनिए -

(क) 'अपराजिता' शब्द में उपसर्ग है -

(1) अ (2) अप (3) अपरा

(ख) 'विकलांगता' शब्द में प्रत्यय है -

(1) गता (2) ता (3) आगता

(ग) 'अभिमान' में उपसर्ग है -

(1) अभि (2) अ (3) मान

(घ) 'अपराजिता' का विलोम है-

(1) जीता (2) जिता (3) पराजिता

पढ़िए और जानिए -

1. मोहन को कल इंदौर जाना है।
2. मुझे सूचना मिली है कि मोहन को कल इंदौर जाना है।
3. मोहन को कल इंदौर जाना है और उसके बाद उसे देवास जाना है।

उपर्युक्त वाक्यों में -

क्र. 1 में एक ही वाक्य है।

क्र. 2 में दो वाक्य हैं।

क्र. 3 में दो वाक्य हैं।

किन्तु क्र. 2 और क्र. 3 के वाक्य दो भागों में बँटे हुए हैं। ऐसे एक ही वाक्य के छोटे-छोटे वाक्य उपवाक्य कहलाते हैं। ये उपवाक्य संयोजक से जुड़े रहते हैं। इस प्रकार की वाक्य संरचना को अब समझिए।

रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार -

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

1. साधारण वाक्य
2. मिश्रित वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

साधारण वाक्य

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। साधारण वाक्य में एक ही क्रिया होती है। उदाहरण- प्रांजल स्कूल जाता है।

मिश्रित या मिश्र वाक्य

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। सामान्यतः प्रधान वाक्य और आश्रित उपवाक्य के बीच - कि, जो, जिसने, जिसे, तब, जहाँ-तहाँ जैसे संयोजक शब्द होते हैं। आश्रित उपवाक्य- तीन प्रकार के हैं- संज्ञा आश्रित, विशेषण आश्रित और क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य।

संज्ञा आश्रित उपवाक्य- प्रधान उपवाक्य किसी संज्ञा के बदले में आने वाला उपवाक्य है। यह 'कि' संयोजक शब्द से जुड़ा रहता है; जैसे- मोहन कह रहा है कि वह कल नहीं आएगा।

विशेषण आश्रित उपवाक्य - ये प्रधान उपवाक्य की संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। ये उपवाक्य 'जो', 'जिसे', 'जिसने', 'जिन्हें' आदि शब्दों से जुड़े रहते हैं; जैसे- तुम्हारा पैन अच्छा चलता है, जो तुमने मुझे कल दिया था।

क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य - प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताने वाले उपवाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य होते हैं। ऐसे वाक्यों में जब, जैसे, वैसे, जितना आदि योजक शब्द आते हैं; जैसे- जब हम टिकिट खरीदेंगे, तब प्लेटफार्म पर जाएँगे।

संयुक्त वाक्य - संयुक्त वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक या अधिक उपवाक्य समानाधिकरण (समकक्ष) वाले होते हैं। संयुक्त वाक्य में दो उपवाक्य - और, या, अथवा, किन्तु, परन्तु, आदि से जुड़े होते हैं; जैसे-वह गरीब है परन्तु ईमानदार भी है।

प्रश्न 4.'अपराजिता' पाठ से साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य के दो-दो उदाहरण छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 5.निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए-

मैंने शारीरिक रूप से विशेष आवश्यकता वाले एक बालक को पैर से लिखते देखा तो मैं दंग रह गया। भगवान की लीला भी विचित्र है, साहसी, आत्मविश्वासी और जीवट स्वभाव के ऐसे विशेष आवश्यकता वाले कुछ व्यक्ति तो हमे हतप्रभ बना देत हैं। समाज में इस प्रकार के कुछ व्यक्ति तो अपने हथियार डाल देते हैं तथा दूसरों के आश्रित रहकर जीवन जीते हैं। कभी वे मंदिर के सामने, कभी स्टेशन के पास या किसी सार्वजनिक स्थान पर माँगने के लिए धरना दिए बैठे रहत हैं। हमें चाहिए कि हम उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित करें। उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करें और उन्हें अच्छा जीवन जीने का मार्ग सुझाएँ।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ख) हम **विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों** के लिए क्या-क्या काम कर सकते हैं?

(ग) इस गद्यांश से मुहावरे छाँटकर उनके अर्थ और वाक्य प्रयोग कीजिए।

(घ) इस गद्यांश में से एक-एक सरल, मिश्रित और संयुक्त वाक्य छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 6. निम्नलिखित गद्यांश को उपयुक्त विराम चिह्न लगाकर पुनः लिखिए -

नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम् मदर ने कहा हमें आपसे पूरी सहानुभूति है पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की ह्वील चेयर कौन पूरे क्लास में घुमाता फिरेगा

आप चिंता न करें मदर मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती

प्रश्न 7. 'सुगम' शब्द में 'ता' प्रत्यय जोड़कर 'सुगमता' नया शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में निर्धारित प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए-

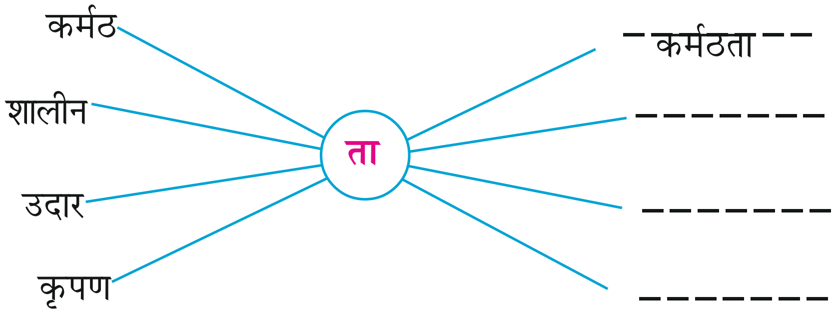

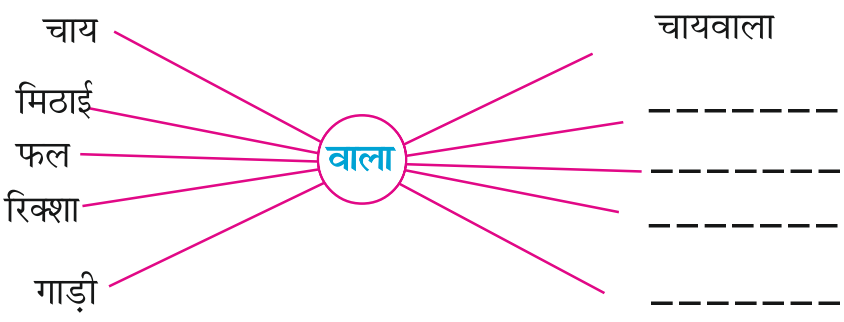

प्रश्न 8. 'प्रतिफल' शब्द में 'प्रति' उपसर्ग जुड़ा है। इसी प्रकार 'प्रति',परा और अभि उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाकर लिखिए-

प्रति
- क्षण = प्रतिक्षण----------
- दान = ---------------
- ध्वनि = ---------------
- रूप = ---------------
- वादी = ---------------

परा
- जय = पराजय
- क्रम = ---------------
- भव = ---------------
- भूत = ---------------
- वर्तन = ---------------

अभि
- मुख = अभिमुख
- शाप = ---------------
- नव = ---------------

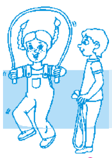

योग्यता विस्तार

1. लेखिका ने चन्द्रा के लिए 'अपराजिता' शब्द क्यों चुना है? आपके विचार से इसके लिए अन्य कौन-सा शब्द उपयुक्त हो सकता है?
2. कक्षा में चर्चा कीजिए कि यदि चन्द्रा की माँ में सहनशीलता और त्याग की भावना न होती तो क्या होता?
3. साहस और निर्भीकता के अनेक उदाहरण राणा साँगा के भी हैं - वे बाबर से अस्सी घाव लगने पर भी लड़ते रहे।
   'अस्सी घाव लगे थे तन में, फिर भी व्यथा नहीं थी मन में' इस संबंध में अपने शिक्षक से जानकारी लीजिए।
4. आजकल सरकार **शारीरिक रूप से विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों** के हित में कौन-कौन-से कार्य कर रही है? उनकी तालिका बनाइए।
5. आपने अपने आस-पास किसी **विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति** को देखा होगा। उसे देखकर अपने मन में उठने वाले विचारों को लिखिए।

आशावादी विपरीत परिस्थिति में भी पराजय को स्वीकार नहीं करता।

पाठ-5

श्री मुफ्तानंद जी से मिलिए

आइए सीखें ● सामाजिक बुराइयों को समझना और उनसे बचने का प्रयास करना ● शब्द-युग्म, समानोच्चारित भिन्नार्थकशल सूक्ष्म अंतर वाले शब्द ● मुहावरे, कहावतें, विराम-चिह्न ● हिन्दी मानक शब्द, सार्वनामिक विशेषण, सर्वनाम ● विशेषण - विशेष्य प्रयोग।

*(**पाठ-परिचय :** इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर किया है। कुछ लोग जिंदगी भर मुफ्त में कुछ-न-कुछ प्राप्त करने की जुगाड़ में लगे रहते हैं। इस बुराई को लेखक ने मुफ्तानंद जी के माध्यम से हास्य व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत किया है।)*

भगवान ने इस संसार रूपी अजायबघर में भाँति-भाँति के जीव-जंतु छोड़े हैं। कुछ काले, कुछ गोरे, सुंदर, असुंदर, भोले और जल्लाद। अलग-अलग स्वभाव, अलग-अलग चाल - ढाल। मेरे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं, नाम है उनका मुफ्तानंद जी। यथा नाम तथा गुण। 'माले मुफ़्त दिले बेरहम।' क्या मजाल कि कहीं दावत का झूठा भी निमंत्रण मिल जाए और वे जाने से रुक जाएँ - चाहे बीमार ही क्यों न हों, और चाहे बाद में, कुछ भी क्यों न भुगतना पड़े। वे ऐसे ही एक अवसर पर दावत में जा रहे थे। मुझसे बोले, भाई, अरे दो-ढाई रुपये का खाऊँगा, बारह आने का मिक्सर पी लूँगा, तब भी फायदे में ही रहूँगा।

'मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नन्दन' ब्रजभाषा की लोकोक्ति है। श्री मुफ्तानंद जी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। शौक सब करेंगे। पान का भी शौक जान-पहचान वालों की जेब से ही होता है। आप पान खा रहे हैं, आपसे नमस्कार किया और पान पर हाथ बढ़ाया। यदि आप ट्रेन में सफर कर रहे हैं, तो किसी अजनबी से भी निःसंकोच रूप से, अपने आवश्यक शौक पूरा कर लेते है।

उनका सिद्धान्त है कि ऐसा करने से दुर्व्यसन अपनी सीमा पार नहीं कर पाते हैं उनकी यह भी मान्यता है कि जो स्वाद मुफ्त का पान खाने से आता है, वह पैसा खर्च करने पर कहाँ?

एक दिन मैं बाजार से लौटा। देखा कि श्रीमान मुफ्तानंद गली में एक कटी पतंग लूटने को बेतहाशा दौड़े जा रहे हैं। यदि वह उन्हें मिल गई तो वे उसे प्राप्त करके कृतकृत्य हो जाएँगे। यद्यपि पतंग उड़ाने की अवस्था बहुत पीछे छोड़ चुके हैं, तथापि उस मुफ्त की पतंग को कैसे छोड़ दें?

शिक्षण-संकेत - ■ हास्य-व्यंग्य से परिचय कराते हुए पाठ का हाव-भाव के साथ वाचन करें। ■ पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। ■ लोकोक्ति एवं मुहावरों के अर्थ समझाएँ व लिखवाएँ। ■ 'फ' और 'फ़' का उच्चारण कराएँ।

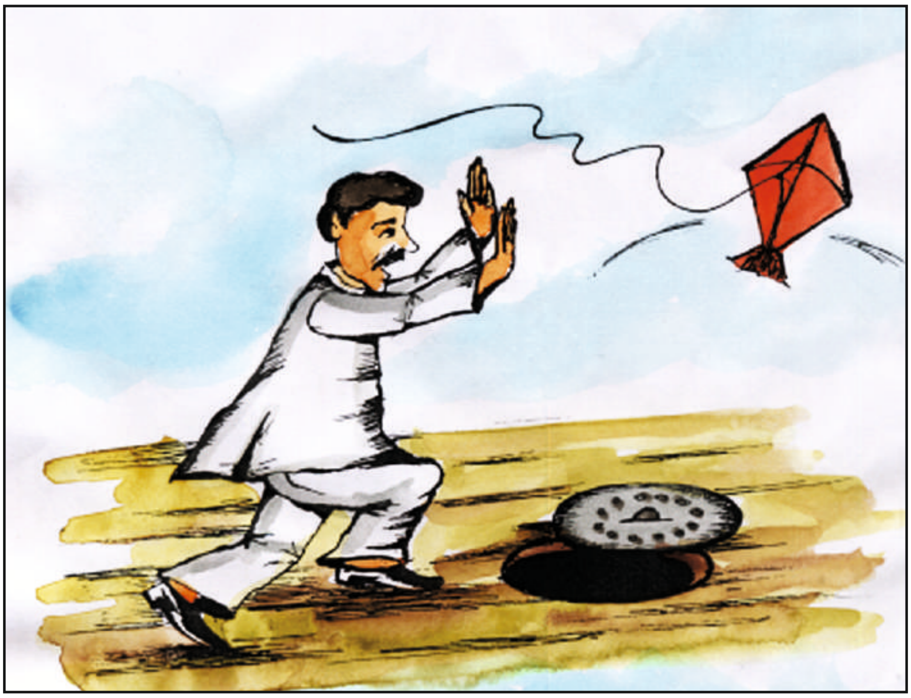

मेरे घर दो दैनिक पत्र रोजाना आते हैं, मुझे उनकी प्रसादी तभी मिल पाती है, जब श्रीमान मुफ्तानंद भोग लगा लेते हैं। मोहल्ले में कौन-कौन लोग अखबार मँगाते हैं, उनकी नामावली उन्हें कण्ठस्थ है समय-समय पर सब पर कृपा करते हैं। उनका कथन है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने ज्ञानवर्द्धन के लिए, अधिक-से-अधिक समाचार-पत्र पढ़ने चाहिए किन्तु पैसा खर्च करके समाचार-पत्र पढ़ना वे पाप समझते हैं।

उन्होंने भारतवर्ष की जनसंख्या बढ़ाने में काफी योग दिया है। ईश्वर की कृपा से उनके छह लड़के और चार लड़कियाँ हैं। शिक्षा सबको देना, वह अपना पावन कर्त्तव्य समझते हैं। इसके लिए सदैव वह फीस माफ कराने के चक्कर में स्कूलों के मैनेजर और प्रिंसिपलों के घर पर धरना देते रहते हैं। अपने इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद सबका प्रयोग करते हैं; उनकी तिकड़म से चाहे योग्य और गरीब विद्यार्थी रह जाएँ लेकिन वह अपने किसी बच्चे की फीस नहीं देंगे।

एक दिन सुबह ही मेरे घर पधारे, बोले - ''भाई, जरा कालिदास ग्रन्थावली दे दो।'' मैंने कहा, आपको उसकी क्या आवश्यकता पड़ गई? उत्तर दिया - ''मेरे एक मित्र को चाहिए, उससे मेरा लाभ होने वाला है।'' अब आप बताइए लाभ होगा इनका और पुस्तक चाहिए मेरी। मैंने कहा, ''डीयर मुफ्तानन्द, पुस्तकें देने के बाद बहुत कम वापिस आती हैं। यदि आप दो दिन में लौटा दें तो ले जाइए।'' सारांश यह है कि वह पूरा वायदा करके ले गए। आज दो वर्ष हो गए, पुस्तकें वापिस करने का नाम नहीं लेते। इस प्रकार अनेक पुस्तकें अलमारी में बन्द रखते हैं, क्या मजाल कि आपकी दृष्टि भी उन पर पड़ जाए।

सिनेमा देखने का भी उनको शौक है। 'फ्री पास' प्राप्त करने में वह अत्यंत कुशल हैं। उन्हें किसी प्रकार पता लगना चाहिए कि आप सिनेमा जा रहे हैं, तुरन्त आपके साथ। जेब खाली। टिकट तो आप लेंगे ही और वह सिनेमा देखकर कृतार्थ करेंगे ही। एक दिन मुझ पर कृपा दृष्टि

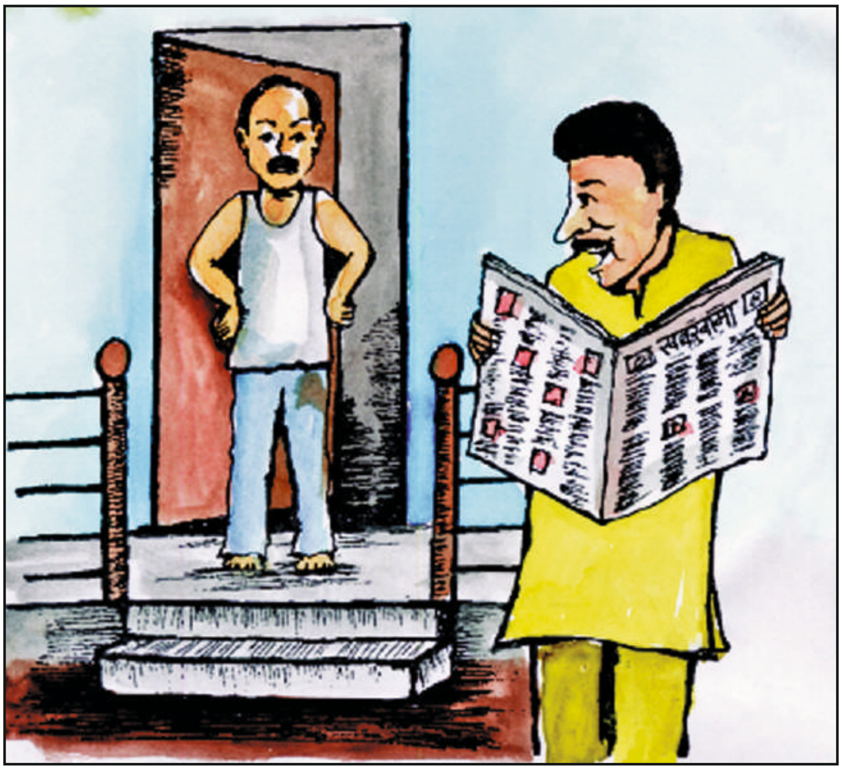

हुई। कहीं से एक थियेटर के पास ले आए थे। थियेटर रात्रि के 1 बजे समाप्त हुआ। मैंने बीच में कई बार उनसे घर वापिस चलने को कहा, लेकिन बराबर यही दोहराते रहे, मुफ़्त में क्या बुरा है। उनका विचार है कि मुफ़्त देखने को मिले तो रात भर की नींद एक (रद्दी-से-रद्दी) थियेटर के लिए बलिदान की जा सकती है।

नगर में पानी के बरफ की फैक्टरी खुली। अपने विज्ञापन के लिए फैक्टरी के मालिक महोदय ने दो दिन तक मुफ्त बरफ बाँटने का ऐलान शहर में करवा दिया। मुफ्तखोरों के सरताज, हमारे मुफ्तानंद जी भी वहाँ घण्टों नष्ट करके 'क्यू' में योगी की तरह साधना करके एक-एक टुकड़ा बरफ का दोनों दिन लाए। पहले दिन अपनी जूती वहाँ खो आए और दूसरे दिन नई कमीज वहाँ फड़वा आए, किन्तु मुफ़्त में मिले उस बरफ के आगे यह नुकसान नगण्य था।

श्री मुफ्तानंदजी की तबीयत कभी खराब न हुई हो यह बात नहीं है, किन्तु आज तक दवा तो क्या शीशी के पैसे भी उन्होंने अपनी जेब से खर्च नहीं किए। डॉक्टर, वैद्य, हकीम सभी से दोस्ती है और आखिर में सलामत रहे, सरकारी अस्पताल। आप पूछेंगे कि डॉक्टर तो किसी के दोस्त नहीं होते बस यही तो कबीर का रहस्यवाद है। मुफ्तानंद जी बड़े उस्ताद हैं। डॉक्टर तो दुनिया की नब्ज टटोलते हैं और मुफ्तानंद जी डॉक्टरों की। किसी डॉक्टर को अपनी खुशामद पसंद है, तो उसकी खुशामद। वैद्यजी कीर्तन के शौकीन हैं, तो उनके यहाँ कीर्तन। गरज यह कि किसी-न-किसी प्रकार पहले उनसे मित्रता और फिर मुफ्त में दवाई।

वैसे ये बारह महीने बीमार न भी हों तो अस्पताल से टॉनिक तो नित्य भरवा ही लेते हैं। मैंने एक दिन कहा, ''व्यर्थ में दवाइयाँ मत पिया कीजिए।'' बोले, ''यार, पैसे तो नहीं खर्च होते। मुफ्त की चीज कभी नुकसान नहीं करती।'' इहलोक को मुफ्त में सुधारकर मुफ्तानंद जी, अब परलोक में भी मुफ्त जीवन-यापन करने की टोह में रहते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि जब भगवान ने ही इस प्रकार आनंद से निभा दी, तो स्वर्ग का टिकट खरीदने की आवश्यकता

नहीं पड़ेगी। भगवान मुफ्त में उनकी मुक्ति कर दें, यह प्रार्थना करते हुए मुफ्तानंद जी को हम साष्टांग दंडवत करते हैं।

– डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी

लेखक-परिचय : डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी व्यंग और हास्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के उर्वर कवि डॉ. चतुर्वेदी 40 ग्रंथों के लेखक हैं। गद्य तथा पद्य दोनों में आपका बराबर अधिकार है। डॉ. चतुर्वेदी के 'ठिठोली' 'चकल्लम' 'मानवबिन्दु' मुख्य हास्य व्यंग्य हैं। आपको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया है।

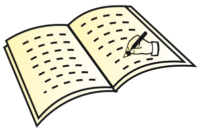

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए –

नि:संकोच	----------	कृतकृत्य	----------
जीवन-यापन	----------	तिकड़म-जुगाड़	----------
खुशामद	----------	इहलोक	----------
मुफ्तानंद	----------	साष्टांग	----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए –

क. लेखक ने इस पाठ का नाम मुख्य पात्र के नाम पर क्यों रखा ?

ख. 'मुफ्तखोरों के सरताज' किसे कहा गया है?

ग. लेखक से मुफ्तानंद ने कौन-सी ग्रंथावली माँगी?

घ. मुफ्तानंद जी की कमीज़ कहाँ और क्यों फटी?

ङ. लेखक, मुफ्तानंद जी को साष्टांग प्रणाम क्यों करता है?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए –

क. मुफ्तानंद महोदय की मुफ्तखोरी की घटनाओं में से आपको सबसे अधिक प्रभावित किस घटना ने किया? लिखिए।

ख. मुफ्तानंदजी पढ़ने के लिए समाचार-पत्र कैसे प्राप्त करते थे?

ग. मुफ्तानंदजी दूसरों से पुस्तकें माँगकर उनका क्या करते थे?

घ. लेखक ने 'कबीर का रहस्यवाद' किस संदर्भ में कहा है?

ङ. परलोक के संबंध में मुफ्तानंदजी की क्या धारणा है?

प्रश्न 4. रिक्त स्थान भरिए-

1. .... का चंदन घिस मेरे ....
2. माले .... दिले ....

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

निमंत्रण, सिद्धान्त, अनुष्ठान, तिलांजलि, कृतकृत्य, कण्ठस्थ, साष्टांग, कृतार्थ।

यह भी जानिए

निमंत्रण - शब्द का अर्थ है - किसी कार्य, उत्सव में भोज आदि के लिए सम्मिलित होने का निवेदन।

आमंत्रण - शब्द का अर्थ है - किसी कार्य, उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए बुलावा किन्तु इसमें भोज आवश्यक नहीं।

दृष्टव्य है - वाक्य-प्रयोग

1. मेरी पुत्री के जन्मोत्सव के अवसर पर आपका निमंत्रण है।
2. आपको विद्यालय के वार्षिकोत्सव का आमंत्रण-पत्र भेजा जा रहा है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित समानोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अन्न - अन्य   अकथ- अथक

आदि - आदी   उपकार - अपकार

अनल - अनिल

प्रश्न 3. निम्नलिखित मुहावरों / कहावतों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

यथा नाम तथा गुण; माले मुफ्त दिले बेरहम; मुफ्त का चंदन - घिस मेरे नंदन; धरना देना, नब्ज टटोलना, टोह में रहना।

ध्यान दीजिए :

बोलकर पढ़ते हुए विराम-चिह्नों पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है, नहीं तो वाक्य का अर्थ कुछ-का-कुछ हो जाता है। निम्नलिखित दोनों वाक्यों के अंतर पर ध्यान दीजिए:-

पढ़ो, मत लिखो।

पढ़ो मत, लिखो।

पहले वाक्य में 'पढ़ने' की बात कही गई है, 'लिखने' के लिए मना किया गया है। दूसरे वाक्य में 'पढ़ने' के लिए मना किया गया है, 'लिखने' की बात कही गई है।। यहाँ अल्प विराम (,) का यह सब कमाल है।

वास्तव में लिखते समय अथवा पढ़ते समय विराम-चिह्नों का ध्यान न रखा जाए, तो अर्थ कुछ-का-कुछ हो सकता है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित अनुच्छेद में यथास्थान विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए :

भगवान ने इस संसार रूपी अजायबघर में भाँति-भाँति के जीव जंतु छोड़े हैं कुछ काले कुछ गोरे कुछ सुन्दर कुछ असुन्दर भोले और जल्लाद अलग-अलग स्वभाव अलग-अलग चाल ढाल मेरे पड़ोस में एक सज्जन रहते हैं नाम है मुफ्तानंद जी

प्रश्न 5. 'अजनबी' शब्द का हिन्दी में रूप 'अपरिचित' है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी रूप लिखिए-

खुशामद, नब्ज, सलामत, दावत, बेरहम, अखबार, रोजाना, नुकसान ।

आइए जाने -

निम्नलिखित वाक्यों के जोड़ों में अंतर पर ध्यान दीजिए :-

1. वह लड़का भला है।
2. वह भला है।
3. कोई स्त्री दरवाजे पर खड़ी है।
4. कोई दरवाजे पर खड़ी है।

ऊपर के वाक्यों के जोड़ों में 'वह' और 'कोई' के प्रयोग में यह अंतर है कि पहले वाक्य में 'वह' और 'कोई' संज्ञा के साथ और दूसरे वाक्य में बिना संज्ञा के प्रयुक्त हुआ है।

यहाँ हम देख रहे हैं कि हमारी भाषा में कुछ शब्द सर्वनाम और विशेषण दोनों का काम करते हैं। ये शब्द हैं - वह, यह, जो, क्या, कोई आदि।

जब ये शब्द स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होते हैं, तब ये सर्वनाम का काम करते हैं; जब इन शब्दों के बाद कोई संज्ञा शब्द आता है, तब ये विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं और सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

प्रश्न 6. क. इस पाठ से कुछ ऐसे वाक्य छाँटकर लिखिए, जिनमें सर्वनाम का प्रयोग विशेषण की तरह किया गया है।

ख. ऐसे वाक्य बनाइए जिनमें 'वह', 'यह', जो 'क्या', और 'कोई' शब्द सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त हुए हों।

ध्यान दीजिए - लाल-लाल टमाटर स्वादिष्ट होते हैं।
हरा - हरा खेत सुहावना लगता है।
काले-से-काले जामुन लाना।
अच्छे-से-अच्छा काम करो।

सीखिए -

लाल-लाल, हरा-हरा, काले-से-काले, अच्छे-से-अच्छा शब्द युग्म विशेषण हैं। जब विशेषणों में पुनरुक्ति की स्थिति आती है तो कुछ बल मिलता है।

संख्यावाचक विशेषणों (गणनात्मक स्थिति में) की पुनरुक्ति से - 'एक बार में' या 'प्रति अंश' या 'प्रति व्यक्ति' आदि का भाव प्रगट होता है, जैसे - मैं एक-एक व्यक्ति को देख लूँगा।

- दो-दो बच्चे जाएँ।
- एक-एक बच्चे को दो-दो आम दे दो।

प्रश्न 7. विशेषणों के पुनरुक्ति वाले विभिन्न अर्थ (भाव) के दो-दो वाक्य लिखिए।

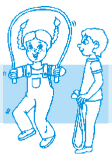

योग्यता विस्तार

1. हास्य-व्यंग्य से संबंधित कहानी एवं चुटकुले बालसभा में सुनाइए।
2. हास्य-व्यंग्य से संबंधित कुछ कहानियों की सूची बनाइए। ऐसे उदाहरण कक्षा में सुनाइए।
3. मुफ़्त के आनंद उठाते समय कई बार हानि भी हो जाती है ऐसे उदाहरण कक्षा में सुनाइए।
4. इस तरह के प्रसंग खोजें और अपने मित्रों को बताएँ।

संसार मे ज्ञानी, तपस्वी, शूर-वीर, कवि, विद्वान और गुणवान मनुष्य भी लोभ के कारण उपहास के पात्र हुए हैं।

पाठ-6

भक्ति के पद

आइए सीखें : ● प्रभु के प्रति अनन्य प्रेम, समर्पण एवं भक्ति-भावना का विकास ● तत्सम शब्द और पर्यायवाची शब्द ● छंद परिचय-दोहा, सोरठा की जानकारी।

*(**पाठ-परिचय :** इस पाठ में भक्ति-भावना से भरे चार पद हैं। सूर के पद में प्रभु के प्रति अनन्य और अटूट प्रेम का वर्णन है। वे तो प्रभु के सामीप्य में ही सच्चा सुख पाते हैं। तुलसी भी ईश्वर के अनन्य आराधक हैं। वे प्रभु के चरणों में ही अपना अनुराग चाहते हैं। रैदास की भक्ति में भी वही अनन्यता है; वे प्रभु के साथ एकाकार होना चाहते हैं। मीराबाई का प्रभु-प्रेम भी समर्पण भाव लिए है। वे ईश्वर के प्रति पूर्णत: समर्पित भाव व्यक्त करती हैं। इस प्रकार इन चारों पदों में भक्ति-भावना, ईश्वर की शरण में जाने का दृढ़ संकल्प, विनय, एकनिष्ठ प्रेम और समर्पण भाव का सरस चित्रण है।)*

1.

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम और देव को ध्यावै ?
परम गंग कौ छाँड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करीलफल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै ?

- सूरदास

शिक्षण-संकेत - ■ पदों को हाव-भाव और लय के साथ प्रस्तुत करें। बच्चों से भी सुनें। ■ बच्चों की सहायता से प्रत्येक पद का भाव स्पष्ट करें। ■ भक्ति-भावना से ओत-प्रोत अन्य कविताएँ सुनाएँ। ■ काव्य की सौन्दर्यानुभूति से परिचय कराएँ। ■ कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों की सहायता से वाक्य प्रयोग, पर्याय और विलोम शब्द बताकर स्पष्ट करें। ■ पदों को कण्ठस्थ कराएँ।

(2)

जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे?
काको नाम पतितपावन? जग केहि अति दीन पियारे?
कौन देव बराय बिरद-हित, हठि-हठि अधम उधारे?
खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप, जड़, जवन कवन सुर तारे?
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा 'अपनपौ हारे' ॥

– तुलसीदास

(3)

अब कैसे छूटै नाम रट लागी ।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी ज्योति बरे दिन राती ॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करे रैदासा ॥

– रैदास

(4)

पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो॥
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ॥
सत की नाव, खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो॥

– मीराबाई

सूरदास – कृष्णभक्त सूरदास का जन्म मथुरा – आगरा सड़क के किनारे बसे रुनकता गाँव में सन् 1478 ई. में हुआ था। ये जन्मान्ध थे। संगीत प्रतिभा जन्म से ही थी। गऊघाट पर रहकर ईश्वर –भजन करते थे। यहाँ से महाप्रभु वल्लभाचार्य की प्रेरणा पाकर रंगनाथ जी के मंदिर में आ गए और श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान पदों के माध्यम से करने लगे। 'सूरसागर' ग्रंथ श्रीकृष्ण की लीला का असीम सागर, असंख्य लहरें अपने में संजोए हैं। सन् 1582 में इनका निधन हो गया। 104 वर्ष का यशस्वी जीवन इन्होंने पाया।

तुलसीदास– रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसी का जन्म सन् 1532 में बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। इनके गुरु नरहरिदास थे। गुरु की कृपा से इन्हें भक्ति–मार्ग मिला। आपने राम–भक्ति में लीन रहकर 'रामचरितमानस' की रचना की तथा अन्य कई ग्रंथ लिखे। सन् 1623 में 91 वर्ष की उम्र में इनका निधन हो गया।

रैदास – संत रैदास का जन्म सन् 1388 में वाराणसी उ.प्र. में हुआ। सन् 1518 में इनका निधन हुआ। 130 वर्षों की सुदीर्घ आयु इन्हें मिली। रैदास अपने समय के प्रसिद्ध महात्मा थे। साधना और अनुभव के आधार पर इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। ये भक्ति के लिए वैराग्य को अनिवार्य मानते थे। इनकी दृष्टि में परम तत्व सत्य है, जो अनिवर्चनीय और व्याख्या से परे है।

मीराबाई – मीरा का जन्म सन् 1498 में राजस्थान के चौकड़ी (मेड़ता) जोधपुर में हुआ था। मीरा पर अपने पितामह दूदा जी का प्रभाव था; वे वैष्णव भक्त थीं। मीरा का विवाह उदयपुर के राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ किन्तु असमय ही उनका निधन हो गया। मीरा ने अपना मन संसार के माया–मोह से हटा लिया और वे श्रीकृष्ण के रंग में रँग गईं। सन् 1546 में मीरा का निधन हो गया।

टिप्पणी :

बिटप – श्राप के कारण यमलार्जुन वृक्ष बन गए थे। द्वापर में श्रीकृष्ण ने उनका उद्धार किया था।

व्याध – वाल्मीकि जो पहले डाकू थे। राम शब्द का उल्टा जप करके जिनके जीवन का कल्याण हुआ।

खग – जटायु पक्षी सीता हरण के समय, सीता को बचाने के लिए रावण से संघर्ष करते हुए घायल हो गया था। राम ने उसका उद्धार किया।

मृग – मारीच रावण का सम्बन्धी था जो रावण की सहायता के लिए कपट–मृग (स्वर्णमृग) बना था, जिसका राम के द्वारा उद्धार किया गया।

पाषाण – अहिल्या गौतम ऋषि की पत्नी थीं, जो श्राप के कारण पत्थर की शिला बन गई थीं। भगवान राम के चरणों के प्रताप से उनका उद्धार हुआ।

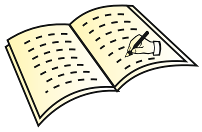

अभ्यास

बोध–प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए –

पंछी	------------	छाँड़ि	------------
कूप	------------	छेरी	------------
मधुकर	------------	अम्बुज	------------
तजि	------------	अधम	------------
उधारे	------------	दनुज	------------
बास	------------	घन	------------
चकोरा	------------	पूँजी	------------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए–

क सूर के मन को सुख कहाँ प्राप्त होता है?

ख अधम का उद्धारक कौन है?

ग रैदास किस के आराधक थे?

घ मीराबाई को कौन–सा रत्न प्राप्त हो गया?

प्रश्न 3. निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए –

क. ''प्रभु जी तुम चंदन हम पानी'' पंक्ति किस कवि की है?

(अ) सूर (आ) तुलसी (इ) रैदास (ई) मीराबाई

ख. तुलसीदास की भक्ति निम्नलिखित में से किस भाव की है?

(अ) सखा भाव (आ) दास भाव (इ) मित्र भाव (ई) गुरु भाव

ग. ब्रजभूमि में किस की झाड़ियाँ (कुंज) अधिक मिलती हैं?

(अ) आम (आ) जामुन (इ) नीम (ई) करील

घ. निम्नलिखित रचनाकारों में से किसका संबंध राजस्थान से था?

(अ) सूर (आ) तुलसी (इ) मीरा (ई) बिहारी

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. 'जहाज का पक्षी' किस बात का प्रतीक है? आशय स्पष्ट कीजिए।

ख. तुलसी ने किस-किसके उद्धार का उल्लेख किया है?

ग. रैदास ने भगवान से अपना संबंध स्थापित करते हुए किस - किससे अपने को जोड़ा है?

घ. मीरा की भक्ति-भावना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

क. कौन देव बराय बिरद - हित, हठि-हठि अधम उधारे?

ख. सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै?

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए -

क. प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।

ख. पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन - दिन बढ़त सवायो॥

भाषा-अध्ययन

1. **दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(क) पंछी तद्भव शब्द है। इसका तत्सम रूप .... है।
(पक्षी/पक्षि/पंच्छी)

(ख) चरन तद्भव शब्द है। इसका तत्सम रूप .... है।
(पैर/चारन/चरण)

(ग) कमल का पर्यायवाची .... शब्द है।
(नीरद/जलद/नीरज)

(घ) रात का पर्यायवाची .... है।
(दिननाथ/रजनीपति/रजनी)

2. **निम्नलिखित पहेली में रात, पानी, कमल के दो-दो पर्यायवाची शब्द दिए हैं। उन्हें ढूँढ़िए तथा लिखिए -**

र	रा	त्रि	तो
ज	ल	ज	य
नी	र	ज	ज

3. **तालिका में दिए गए शब्दों की सही जोड़ी बनाइए -**

तालिका

तद्भव शब्द	तत्सम शब्द
महातम	दुर्मति
दुरमति	स्वर्ण
मानुस	माहात्म्य
सोना	मनुष्य

पढ़िए, सोचिए और कंठस्थ कीजिए -

1. हरी डारि ना तोड़िए, लागै छूरा बान।
   दास मलूका यों कहै, अपना-सा जी जान॥

-मलूकदास

2. तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
   बसीकरन इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर ॥

- तुलसीदास

3. फूलहिं फलहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहिं जलद।
   मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचि सम॥

- तुलसीदास

यहाँ क्रमांक 1 और 2 दोहा के उदाहरण हैं और 3 सोरठा का उदाहरण है।

आइए जानें -

छन्द रचना की जानकारी देने वाले शास्त्र को पिंगल कहते हैं।

निश्चित गति और यति के क्रम से जो काव्य रचना होती है, उसे छन्द कहते हैं। 'गति' = प्रवाह, 'यति' = विराम

छंद के प्रकार -

छंद दो प्रकार के हैं - मात्रिक और वर्णिक।

मात्रिक छंद - इनकी रचना मात्राओं की गिनती के आधार पर होती है। उपर्युक्त उदाहरण में दो मात्रिक छंद हैं - दोहा और सोरठा।

दोहा छंद - यह मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों (पहले और तीसरे) में 13-13 मात्राएँ तथा सम चरणों (दूसरा और चौथा) में 11-11 मात्राएँ होती हैं। उदाहरण -

। ऽ	ऽ ।	ऽ	ऽ । ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ।
हरी	डारि	ना	तोड़िए,	लागै	छूरा	बान।

पहला चरण -13 मात्राएँ   दूसरा चरण - 11 मात्राएँ

ऽ।   ।ऽऽ   ऽ   ।ऽ   ।।ऽ   ऽ   ऽ   ऽ।

दास मलूका यों कहै, अपना सा जी जान॥

तीसरा चरण -13 मात्राएँ   चौथा चरण-11 मात्राएँ

सोरठा छंद -यह मात्रिक छंद, दोहा का उल्टा है। इसके विषम चरणों में 11-11 मात्राएँ तथा सम चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण

ऽ।।   ।।।   ।   ऽ।   ।।।   ।ऽ   ।।।।   ।।।

फूलहिं फलहिं न बेंत, जदपि सुधा बरषहिं जलद ।

(पहला चरण 11 मात्राएँ)   (दूसरा चरण 13 मात्राएँ)

ऽ।।   ।।।   ।   ऽ।   ऽ।।   ।।।   ।ऽ।   ।।

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचि सम ॥

(तीसरा चरण 11 मात्राएँ)   (चौथा चरण 13 मात्राएँ)

छंद के अंग

चरण, यति, गति, मात्रा, तुक, गण छंद के अंग हैं ।

चरण- छंद पंक्तियों में बँटा रहता है और पंक्ति चरण में अर्थात् छंद की पंक्ति के एक भाग को चरण कहते हैं। उदाहरण -

'हरी डारि ना तोड़िए,' तथा लागै छूरा बान दो चरण हैं।

यति - छंद में जहाँ अल्प समय के लिए रुकना पड़े, वह यति कहलाती है।

गति - छंद के प्रवाह को गति कहते हैं।

तुक - छंद के चरणों के अंत में समान वर्ण आने को तुक कहते हैं।

तुकान्त- जब चरणान्त में समान वर्ण आएँ तब तुकान्त स्थिति होती है।

अतुकान्त - छंद के अन्त में असमान वर्ण आते हैं तब अतुकान्त स्थिति होती है।

मात्रा- किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे मात्रा कहते हैं।

मात्राएँ दो प्रकार की होती हैं-

1. ह्रस्व 2. दीर्घ

ह्रस्व मात्रा (लघु) : इसके उच्चारण में कम समय लगता है। ह्रस्व स्वर की एक मात्रा गिनी जाती है। इसका चिह्न ' ।' है।

अ, इ, उ, ऋ स्वर की मात्रा ह्रस्व है।

दीर्घ मात्रा (गुरु) - ह्रस्व स्वर से दीर्घ मात्रा के उच्चारण में दुगना समय लगता है। इसकी दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। इसका चिह्न 'ऽ' है।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ - स्वर की मात्राएँ दीर्घ होती हैं।

4. निम्नलिखित छंदों में प्रयुक्त मात्राएँ गिनकर लक्षण के अनुसार छंद का नाम लिखिए-

क. वृक्ष कबहु नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर॥

ख. कुन्द इन्दु सम देह, उमा रमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन ॥

ग. जेहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करि वर वदन ।
करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥

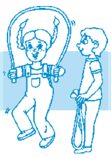

योग्यता विस्तार

1. पाठ के आधार पर कक्षा में खग, मृग, ब्याध, पाषान, विटप शब्दों के माध्यम से की गई बात पर चर्चा कीजिए।
2. बाल सभा में विभिन्न संत कवियों द्वारा रचित पदों को हाव भाव के साथ सुनाइए।
3. प्रस्तुत पदों में से ब्रज भाषा के शब्द छाँटकर उनकी तालिका बनाइए और उसके सामने मानक हिन्दी के शब्द लिखिए।
4. बाल-सभा के अवसर पर अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में दोहा, सोरठा, चौपाई और पदों के अंश सुनाइए तथा छंद में निहित मात्राओं का अभ्यास कर आपस में जाँच कीजिए।

श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।

पाठ-7

भेड़ाघाट

आइए, सीखें : ● प्राकृतिक सौन्दर्य से परिचय ● मध्यप्रदेश के दर्शनीय स्थलों का ज्ञान ● शब्द ● वाक्य निर्माण ● शुद्ध वर्तनी।

*(**पाठ-परिचय :** इस यात्रा वृत्तान्त में लेखक ने प्रकृति का बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। लेखक ने नर्मदा के तट पर बसे भेड़ाघाट तथा आसपास के धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।)*

'प्रकृति यहाँ एकान्त बैठि, निज रूप सँवारति'

शायद 1914 की बात है, जब पहले - पहल भेड़ाघाट देखने का अवसर मिला। 1906 में जबलपुर में रहने तक ग्वारीघाट और तिलवाड़ाघाट तो देख लिए थे, किन्तु बहुत कीर्ति सुनकर भी भेड़ाघाट नहीं पहुँच सका था। कहते हैं, एक दिन संस्कृत के एक दिग्गज लेखक, जो सम्राट विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक बताए जाते हैं, नीबू के एक झाड़ के नीचे बैठे अपना संस्कृत कोश लिख रहे थे और सुना यह गया कि अपने शब्दकोश में लता और वृक्षों का वर्णन करते हुए वे नीबू का वर्णन करना ही भूल गए। यही स्थिति मेरी हुई थी।

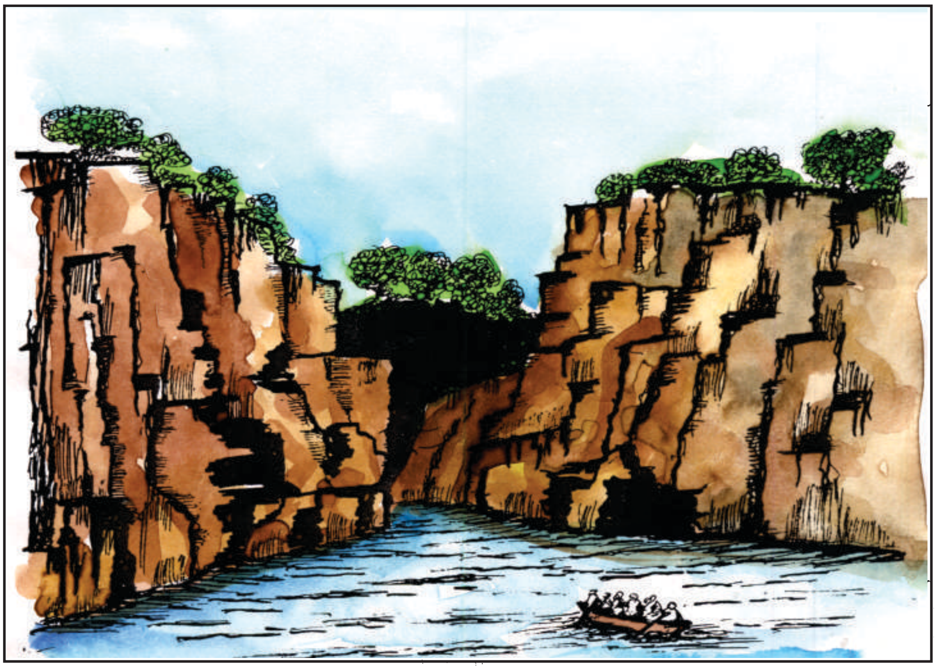

भेड़ाघाट जबलपुर से 13 मील ही तो है।

शिक्षण-संकेत - ■ पाठ का शुद्ध उच्चारण, उचित विराम-चिह्नों के साथ करें।■मध्यप्रदेश की प्रमुख नदियों तथा उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं व्यावसायिक महत्व की जानकारी बच्चों को दें। ■ पाठ में आए भावों एवं कठिन शब्दों को समझाएँ। ■ कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण बच्चों से करवाएँ।

लगभग आधे घण्टे में हम मीरगंज स्टेशन पर आ गए और उतर गए। उन दिनों यही गति बहुत तेज समझी जाती थी।

हम लोग आधे घण्टे में दस - ग्यारह मील पहुँच गए थे। दो - तीन अँग्रेज अपने खानसामे के साथ भेड़ाघाट ही जाने के लिए मीरगंज स्टेशन पर उतरे थे, किन्तु जिस तरह कच्ची सड़क से राह चलने वाले को कभी - कभी आकाश का शुक्रतारा भी अपना साथी मालूम होता है, वैसे ही वे लोग मेरे साथी थे। शरीर से तो हम एक-दूसरे से कुछ ही गज की दूरी पर चले रहे थे, किन्तु धारणा में हम एक-दूसरे से सैकड़ों मील दूर थे।

उन दिनों मैंने यह तो सुन रखा था कि भेड़ाघाट में नर्मदा के दोनों किनारे संगमरमर के हैं, किन्तु मैं सौन्दर्य-बोध के कारण ही वहाँ जा रहा था, यह कहना अत्यंत कठिन है। जिस तरह वैद्य या डॉक्टर के नुस्खे कई वस्तुओं का मिश्रण ही है, उसी तरह मेरे मन में भेड़ाघाट के दर्शन की लालसा में कई भावनाओं का मिश्रण था। यों नर्मदा से मेरी ममता होना स्वाभाविक है, क्योंकि मैं पढ़ा तो उसके किनारे, बड़ा हुआ तो उसके किनारे और उसके संघर्षमयी होने का तो मैं इतना कायल हूँ कि अन्य वे नदियाँ मुझे पसंद नहीं आतीं, जिनके किनारे संन्यासी के सिर की तरह घुटे हुए होते हैं, जिनकी धार में 'घर-घर' शब्द होता, जिनकी रेती बहुत बारीक और मुलायम होती है। घुटे हुए किनारे की नदियों के पास जब-जब जाने को मिला, लगा यह भी एक सज़ा है, जिसे तो सिर्फ भोग ही लेना है। वायुमण्डल खुला है-पुण्यस्थल है, स्नानार्थी आते, जाते रहते हैं, श्लोक का पाठ होता है। बड़े-बड़े स्टेशन हैं, बहुत रेलें आती हैं, यह सब ठीक है, किन्तु किनारे जो रुके हुए हैं। कहते हैं, बैल को अपने खूँटे पर ही अच्छा लगता है, सो मुझे तो बीहड़, नर्मदा, उसके प्रपात और उसका घर्षण ही प्यारा लगता है।

मैं तो आपसे भेड़ाघाट की बात करना चाहता था न! हाँ, अब भेड़ाघाट की ही बात करें, यों तो नर्मदा अमरकंटक से निकली और मैं ग्वारीघाट तथा तिलवाड़ा देख चुका था। ये दोनों जबलपुर से बहुत निकट पड़ते हैं, किन्तु भेड़ाघाट नहीं देखा था। कहते हैं, 800 मील बहने वाली नर्मदा अमरकण्टक से एक सौ चौवन मील ही चल पायी थी कि भेड़ाघाट आ गया। मुर्की से नर्मदा चली और लोकेश्वर की ओर बही। यहीं, बीचों-बीच भेड़ाघाट है। कहते हैं, यहाँ किसी युग में भृगु ऋषि तपस्या करते थे। चट्टानों के निर्मल और सुन्दर स्वरूप को देखकर ऐसा लगता है मानों आज भी वे तपस्या कर रहे हैं। नदी के पानी में खड़ी विशाल चट्टानें छोटे तृणों को लिए सर्दी, गर्मी और बरसात को सह रही हैं। काटने से कट भले ही जाए किन्तु झुकना नहीं जानतीं। अपना क्रम नहीं रुकने देतीं, अपनी उज्ज्वलता मन्द नहीं होने देतीं। चाँद आता है तो चाँदी जैसी चमक उठती हैं। सूरज आता है तो उस जैसी तप उठती हैं। हाँ, जब बरसात आती है अथवा जब घना अन्धकार आता है, तब भी वे अपनी उज्ज्वलता, अपनी पवित्रता खोने को तैयार नहीं हैं। इन सबको तपस्या न कहा जाए, तो क्या कहा जाए?

नर्मदा मानो यहाँ चाँदी के कारागार की बन्दिनी है। यहाँ से मील भर ऊपर बहती हुई नर्मदा, धुँआधार प्रपात बनाती हुई नीचे गिरी थी, तब उसने, उसकी मछलियों और मगरमच्छों ने यह सोचा ही न होगा कि इसके उस मधुर और सुन्दर पतन के पश्चात् ही संगमरमर की दो विशाल भुजाएँ उसे गोद में लेकर खड़ी हो जाएँगी और जो दुलार उसने अपने जन्मदाता अमरकण्टक से न पाया होगा और जो सुन्दरता से भरा प्यार भूमि पर नीचे - नीचे सरकते उसे प्राप्त न हुआ होगा, वह स्नेह, वह दुलार उसे सतपुड़ा की संगमरमर की चट्टानें देने वाली हैं। उस समय ऊपर नीला आसमान मानों कुछ नहीं मालूम होता, सतपुड़ा के निर्मित संगमरमर के इन गौरव शिखरों पर खड़े होकर, लगता है कि विधाता को चुनौती भेज दें कि करो कोशिश और एक सा बनाकर दिखाओ भला! इस समय नदी नर्मदा का नीचे की ओर फिसलते जाना, दृढ़ के सामने तरलत्व की यह लाचारी निष्काम होकर भी कितनी शोभाधाम हो गई है। लगता है, जो जनसेवा के लिए नीचे गिरना स्वीकृत करते हैं, उन्हें शोभाधाम के ऐसे ही हाथ सँभाल लिया करते हैं। संगमरमर के ऊपर हरी घास और घासपात को जब लहराते देखा तो जी ने कहा, यह कुल-कलंक यहाँ भी आ गया, तभी चट्टान मानों बोल उठी, बड़ा छोटों को सिर पर लेकर ही बड़ा होता है। वे मेरी विशालता की शोभा हैं। नगण्य तुम हो, जो उनका मूल्य नहीं कूत पाते। तुम थोड़ी देर के लिए भेड़ाघाट देखने आए हो, इन्होंने जन्म लेते ही भेड़ाघाट देखा है और भेड़ाघाट देखते - देखते ही मिट जाएँगे।

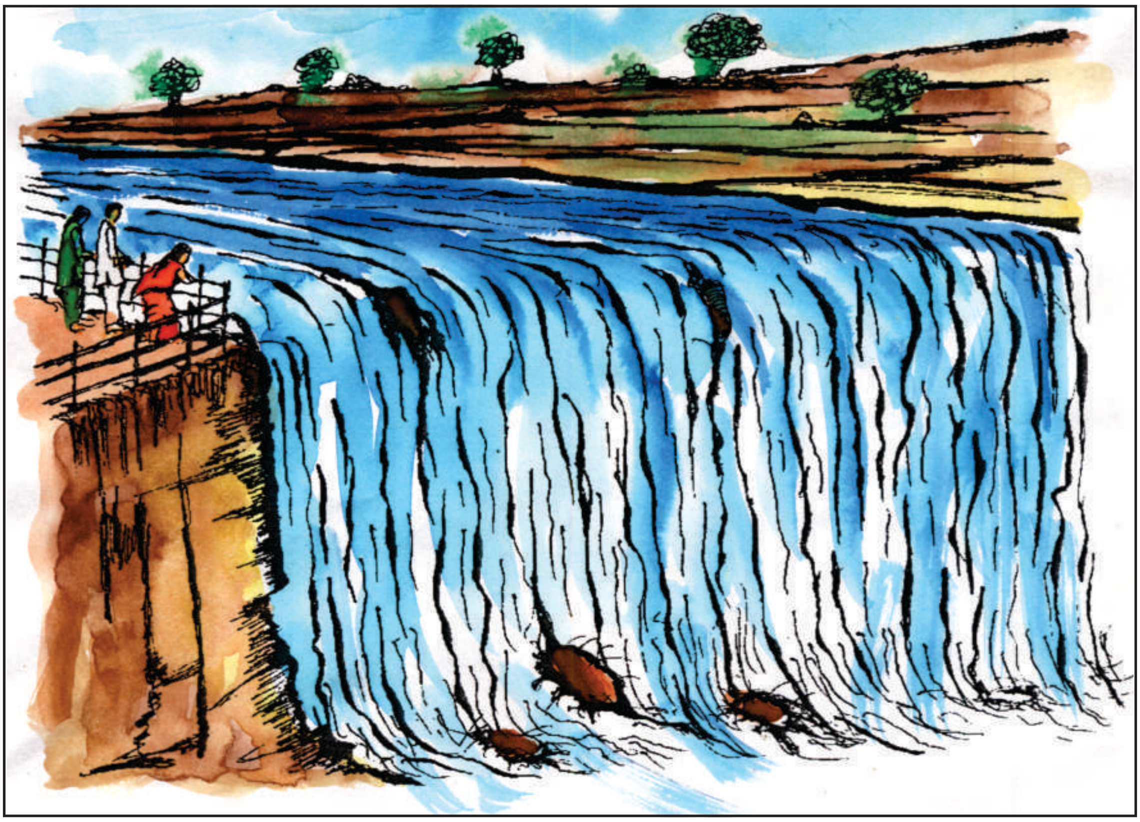

नर्मदा के उस पावन स्थान के विषय में जब मैंने वहाँ खेलते हुए ग्रामीण बच्चों से पूछा कि इसे क्या कहते हैं, तो कानों में बाले पहने हुए, टोपी लगाए हुए एक फूले गालों के बच्चे ने बताया, ''जा तो दूध– धाला आय'' दूध – धारा, अहा! कितना अच्छा नाम है। जब जोर का घर्षण होता है, तब पानी भी दूध जैसा दिखायी पड़ता है, इसलिए जब जोर का घर्षण हो तो जीवन भी दूध जैसा उजला क्यों न हो जाए।

तब न, दूध धारा के पास जो लोग स्नान करने आते हैं लगता है, श्रीधर पाठक की ये पंक्तियाँ, जो उन्होंने कश्मीर की शोभा के लिए कही है, यहाँ आकर भी ठीक बैठती हैं –

प्रकृति यहाँ एकान्त बैठि, निज रूप सँवारति,
पल – पल पलटति भेष, छलकि छन-छन छवि धारति
मानो जादूभरी, विश्व बाजीगर थैली,
खेलत में खुल परी, शैल के सिर पर फैली।

हिमालय की बर्फीली चोटियों पर नज़र डालिए, वे छल रही हैं, गल रही हैं, एक सफेदी यहाँ भी है, जो गलती नहीं है, ढलती नहीं है। नर्मदा चाहे कितनी मर-मर करे किन्तु वह मरती नहीं है। शताब्दियों ने इसे अमर ही देखा है, इसे अमर ही देखेगी।

बेचारा भूगोल उस दिन मुझसे कहने आया, ''यह मण्डला जिले में नहीं है। आप निकट से जबलपुर जिले से भले ही आए हों, किन्तु यह जबलपुर जिले में भी नहीं है। संगमरमर की गोद में यह धारा सिवनी जिले में बह रही है। किनारे पर मन्दिर भी हैं, धर्मशाला भी है, किन्तु मन तो उस कृष्णत्व के साथ खेल रहा था, जो सतपुड़ा की संगमरमरी गोद में अपनी श्यामता का गौरव बिखेर रहा था। भेड़ाघाट देखने के बाद ऐसा लगा कि यह तो गनीमत है कि मीरगंज से भेड़ाघाट तक पक्की सड़क है, किन्तु यदि कच्ची भी होती तो भी बहुत आनन्द से आते।

जब नर्मदा नीचे को बहती है, तो मन ऊपर को किसे ढूँढने जा रहा है? वह नर्मदा के सौन्दर्य के साथ बहकर भी भीग क्यों नहीं उठा? भेड़ाघाट की छोटी-सी पहाड़ी पर एक तो गौरीशंकर जी का मंन्दिर है, एक चौंसठ योगिनी का मन्दिर है। दूध –धारा के जल-प्रपात का 'घर-घर' शब्द गौरीशंकर के मन्दिर में बैठकर दिन में आप नहीं सुन सकते। इस बदनसीब प्रकाश ने मानव को दिया बहुत कम, उससे लिया बहुत अधिक है। रात हुई, माना कि पक्षी घोंसलों में सो गए, किन्तु उनसे भी ऊपर नए चमकने लगे ना! रात है, मानो सन्नाटा पहरे पर है, इस समय वायु दूध धारा का 'घर-घर' शब्द लेती है और गौरीशंकर के मन्दिर में पड़े हुए यात्री के कानों में ईमानदारी से पहुँचाती जाती है। इस जंगल में मन्दिर कैसे बन गया? नथ

बना देने वाले को देवियाँ याद रखती हैं, नाक बनाने वाले को भूल जाती हैं। मानो नाक पाना उनका अधिकार था और नथ देना किसी दूसरे का अधिकार है। सो यह पूछने की तबीयत नहीं चाहती कि संगमरमर की चट्टानों की गोद में नर्मदा की धारा कब आई? किन्तु इतिहास की कुरेदन से यह क्यों न पूछा जाए, कहो भाई, यह मन्दिर किसने बनवाया है? सुनते हैं, त्रिपुरी राजघराने के महाराज करणदेव की महारानी अल्हणा देवी ने संवत् 1155-56 विक्रमादित्य ने उसे बनवाया और गत साढ़े आठ सौ वर्षों से दूधधारा का स्वर इस मन्दिर में बराबर सुनाई दे रहा है। मूर्ति पर हमारे प्रमाणों के चिह्न हों, न हों नर्मदा के स्वरों की तह इस मूर्ति पर अवश्य जमी हुई होगी।

- पं. माखनलाल चतुर्वेदी

लेखक परिचय - पं. माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म 4 अप्रैल, 1889 ई. को 'बावई' मध्यप्रदेश में हुआ था। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर मुखर हुआ है। 'हिम किरीटनी', 'हिम तिरंगिनी', 'धरण ज्वार' आदि आपकी प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ है। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक आपकी रचना बहुत लोकप्रिय है। वह कवि ही नही पत्रकार भी थे उनके द्वारा संपादित कर्मवीर का भारत में स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

बंदिनी	-----------	नगण्य	-----------
निष्काम	-----------	नुस्खा	-----------
कृष्णत्व	-----------	कूता	-----------
घर्षण	-----------	तृण	-----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(क) भेड़ाघाट जबलपुर से कितने मील दूर है?

(ख) गौरीशंकर मंदिर किसने बनवाया था?

(ग) दूध-धारा किसे कहते हैं?

(घ) भेड़ाघाट घूमने कौन गया था?

(ङ) भेड़ाघाट पर नर्मदा के दोनों ओर की चट्टानें किस पत्थर की बनी हैं?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(क) नर्मदा नदी के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) जबलपुर में भेड़ाघाट के अतिरिक्त कौन-कौन-से घाट हैं? वे भेड़ाघाट की तरह आकर्षक क्यों नहीं लगते?

(ग) लेखक द्वारा की गई भेड़ाघाट यात्रा का वर्णन कम-से-कम 100 शब्दों में कीजिए।

प्रश्न 4 सही विकल्प चुनकर लिखिए -

1. सतपुड़ा का जंगल कहाँ स्थित है ?

   (क) उत्तरप्रदेश (ख) आंध्रप्रदेश (ग) मध्यप्रदेश (घ) बिहार

2. धुआँधार प्रपात किस नदी के जल के गिरने से बनता है?

   (क) नर्मदा (ख) गंगा (ग) यमुना (घ) ताप्ती

3. भेड़ाघाट की पहाड़ी पर कौन - सा मंदिर बना है?

   (क) गणेश (ख) महादेव (ग) गौरी - शंकर (घ) सीता - राम

4. 'पल-पल पलटति भेष, छलकि छन - छन छबि धारति' यह पक्ति किस कवि की है?

   (क) माखनलाल चतुर्वेदी (ख) श्रीधर पाठक

   (ग) शिवमंगल सिंह 'सुमन' (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रश्न 5 निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

1. "बैल को अपने खूँटे पर ही अच्छा लगता है।"
2. नर्मदा चाहे कितनी मर-मर करे, वह मरती नहीं है।
3. जो जनसेवा के लिए नीचे गिरना स्वीकृत करते है, उन्हें शोभाधाम के ऐसे ही हाथ सँभाल लिया करते हैं।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए -

डॉक्टर, ड्रॉप, कॉलेज, बॉल, बॉस, कॉल, लॉकर, ऑफिस।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लिखिए -

संन्यासी, नवरत्न, भेड़ाघाट, खूँटा, बरसात, उज्ज्वलता, नर्मदा, मुलायम, रेती, किनारा, दर्शन, ग्वारीघाट।

प्रश्न 3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुरूप दिए गए शब्दों का प्रयोग एक-एक वाक्य में कीजिए-

उदाहरण - कालिदास, विक्रमादित्य, नवरत्न

वाक्य : कालिदास विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक थे।

1. नगण्य, मूल्य, ईमानदारी
2. नर्मदा, जबलपुर, भेड़ाघाट, प्रकृति, चित्रण, मनोरम
3. रात, पक्षी, घोंसला

प्रश्न 4. शुद्ध शब्द छाँटकर सामने के खाने में लिखिए -

परवत	पर्वत	पर्बत	
नर्मदा	नरमदा	नरबदा,	
श्रेणी	शैणी,	शरैणी,	
पूरवी	पूर्वी	पूर्वि	
प्रपात	परपात	पर्पात	
पशचिम	पश्चिम	पशचिम	

ध्यान दीजिए-

	अर्थ	**वाक्य प्रयोग**
कल	अगला दिन -	मैं कल इन्दौर जाऊँगा।
	पिछला दिन -	प्रांजल कल भोपाल गया था।
	चैन -	तुम्हें कल नहीं, दिन भर भागते फिरते हो।
	मशीन -	यह कल-पुर्जे की दुकान है।

यहाँ एक ही शब्द – 'कल' के विभिन्न वाक्य प्रयोग हुए हैं, जिनसे अलग-अलग अर्थ स्पष्ट हो रहा है।

जानिए –

प्रसंग या प्रयोग के अनुसार एक शब्द के कई अर्थ निकलते हैं; अत: ऐसे कई अर्थ प्रगट करने वाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के कम-से-कम दो-दो अर्थ लिखकर, उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

आम, काल, गति, अर्थ, तात

ध्यान से पढ़िए –

जो कभी न मरे उसे अमर कहते हैं।

जिसका कभी अन्त न हो वह अनन्त कहलाता है।

जो ईश्वर में विश्वास करता है उसे आस्तिक कहते हैं।

जिसे जीता न जा सके उसे अजेय कहते हैं।

अब समझिए –

भाषा में प्रभाव लाने और अपनी बात कम शब्दों में कहने के लिए वाक्यांशों अथवा अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द कहकर अधिक-से-अधिक भाव अभिव्यक्त किए जाते हैं। यह एक शब्द सम्पूर्ण वाक्यांश को अपने में समेटे रहता है। ऐसे शब्द 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' अथवा 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' की श्रेणी में आते हैं।

6. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए, नीचे बने घड़े में लिखे शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर लिखिए –

अ. उपकार मानने वाला

आ. जो अनुकरण करने योग्य हो

इ. कम खाने वाला

ई. रोगी का इलाज करने वाला

उ. जो सब कुछ जानता हो

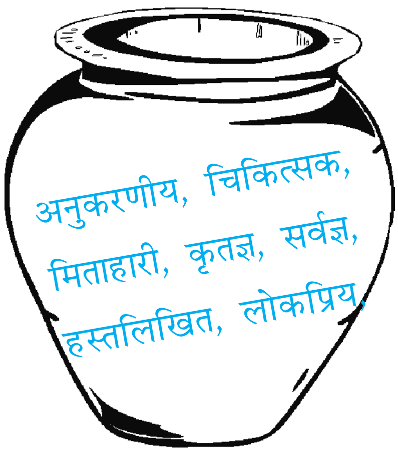

ऊ. हाथ से लिखा हुआ

ए. जो लोगों को प्रिय हो

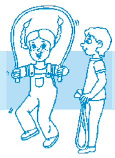

योग्यता विस्तार

1. अपने आस-पास के पहाड़, नदी, घाट आदि की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. अपने प्रदेश के अन्य जल प्रपातों की जानकारी एकत्रित करके सूची बनाइए।
3. यदि आपने कोई दर्शनीय स्थल देखा हो, तो उसकी विशेषताएँ बतलाते हुए एक निबंध लिखिए।

प्रकृति का क्षण-प्रतिक्षण बदलता स्वरूप सुन्दरता का उत्कृष्ट नमूना है।

पाठ-8

गणितज्ञ - ज्योतिषी आर्यभट

आइए सीखें : ● वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना ● आगत शब्दों के हिन्दी शब्द जानना ● विलोम शब्द ● वाक्य रचना, वाक्य की विशेषताएँ और वाक्य रचना के घटक ● प्रत्यय, उपसर्ग ● शब्द युक्त

*(**पाठ परिचय :** भारतीय संस्कृति के उन्नायक, विश्व के समक्ष गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में भारत की धाक जमाने वाले आर्यभट का नाम बहुत गौरव के साथ लिया जाता है। ये बचपन से ही मेधावी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले थे। गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में अनेक गूढ़ तथ्यों की जानकारी सप्रमाण प्रस्तुत करके विश्व-प्रसिद्ध हो गए।)*

आज से करीब डेढ़ हजार साल पहले की बात है। उस जमाने में आज के पटना शहर को पाटलिपुत्र कहते थे। यह बहुत बड़ा नगर था। नगर में बहुत से बाग-बगीचे थे। फूलों की अधिकता के कारण इस नगर को कई लोग कुसुमपुर भी कहते थे।

पाटलिपुत्र नगर नंद, मौर्य, और गुप्त सम्राटों की राजधानी रहा है। दूर-दूर तक इस नगर की कीर्ति फैली हुई थी। राजधानी होने से देशभर के प्रतिष्ठित पण्डित यहाँ एकत्र होते थे। प्रख्यात नालंदा विश्वविद्यालय भी पटना से ज्यादा दूर नहीं था। देश के ही नहीं, दूसरे देशों के विद्यार्थी भी विशेष अध्ययन के लिए नालंदा और पाटलिपुत्र आते थे। उस समय पाटलिपुत्र नगर ज्योतिष के अध्ययन के लिए मशहूर था।

इसी नगर की बात है। उस दिन सवेरे से ही नगर में काफी चहल-पहल थी। गंगा, सोन और गंडक नदियों के संगम की ओर लोगों को भीड़ उमड़ पड़ी थी। बात ही ऐसी थी। उस दिन अपराह्न में सूर्य को ग्रहण लगने वाला था, भरी दोपहरी में धरती पर अंधकार छा जाने वाला था। ब्राह्मण-पुरोहित, लोगों को बता रहे थे, ''राहु नाम का राक्षस सूर्य को निगल जाता है, तब ग्रहण लगता है। ग्रहण के समय उपवास रखो, खूब दान-पुण्य करो। तभी इस राक्षस के चंगुल से सूर्य देवता को जल्दी से जल्दी मुक्ति मिल पाएगी।''

सभी ओर आवाजें सुनाई दे रही थीं: ''दे दान तो छुटे गिरान''। लोग डरे हुए थे। नगर के धनी-मानी लोग सवेरे से ही दान - दक्षिणा देने में जुटे हुए थे।

शिक्षण संकेत - ■ पाठ का शुद्ध व स्पष्ट वाचन करें तथा बच्चों से करवाएँ। ■ भारतीय वैज्ञानिकों की जानकारी दें। ■ प्रयोग शाला के अवलोकन हेतु यदि संभव हो तो बच्चों को ले जाएँ। इसके विषय में चर्चा करें। ■ गणित के तकनीकी शब्द- अनुपात, वृत्त, व्यास, परिधि, वर्गमूल, आदि की जानकारी प्रयोग से समझाएँ जैसे बच्चों द्वारा गोला बनवाकर, वृत्त, परिधि, व्यास की जानकारी देना। ■ शैक्षिक भ्रमण हेतु बच्चों को विज्ञान केन्द्र आदि स्थलों पर ले जाएँ।

मगर पाटलिपुत्र नगर से थोड़ी दूर के एक आश्रम में कुछ दूसरा ही माहौल था। आश्रम एक टीले पर था। वहाँ भी बड़ी चहल-पहल थी। लेकिन यह चहल-पहल कुछ दूसरे प्रकार की थी। यह आश्रम भी कुछ अलग किस्म का था। टीले पर बसे उस आश्रम के लंबे-चौड़े आँगन में ताँबे, पीतल और लकड़ी के तरह-तरह के यंत्र रखे हुए थे। उनमें से कुछ यंत्र गोल थे, कुछ कटोरे जैसे कुछ वर्तुलाकार और कुछ शंकु की तरह के थे।

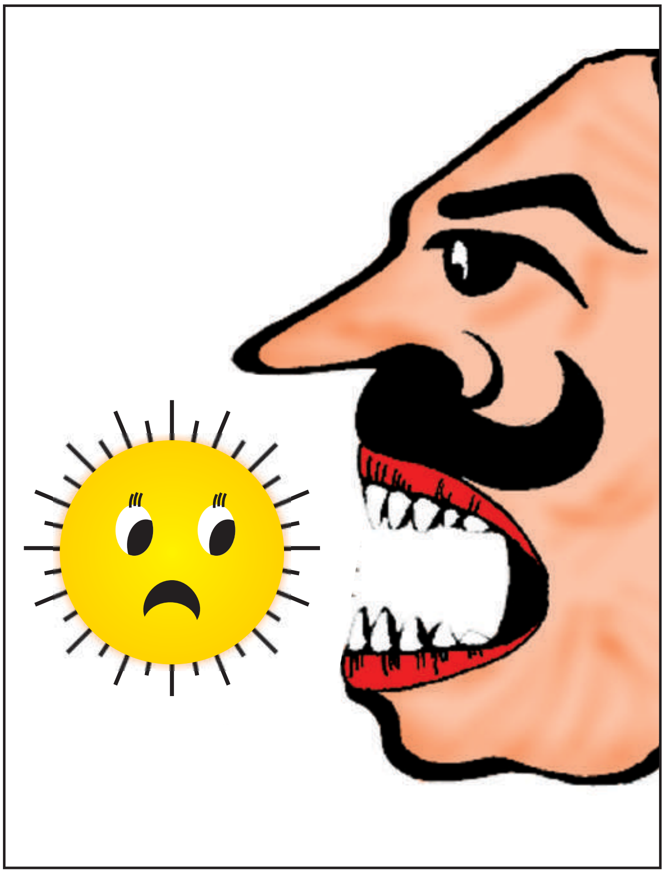

वस्तुत: यह एक वेधशाला थी। उस दिन उन यंत्रों के इर्द-गिर्द कई प्रसिद्ध ज्योतिषी और बहुत से विद्यार्थी एकत्र हुए थे। वहाँ के ज्योतिषियों ने हिसाब लगाकर पहले से ही भविष्यवाणी की थी कि ठीक किस समय ग्रहण लगेगा, कहाँ-कहाँ दिखाई देगा और कितने समय तक रहेगा। आज उन्हें देखना था कि उनका हिसाब ठीक निकलता है या नहीं। इसलिए सभी उत्सुकता से ग्रहण के क्षण का इंतजार कर रहे थे। कुछ आचार्य और विद्यार्थी चर्चा कर रहे थे कि ग्रहण क्यों लगता है। कुछ कह रहे थे - ''धर्म ग्रंथों में लिखा है, कि ग्रहण के समय राहु नाम का राक्षस सूर्य और चंद्र को निगलता है। हमें धर्म ग्रंथों की बातों पर यकीन करना चाहिए।''

मगर वहाँ एक तरुण विद्यार्थी ऐसा भी था जो अपने साथी विद्यार्थियों को समझा रहा था : ''पृथ्वी की बड़ी छाया जब चंद्र पर पड़ती है, तो चंद्र - ग्रहण होता है। इसी प्रकार, चंद्र जब पृथ्वी और सूर्य के बीच आता है और वह सूर्य को ढक लेता है, तब सूर्य ग्रहण होता है। आज भी ऐसा ही होने वाला है। कोई राहु नाम का राक्षस सूर्य को निगल जाता है। ऐसी किंवदन्ती है।''

ग्रहणों की वैज्ञानिक व्याख्या करने वाले उस तरुण पण्डित का नाम था आर्यभट। कभी - कभी लोग उसे आर्यभट्ट के नाम से पुकारते थे। मगर उसका सही नाम आर्यभट ही था। 'भट' का मतलब है योद्धा। सचमुच ही, आर्यभट परंपरागत गलत मान्यताओं के खिलाफ जीवन भर लड़ते रहे।

आर्यभट दक्षिणापथ में गोदावरी तटक्षेत्र के अश्मक जनपद में पैदा हुए थे। इसलिए बाद

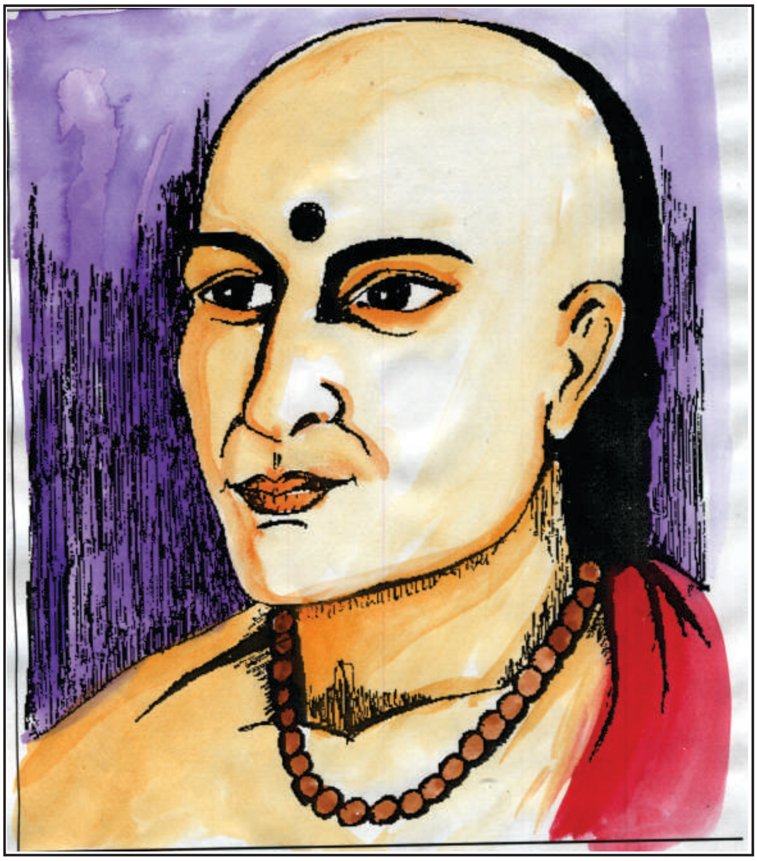

में अश्मकाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। बचपन से ही वे तेज बुद्धि के थे। गणित एवं ज्योतिष के अध्ययन में उनकी गहरी रुचि थी। इन विषयों का गहन अध्ययन करने के लिए ही वे अपने अश्मक जनपद से इतनी दूर पाटलिपुत्र पहुँचे थे।

आर्यभट आँख मूँदकर पुरानी गलत बातें मानने को तैयार नहीं थे और अपने विचार बेहिचक प्रस्तुत कर देते थे। ग्रहणों के बारे में ही नहीं, आकाश की दूसरी अनेक घटनाओं के बारे में उनके अपने स्वतंत्र विचार थे। उस जमाने के प्राय: सभी लोग, ज्योतिषी भी, यही समझते थे कि हमारी पृथ्वी आकाश में स्थिर थी। किसी ज्योतिषी के मन में इस सवाल को लेकर कोई नई बात उठी भी होगी तो भी धर्मग्रंथों के वचनों के खिलाफ आवाज उठाने का साहस उनमें नहीं था।

मगर आर्यभट में ऐसा साहस था। उन्होंने पृथ्वी की गति के बारे में अपने विचार खुलकर जाहिर किए। आर्यभट हमारे देश के पहले ज्योतिषी थे जिन्होंने साफ शब्दों में कहा कि पृथ्वी स्थिर नहीं है। यह अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है। स्थिर तो आकाश का तारामंडल है।

तो फिर आकाश के तारे हमें चक्कर लगाते क्यों दिखाई देते है? पृथ्वीं के चक्कर लगाने का पता हमें क्यों नहीं चलता?

आर्यभट का उत्तर था – समझ लो कि नदी में एक नाव है और वह धारा के साथ तेजी से आगे बढ़ रही है। तब उसमें बैठा हुआ आदमी किनारे की स्थित वस्तुओं को उलटी दिशा में जाता हुआ अनुभव करता है। उसी तरह, आकाश के तारों की बात है। पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है और इसके साथ हम भी घूमते रहते है, इसलिए आकाश का स्थिर तारामण्डल हमें पूर्व से पश्चिम की ओर जाता जान पडता है। दरअसल, तारामण्डल स्थिर है, पृथ्वी ही अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है।

ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में संसार को प्राचीन भारत की सबसे बड़ी देन है – शून्य सहित केवल दस अंक संकेतों से भी संख्याओं को व्यक्त करना। इस दाशमिक स्थानमान अंक पद्धति

की खोज आर्यभट से तीन-चार सदियों पहले हो चुकी थी। आर्यभट इस नई अंक पद्धति से परिचित थे। उन्होंने अपने ग्रंथ के आंरभ में वृंद (1000000000) यानी अरब तक की दशगुणोत्तर संख्या- संज्ञाएँ देकर लिखा है कि इनमें प्रत्येक स्थान अपने पिछले स्थान से दस गुना है।

आर्यभट के साथ हमारे देश में गणित - ज्योतिष के अध्ययन की एक नई स्वस्थ परंपरा शुरू हुई थी। मगर बाद में हमारे देशवासियों ने आर्यभट और उनके आर्यभटीय ग्रंथ को लगभग भुला दिया था। आर्यभटीय ग्रंथ पिछले करीब एक हजार वर्षों से उत्तर भारत में उपलब्ध नहीं था। महाराष्ट्र के विद्वान डॉ. भाऊ दाजी ने 1864 ई. में मलयालम लिपि में आर्यभटीय की ताड़पत्र पोथियाँ खोजीं और इनका विवरण प्रकाशित किया। उसके बाद ही विद्‌वज्जगत को आर्यभट का सही परिचय मिला। बहुत से लोगों को तो इस महान गणितज्ञ - ज्योतिषी के बारे में पहली बार उस समय जानने को मिला जब भारत के पहले कृत्रिम उपग्रह को आर्यभट नाम दिया गया और उसे 19 अप्रैल, 1975 को अंतरिक्ष में छोड़ा गया। आर्यभट - प्राचीन भारतीय विज्ञान का सबसे चमकीला सितारा।

- गुणाकर मुले

यह भी जानें- आर्यभट की पुस्तक का नाम : आर्यभटीय। पुस्तक पद्य में है। भाषा संस्कृत है। प्राचीन भारत में गणित और ज्योतिष का अध्ययन साथ-साथ होता था इसलिए इन दोनों विषयों का विवेचन प्राय: एक ही ग्रंथ में कर दिया जाता था। आर्यभटीय में भी गणित और ज्योतिष, दोनों की चर्चा है। पुस्तक के चार भाग हैं- दशगीतिका, गणित, कालक्रिया और गोल। (गुणाकर मुले 'गणितज्ञ ज्योतिषी आर्यभट के पास' के आधार पर संपादित अंश)

लेखक-परिचय : डॉ. गुणाकर मुले का जन्म महाराष्ट्र के अमरावती जिले के सिन्दी बुजरूक गाँव में सन 1955 में हुआ था। इलाहाबाद में उच्चशिक्षा प्राप्त की तथा स्वतन्त्र पत्रकारिता को अपना क्षेत्र बनाया। आपने विज्ञान में जटिल विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए।

कीर्ति	------------	प्रख्यात	------------
संगम	------------	प्रलय	------------
शंकु	------------	हेय	------------

वेधशाला	------------	पद्धति	------------
धारणा	------------	सूत्रबद्ध	------------
आसन्न	------------		

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) पटना शहर का पुराना नाम क्या है?

(ख) पटना के पास कौन - सा प्रख्यात विश्वविद्यालय था?

(ग) पटना के पास किन-किन नदियों का संगम हुआ है?

(घ) वेधशाला किसे कहते हैं?

(ङ) 'भट' शब्द का क्या आशय है?

(च) 'आर्यभटीय' पुस्तक के कौन - कौन से चार भाग हैं?

(छ) 'आर्यभटीय' की ताड़पत्र पोथियों की खोज किस विद्वान ने की थी?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

(क) पाटलिपुत्र नगर से दूर आश्रम में ज्योतिषी और विद्यार्थी क्यों एकत्रित होते थे?

(ख) 'पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है। इस कथन को आर्यभट ने किस तरह लोगों को समझाया ?

(ग) आर्यभट ने सूर्य ग्रहण और चन्द्रग्रहण के विषय में क्या विचार व्यक्त किए थे?

(घ) ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संसार को प्राचीन भारत की क्या देन है?

(ङ) आर्यभट को प्राचीन भारतीय विज्ञान का सबसे चमकीला सितारा क्यों कहा जाता है?

प्रश्न 3 वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति वाक्य के सामने कोष्ठक में दिए शब्दों से छाँटकर कीजिए।

क. पृथ्वी अपनी धुरी पर .... से .... की ओर घूमती है।

(पूर्व, उत्तर, दक्षिण, पश्चिम)

ख. ग्रहणों की वैज्ञानिक व्याख्या करने वाले तरुण पण्डित का नाम .... था।

(चरक, आर्यभट, सुश्रुत)

ग. आर्यभट की पुस्तक का नाम .... था।

(ज्योतिष शास्त्र, गणित शास्त्र, आर्यभटीय)

भाषा-अध्ययन

ध्यान से पढ़िए

भोपाल मध्यप्रदेश की राजधानी है। यहाँ हर <u>मजहब</u> के मानने वाले रहते हैं। देश के बीचों-बीच होने के नाते तथा झीलों की नगरी के रुप में यह स्थान अपने आप में <u>मशहूर</u> है। यहाँ लोक संस्कृति की झलक मिलती है। सभी लोग यहाँ प्रेम से मिल जुलकर रहते हैं। <u>शहर</u> का परिवेश सुरुचि, सभ्यता, संस्कारशीलता और आत्मीयता से <u>लबालब</u> है।

इस गद्यांश के रेखांकित शब्द को पढ़कर उनके स्थान पर हिन्दी के मानक शब्द प्रयोग कीजिए।

जैसे मजहब का हिन्दी मानक शब्द धर्म, पंथ है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित तालिका के 'अ' भाग में कुछ शब्द दिए गए हैं 'ब' तालिका में उनके विलोम शब्द मनमाने क्रम से दिए गए हैं, उन्हें सही क्रम में लिखिए -

तालिका 'अ'	स्वतंत्र	स्थिर	आकाश	निर्भय	अंधकार	अपराह्न
तालिका 'ब'	भय	परतंत्र	अस्थिर	पाताल	पूर्वाह्न	प्रकाश
सही क्रम						

ध्यान से पढ़िए -

खण्ड (अ) 1. राम, श्याम, मोहन, भोपाल

2. गया है, वह कल आज

खण्ड (ब) 1. मोहन स्कूल जाता है

2. प्रांजल अच्छा बालक है।

अब जानिए-

खण्ड (अ) में उदाहरण 1 और 2 में दिए शब्द समूह का कोई अर्थ नहीं निकलता है।

खण्ड (ब) में उदाहरण 1 और 2 में दिए शब्द समूह का अर्थ निकलता है।

अतः स्पष्ट है कि हमें अपने विचार प्रकट करने के लिए सार्थक शब्द समूह को एक क्रम के साथ रखना पड़ता है तभी उसका अर्थ स्पष्ट होता है। अर्थ प्रकट करने वाला शब्द समूह वाक्य कहलाता है। अर्थात्

''पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाला शब्द समूह वाक्य है' इस प्रकार वाक्य के दो लक्षण होते हैं -

1. शब्द की समूहता

2. पूर्ण अर्थ की प्रतीति

वाक्य रचना की विशेषताएँ -

1. **योग्यता :** वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में अर्थ प्रकट करने की योग्यता हो - जैसे - घोड़ा घास पीता है। (घास खाता है - पीता नहीं)

2. **सार्थकता -** वाक्य में निरर्थक शब्दों का प्रयोग न हो।

   जैसे - वह पेन वेन लेता है।

3. **आकांक्षा -** आकांक्षा का आशय है जानने की इच्छा। वाक्य का एक पद सुनते ही उसके विषय में जानने की इच्छा होती है जब तक कि पूरा वाक्य पूर्ण नहीं हो जाता है।

   जैसे- मोहन ने ? .... पानी नहीं पिया। अर्थात मोहन ने पानी नहीं पिया।

4. **पदक्रम -** वाक्य में शब्दों का एक विशेष पद क्रम होता है।

   जैसे- जाएगा राम कल मुंबई (सही नहीं है)। राम कल मुंबई जाएगा। (सही होगा)

5. **अन्वय -** व्याकरणिक दृष्टि से वचन, लिंग, कारक, क्रिया आदि की संबद्धता हो।

   जैसे- लड़का खाती है (सही नहीं है)। लड़की खाती है (सही है)

6. **आसक्ति -** बोलने और लिखने में वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में समीपता होनी चाहिए।

   जैसे-रोटी मैंने खायी (सही नही है)। मैंने रोटी खायी (सही है)।

वाक्य रचना के घटक (अंग)

प्रांजल स्कूल पढ़ने जाता है।

मेरा भाई मोहन बॉलीवाल खेलता है

उपर्युक्त वाक्यों में - प्रांजल तथा मेरा भाई मोहन के विषय में कुछ कहा गया है

अब जानिए

1. वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। अत: 'प्रांजल' और मेरा भाई मोहन उद्देश्य है।
2. वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते है।

इस प्रकार वाक्य के दो घटक होते हैं -

1. उद्देश्य
2. विधेय

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य ओर विधेय अलग-अलग कीजिए-

क. आर्यभट महान गणितज्ञ और ज्योतिषी थे

ख. आर्यभट दक्षिणापथ में गोदावरी तट क्षेत्र के अश्मक जनपद में पैदा हुए थे।

ग. उन्होंने अपने विचार खुलकर व्यक्त किए।

घ. आर्यभटीय भारतीय गणित ज्योतिष का पहला ग्रन्थ है।

प्रश्न3. विशेष शब्द में 'वि' उपसर्ग जुड़ा हुआ है। 'प्रख्यात' शब्द में 'प्र'' उपसर्ग जुड़ा है। इस प्रकार 'वि' और 'प्र' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए -

इसी प्रकार 'अधि' तथा 'अति' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइए -

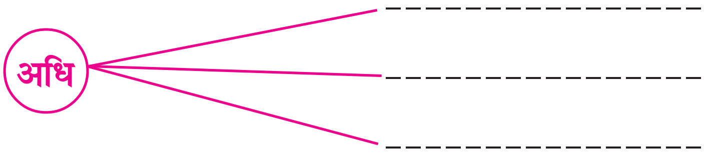

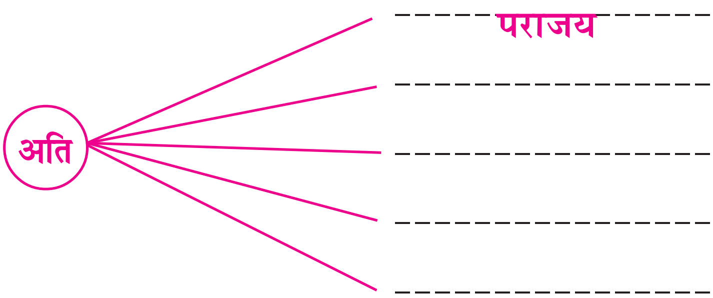

प्रश्न 4. 'वीर' में 'ता' प्रत्यय जोड़कर वीरता

'पढ़' में 'आई' प्रत्यय जोड़कर 'पढ़ाई'

'लिख' में 'आवट' प्रत्यय जोड़कर 'लिखावट'

'दूध' में 'वाला' प्रत्यय जोड़कर 'दूधवाला'

'घन' में 'त्व' प्रत्यय जोड़कर 'घनत्व' बना है

इसी प्रकार 'ता', 'आई', 'आवट', 'वाला' और 'त्व' प्रत्यय जोड़कर प्रत्येक के दो - दो शब्द बनाइए

जानिए -

युग्म का अर्थ होता है दो/जोड़। 'शब्द - युग्म' में परस्पर मिलते-जुलते या विपरीत अर्थ वाले अथवा सार्थक - निरर्थक शब्द और पुनरुक्त शब्द आते हैं- समझिए

समानार्थी शब्द युग्म -

गरमा-गरम, काम-काज, बाल-बच्चे।

विरोधार्थी शब्द युग्म

आना-जाना, सुख-दुख, लाभ-हानि

निरर्थक शब्द युग्म

पानी-वानी, चाय-वाय

पुनरुक्त शब्द

धीरे-धीरे, बूँद-बूँद, आस-पास

प्रश्न 5. इस पाठ में इस प्रकार के शब्द युग्म बहुत प्रयुक्त हुए हैं, आप उन्हें छाँटकर समानार्थी, विरोधार्थी और पुनरुक्त शब्द, अलग-अलग तालिका में लिखिए।

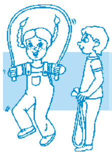

योग्यता विस्तार

1. 'आर्यभट' नामक उपग्रह भारत ने अंतरिक्ष में भेजा था। इसी प्रकार इसके अतिरिक्त भारत ने कौन-कौन से उपग्रह भेजे हैं? इनकी एक तालिका बनाइए।
2. अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए कि अंतरिक्ष में उपग्रह क्यों भेजे जाते हैं।
3. भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए और उनके नाम तथा अंतरिक्ष की तिथियों की तालिका बनाइए ।
4. किसी देखे हुए मेले का वर्णन करते हुए एक निबंध लिखिए।

लगन के बिना किसी मे भी महान प्रतिभा उत्पन्न नहीं हो सकती।

विविध प्रश्नावली - 1

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1 निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दों की सही जोड़ी बनाइए -

अमृत	निशा
विहग	वीणावादिनी
कमल	पक्षी
रात	सुधा
सरस्वती	सरोज

2. सही विकल्प चुनिए-

(1) हृदय भर आना मुहावरे का अर्थ है -

(क) प्यास बुझना (ख) दु:खी होना (ग) खुशी होना

(2) निम्नलिखित रचनाकारों में से किसका संबंध राजस्थान से है?

(क) सूर (ख) तुलसी (ग) मीरा

(3) ''श्रुति ईमानदार है और प्रतिभाशाली भी है'' यह वाक्य है -

(क) साधारण वाक्य (ख) मिश्रित वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) 'जहाज का पंछी' शब्द कवि .... की कविता में प्रयुक्त हुए हैं।

(ख) आधी ताकत खींच लेने की शक्ति का वरदान राजा .... को प्राप्त था।

(ग) छंद दो प्रकार के हैं। एक ....छंद दूसरा वर्णिक छंद।

4. निम्नलिखित शब्द उपसर्ग जुड़कर बने हैं। इन शब्दों के उपसर्ग अलग कर दी गई तालिका में लिखिए-

प्रतिक्षण, पराजय, अभिशाप, अनुगमन विज्ञान

उपसर्ग	शब्द

5. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. किस बात के मान लेने से हमारी शक्ति आधी हो जाती है ?
2. उपमा अलंकार के कौन-कौन से चार अंग होते हैं ?
3. अपराजिता महिला का नाम क्या है? 'अपराजिता' पाठ के आधार पर लिखिए।

6. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि वीणावादिनी से किस प्रकार का झरना बहाने के लिए आग्रह कर रहा है ?
2. कलुष भेद से कवि का क्या आशय है ?
3. आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए लेखक ने कौन सा सूत्र बताया है ?
4. उपसर्ग और प्रत्यय में अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

7. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर उत्तर दीजिए -**

   "नव गति नव लय ताल -छन्द नव
   नवल कंठ,नव जलद मन्द्र रव"

   उपर्युक्त पंक्तियों में कौन सा अलंकार है ?

   उपर्युक्त पंक्तियाँ किस पाठ से ली गईं हैं ?

   उपर्युक्त कविता के कवि का नाम लिखिए ।

   'ताल-छन्द' का क्या आशय है ?

2. रचना की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के हैं? नाम लिखिए।

3. मुफ्तानंद जी का चरित्र चित्रण कीजिए ।

4. तुलसीदास जी ने ''अपनपौ हारे'' क्यों कहा है? समझाइए ।

5. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़िए और मात्राएँ गिनकर बताइए कि उनमें कौन सा छंद है?

   ''तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
   वसीकरन इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।।''

6. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   नतमस्तक, आभामंडित, रंचमात्र, जिजीविषा, जिह्वाग्र, पुष्पवेषी, यातनाप्रद

7. आर्यभट नामक उपग्रह के अतिरिक्त भारत ने और कौन–कौन से उपग्रह आंतरिक्ष में भेजे?

8. यदि आपने कोई दर्शनीय स्थल देखा है, तो उसकी विशेषताएँ बतलाते हुए यात्रा–वृत्तान्त लिखिए।

9. किसी संत कवि द्वारा रचित कोई एक पद/कविता लिखिए।

विशेष :-

इसके अतिरिक्त शिक्षक छात्रों से कुछ मौखिक प्रश्न भी करें जिससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का आकलन हो सके ।

पाठ-9

बिरसा मुण्डा

आइए, सीखें : ● देश प्रेम की भावना, नेतृत्व क्षमता का विकास ● अन्याय का विरोध करने का साहस ● संधि, समास ● प्रत्यय, उपसर्ग ● शुद्ध शब्द ● पर्यायवाची शब्द

*(**पाठ परिचय :** सन् 1857 का प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम विदेशी दासता से मुक्त होने का एक महान प्रयास था। उस समय राजे-रजवाड़े ही नहीं, सामान्यजन भी अँग्रेजों के विरुद्ध कमर कसकर खड़े थे। इसका प्रभाव भारत की जनजातियों पर भी पड़ा। बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में मुण्डा जनजाति ने अँग्रेजों का सशस्त्र विरोध किया था। प्रस्तुत पाठ उन्हीं वीर, क्रांतिकारी और मार्गदर्शक बिरसा मुण्डा का जीवन-वृत्त है।)*

स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी पूरे देश में भीतर-भीतर सुलग रही थी। 1857 में वह ज्वाला बनकर प्रकट हुई। भारत की जनजातियों में भी अँग्रेजी शासन के विरुद्ध भावनाएँ उमड़ने लगीं थीं। इन भावनाओं को स्वर देने का काम बिरसा मुण्डा ने किया था। बिरसा मुण्डा का जन्म छोटा नागपुर (वर्तमान झारखण्ड राज्य) के एक गाँव चारकाड़ में हुआ था। मुण्डा भारत की एक प्रमुख जनजाति है जो राँची और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बहुसंख्या में निवास करती है। मुण्डा सरल जीवन यापन करने वाली प्रकृति पर निर्भर जनजाति है।

मुण्डा समाज के लोग 'सिंग' और 'बोंगा' की उपासना करते हैं। 'सिंग' का अर्थ सूर्य होता है और 'बोंगा' मुण्डा समाज की देवी है। अन्य जनजातियों के समान मुण्डा समाज में भी आज काफी जागृति आ गई है। विदेशी दासता की जंजीरों से मुक्त होने के लिए तत्कालीन उरांव, मुण्डा और खड़िया जनजातियों ने बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में अँग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे।

अपने बचपन में बिरसा एक सामान्य बालक ही थे। वह अपने माता-पिता के काम में हाथ बँटाते, खेती-बाड़ी का काम करते तथा पशुओं को चराते। आर्थिक तंगी के कारण बिरसा को उनके पिता ने मामा के गाँव भेज दिया। बिरसा वहाँ अधिक समय तक नहीं टिके। उन्हें बंसी बजाने का शौक था। संगीत में वे इतने तन्मय हो जाते थे कि काम की सुध-बुध ही नहीं रहती। इससे उन्हें डाँट पड़ती। इस डाँट-फटकार से तंग आकर वे अपने माता-पिता के पास लौट आए।

शिक्षण-संकेत - ■ पाठ का आदर्श वाचन करें एवं बच्चों से कराएँ। ■ भारत की और मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों के बारे में बताएँ ■ कठिन शब्दों के अर्थ एवं पर्यायवाची शब्दों से वाक्य बनवाएँ ■ सन् 1857 के प्रमुख क्रांतिकारियों के बारे में बताएँ ■ मानचित्र में झारखण्ड राज्य और छोटा नागपुर आदि का क्षेत्र दिखाएँ।

उनके पिताजी ने उन्हें साल्गा गाँव की पाठशाला में भर्ती करा दिया, जहाँ से उन्होंने प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर उन्हें चाईंबासा के लूथरन मिशन स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया। मिशनरी स्कूल में पढ़ते समय बिरसा को दासता का अनुभव हुआ। उन्होंने मुण्डा जनों के शोषण के कई पीड़ादायी दृश्यों को देखा। बिरसा ने अँग्रेजों के कारनामों पर टीका-टिप्पणी करना प्रारंभ कर दिया। स्कूल प्रबंधकों को बिरसा का यह आचरण खटकने लगा। उन्होंने बिरसा पर बहुत दबाव डाला कि वह आलोचना करना बंद कर दे, किन्तु वे सत्य पर दृढ़ बने रहे। परिणामस्वरूप उन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया। उनकी पढ़ाई छूट गई। इस समय वे युवावस्था में प्रवेश कर रहे थे। निष्कासन ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। बिरसा मुण्डा पीड़ित लोगों की सेवा में जुट गए। वे बीमार व्यक्तियों का उपचार जड़ी-बूटी की सहायता से करने लगे। बीमार लोगों की भीड़ उनके यहाँ एकत्र होने लगी। उपचार के लिए वे दूसरे गाँवों में भी जाते थे। लोगों को विश्वास था कि बिरसा को कोई सिद्धि प्राप्त है। बिरसा के कारण ओझा लोगों का काम चौपट हो रहा था।

एक गाँव में जब चेचक फैली तो ओझाओं ने गाँववासियों से कहा, ''बिरसा के कारण ही यह बीमारी फैली है, उसे गाँव में मत घुसने दो।'' गाँववासियों ने वैसा ही किया। लेकिन बीमारी और भी भयानक हो गई, तब गाँववासियों ने बिरसा से प्रार्थना की। बिरसा ने गाँव में जाकर लोगों का जड़ी-बूटियों से उपचार किया और उन्हें स्वास्थ्य के नियम भी बताए। इसके बाद तो बिरसा ने चिकित्सा करने के साथ-साथ उपदेशक के रूप में भी कार्य करना प्रारंभ कर दिया। वे अवतारी पुरुष माने जाने लगे।

बिरसा लोगों से कहते, ''मुझे भगवान सिंग, बोंगा ने प्रेरणा दी है कि मैं मुण्डाओं को फिरंगियों के अत्याचारों से मुक्त कराऊँ। अब मुण्डा लोग कम्पनी सरकार का हुक्म न मानें। पुलिस, मजिस्ट्रेट, मुंशी, जागीरदार किसी की बेगार न करें।''

बिरसा के प्रति लोगों का आदर-भाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। बिरसा के पास दूर-दूर के गाँवों से लोग आने लगे। उन दिनों जनजातियों की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय थी। इसके पूर्व वे अपनी जमीन के मालिक थे। वे फसलें उगाते थे। उनकी अपनी ग्राम-व्यवस्था

थी। पंच-पंचायतें थीं और रहन-सहन का अपना परम्परागत ढंग था। पर अँग्रेजों ने उन सबको नष्ट करके जमींदार, जागीरदार, जंगल के ठेकेदार और दलाल उन पर लाद दिए। वनवासी अपनी ही जमीन पर मालिक से नौकर हो गए। विवशता, भूख और दमन के कारण वे अपने आपको और असहाय समझने लगे।

ऐसी स्थिति में बिरसा मुण्डा ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र आंदोलन प्रारंभ किया। यह आंदोलन अन्याय और शोषण के विरुद्ध था। यह आंदोलन मानवता की रक्षा के लिए था। उन दिनों प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महान् सेनानियों में झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, नाना साहब, कुँवर सिंह आदि की वीरता की कहानियाँ लोगों के मुँह पर थीं। जनमत अँग्रेज शासकों के विरुद्ध था। मुण्डा समाज में दबी भावनाएँ अब व्यापक सामाजिक आंदोलन और राजनैतिक रूप में उभरने लगीं। गाँव इन गतिविधियों का केन्द्र था और बिरसा इन गतिविधियों के केन्द्र-बिन्दु थे। विदेशी राज का जुआ अपने कंधों से उतारने के लिए वे कृतसंकल्प थे। वे गाँव-गाँव में जाकर सभाएँ करते। एक सभा में उन्होंने कहा -

''अँग्रेज शासकों ने हमें बहुत लूटा है। हम अब और सहन नहीं करेंगे। हम शोषकों से मुकाबला करने के लिए कंधे-से-कंधा मिलाकर आगे बढ़ेंगे।'' बिरसा के विचारों से प्रेरित होकर मुण्डा व अन्य जनजातियाँ भाले और तीर-कमान लेकर चारकाड़ गाँव में एकत्र होने लगे। बिरसा की क्रांतिकारी गतिविधियों से परेशान डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें उपस्थित होने का आदेश दिया किन्तु उस आदेश को ठुकरा दिया। तब उन्हें पकड़ने का उत्तरदायित्व जिला पुलिस अधीक्षक को सौंपा गया। उन्होंने रात में ही अपने दल-बल के साथ जाकर बिरसा को घर से गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने कहा, ''मेरे न रहने पर भी मेरे द्वारा दिखाया गया रास्ता बन्द नहीं होगा।'' उन्हें ले जाकर राँची जेल में डाल दिया गया। न्यायालय ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध दंगा भड़काने का आरोप लगाकर बिरसा और उनके कुछ साथियों को दो वर्ष की कठोर सजा सुनाई। सजा पूरी हो जाने पर सरकार ने उन्हें मुक्त कर दिया। साथ ही चेतावनी दी कि वे पूर्णतः शांति से जीवन यापन करेंगे। कुछ दिनों के बाद उन्होंने फिर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध शंखनाद कर दिया जिसमें पूरा समाज उनके साथ था।

इस व्यापक सामाजिक जागरण को स्वतंत्रता-संग्राम की संज्ञा दी जाने लगी। ये खबरें इंग्लैंड तक जा पहुँची। बिरसा यहाँ-वहाँ बैठकें करते एवं लोगों को साहसपूर्वक अँग्रेज शासन का विरोध करने की बात करते। उनके साथ के लोग अँग्रेज अत्याचारियों पर बाणों की वर्षा करते। यह जंगल की लड़ाई थी। जनवरी 1900 के प्रारंभिक दिनों में अँग्रेजों के विरुद्ध मुण्डा समाज की यह लड़ाई पूरी तेजी पर थी। बिरसा के विरुद्ध वारंट निकल चुका था। लड़ाई लंबी खिंचती जा रही थी। अँग्रेजों ने पूरी ताकत लगाकर इस स्वाधीनता की लड़ाई को कुचलने की ठान ली। उन्होंने सेना बुलाकर सत्याग्रह को बर्बरता से दबाना प्रारंभ कर दिया; लोगों पर अंधाधुंध

गोलियों की बौछार होने लगी। सैकड़ों मुण्डा पकड़ लिए गए, कुछ ने आत्म-समर्पण कर दिया। इधर अँग्रेज सरकार ने बिरसा को पकड़ने के लिए एक बड़ा इनाम घोषित किया। उस इनाम के लालच में कुछ लोगों ने मिलकर सोते हुए बिरसा को जाकर पकड़ लिया। उन्हें डिप्टी कमिश्नर को सौंप दिया गया। इस प्रकार जन्मभूमि की स्वतंत्रता का बिरसा का लक्ष्य तो अधूरा रह गया, परंतु उन्होंने समाज में स्वाधीनता की चेतना की जो ज्योति जगा दी थी वह ज्योति निरंतर जलती रही।

बंदी होने से पहले बिरसा बीमार चल रहे थे। जेल में उनका स्वास्थ्य और गिरता जा रहा था। मुकदमे की सुनवाई के दिन जब उन्हें अदालत में पेश किया गया, तब वहाँ उनकी स्थिति बिगड़ गई। उन्हें खून की उल्टियाँ होने लगीं। मुण्डा समाज का यह महान उद्धारक सदा के लिए सो गया। सरकार ने उपद्रव के भय से उनका दाह-संस्कार सार्वजनिक रूप से नहीं किया।

बिरसा मुण्डा नहीं रहे। उनके कितने ही प्रियजन कारागार में चक्की पीसते रहे। उनके कितने ही साथियों को मौत की सज़ा दी गई। बिरसा मुण्डा समाज के लोक देवता बन गए। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में उनका नाम अमर रहेगा।

- लेखकगण

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

जीवन-वृत्त	--------------	उपासना	--------------
जागृति	--------------	तत्कालीन	--------------
उद्धारक	--------------	शोषण	--------------
चौपट होना	--------------	उपचार	--------------
कारागार	--------------	दासता	--------------
पथ	--------------	नाद	--------------
मुग्ध	--------------	सामान्य	--------------
प्रारंभिक	--------------	सदी	--------------
बियाबान	--------------	कथन	--------------
धूमिल	--------------	बर्बरता	--------------
पीड़ादायी	--------------		

प्रश्न 2 दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए -

क बिरसा मुण्डा का संबंध निम्नलिखित में से वर्तमान के किस राज्य से था ?

(1) झारखण्ड (2) बिहार (3) छत्तीसगढ़

ख मुण्डा समाज के आराध्य देव 'सिंग' का अर्थ है

(1) सिंह (2) सींग (3) सूर्य

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क बिरसा मुण्डा को लूथरन मिशन स्कूल क्यों छोड़ना पड़ा ?

ख बिरसा रोगियों का उपचार कैसे करते थे ?

ग मुण्डा जनजाति के लोग बिरसा को क्यों मानते थे ?

घ अँग्रेजों ने बिरसा का दाह-संस्कार सार्वजनिक रूप से क्यों नहीं किया ?

ङ बिरसा मुण्डा ने किस उद्देश्य से अपना आंदोलन प्रारंभ किया था ?

प्रश्न 4 खाली स्थान भरिए -

क .... के कारण ओझा लोगों का काम चौपट हो रहा था।

ख मुण्डा लोगों के प्रमुख अस्त्र-शस्त्र .... और .... थे।

ग पुरस्कार के .... में कुछ लोगों ने बिरसा को पकड़वा दिया।

प्रश्न 5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क प्रस्तुत पाठ से हमें आज से सौ वर्ष पूर्व के आदिवासियों के जीवन की क्या जानकारी मिलती है?

ख बिरसा मुण्डा के आंदोलन के क्या कारण थे?

ग "भारतीय इतिहास का एक सत्य यह भी है कि भारत जब भी विदेशियों से पराजित हुआ, तो देशद्रोहियों के कारण।" प्रस्तुत पाठ के संदर्भ में इस कथन की पुष्टि कीजिए।

घ बिरसा मुण्डा ने किस उद्देश्य से अपना आंदोलन प्रारंभ किया था?

ङ प्रस्तुत पाठ के आधार पर बिरसा मुण्डा के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के मानक हिन्दी शब्द लिखिए -

हुक्म, जबान, सजा, इनाम, पेश, तबीयत

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करके समास का नाम लिखिए -

जीवन-वृत्त, शैशवकाल, शंखनाद, टीका-टिप्पणी, जड़ी-बूटी, बहला-फुसला, गाँववासी।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम बतलाइए -

तत्कालीन, उद्धारक, तन्मय, सत्याग्रह, युवावस्था।

प्रश्न 4. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ 'तन्मयता' शब्द में .... प्रत्यय है।

(यता, ता, मयता)

आ 'बेबस' शब्द में .... उपसर्ग है

(बेव, बे, स)

इ 'दयनीय' शब्द में .... प्रत्यय है।

(इय, नीय, य)

ई 'राजनैतिक' शब्द में .... प्रत्यय है।

(तिक, इक, क)

5. निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दों में से जो शब्द सही पर्यायवाची नहीं हैं, उन्हें अलग करके लिखिए -

शब्द	पर्यायवाची शब्द	गलत शब्द
रास्ता	मार्ग, रथ, पगडंडी, पथ	------------
बच्चा	बाल, शिशु, काल, बालक	------------
पिता	जनक, पितृ, पितामह, तात	------------

सूर्य	रवि, शशि, भानु, दिनकर	------------
जेल	बंदीगृह, आवास, कारागार, कारागृह	------------

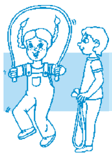

योग्यता विस्तार

1. स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानियों की सूची बनाइए जो आपके जिले के अन्तर्गत आते हों और शिक्षक की सहायता से उनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानियों से संबंधित पुस्तकें पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़िये।
3. मध्यप्रदेश में कौन-कौन सी जनजातियाँ रहती हैं? उनकी सूची बनाइए।

जिन्होंने राष्ट्र के लिए स्वयं का बलिदान किया है, उनकी कीर्ति अमर हो गई है।

पाठ-10

प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए

आइए सीखें: ● पर्यावरण रक्षा के प्रति जागरूकता ● वृक्ष रक्षा और जीवरक्षा की प्रेरणा ● संधि एवं समास का ज्ञान ● कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण ● विलोम शब्दों का ज्ञान।

*(**पाठ-परिचय :** संकलित गद्य में पर्यावरण की रक्षा का महत्व समझाया गया है। पर्यावरण की शुद्धता को बनाए रखने में पेड़ों का बड़ा महत्व है। पेड़ों को अपने जैसा ही मानने के कारण उनको बचाने के लिए अपनी जान दे देने की एक सच्ची कहानी यहाँ दी गई है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में पर्यावरण-रक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करना है।)*

इन दिनों वृक्षों की घटती संख्या और बिगड़ते पर्यावरण को देखकर समूचे विश्व में पर्यावरण की रक्षा की चिंता की जा रही है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाई जा रही है। वृक्षारोपण पर जोर दिया जा रहा है। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब चारों ओर वन-ही-वन थे, भगवान जम्भेश्वर द्वारा हरे-भरे वृक्षों की रक्षा करने की प्रेरणा देना सचमुच अद्भुत था। इन दिनों बिगड़ते प्रदूषण को देखते हुए यह प्रेरणा बहुत प्रासंगिक है।

आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व सन् 1485 में भगवान जम्भेश्वर द्वारा विश्नोई समाज की स्थापना की गई थी। उन्होंने प्रकृति से जुड़े 29 सरल नियमों की शिक्षा दी । इन 29 नियमों का पालन करने वाले विश्नोई कहलाए। इन्हीं नियमों में से वृक्षों की रक्षा और सभी जीवों पर दया करना एक मुख्य नियम था। इस नियम का पालन विश्नोइयों ने इस तरह किया, जो आज उनकी आन, बान, शान व पहचान बन गया है। विश्नोई समाज का इतिहास वृक्षों और वन्य जीवन की रक्षा की अनेक घटनाओं से भरा पड़ा है।

वृक्षों को कटने से बचाने के लिए शहीद अमृता देवी विश्नोई और 362 अन्य विश्नोइयों द्वारा अपने सिर कटवा लेने का प्रेरक प्रसंग विश्व के पर्यावरण रक्षा के इतिहास का एकमेव उदाहरण है।

भादों मास के शुक्ल पक्ष की दशमी। जोधपुर के राजा अभयसिंह को अपना महल बनवाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता पड़ी। राजा की सेना जोधपुर के पास एक गाँव खेजड़ली में पेड़ काटने पहुँची। वह विश्नोइयों का गाँव था। उन्होंने कहा, ''हम परम्परा से वनों के रक्षक हैं। हमारे रहते पेड़ नहीं कट सकते।'' उनके विरोध की अनदेखी करते हुए सैनिकों ने कुल्हाड़ी

शिक्षण संकेत : ■ पेड़ों की महत्ता छात्रों को बताएँ। ■ पाठ में आए कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण छात्रों से करवाएँ। ■ मुहावरो का अर्थ स्पष्ट करें । ■ समास की जानकारी दें।

चलाना प्रारंभ कर दिया। तब एक महिला अमृतादेवी विश्नोई पेड़ से लिपट गई और यह कहती रही– ''सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण'' (सिर कट जाए पर पेड़ बचा रहे तो भी यह सस्ता सौदा है)। राजाज्ञा का पालन करना है, इस भाव से भरी सेना ने पेड़ से लिपटी अमृतादेवी को ही काट डाला। आज्ञापालन विवेक के साथ करना है, इस बात का सैनिकों ने ध्यान नहीं रखा। इस बलिदान को देखकर सैकड़ो विश्नोई नर–नारी आगे आकर पेड़ों की रक्षा करने के लिए पेड़ों से लिपट गए। पेड़ों को कटने से बचाने के लिए सभी अपना सिर कटवाने को तैयार थे। पेड़ों की रक्षा के लिए आत्म बलिदान के लिए तत्पर विश्नोई नर–नारी ''सिर साँटे पर रूख रहे'' का नारा लगा रहे थे। सेना कुल्हाड़ी चलाती रही। एक–एक करके 362 विश्नोई नर–नारी स्वयं कट गए, परन्तु उन्होंने एक भी पेड़ नहीं कटने दिया।

जब राजा अभयसिंह को इस भीषण घटना का समाचार मिला तो वे बहुत दुखी हुए। स्वयं खेजड़ली ग्राम आए तथा अपनी सेना द्वारा किए गए नरसंहार के लिए क्षमा माँगी। ताम्रपत्र पर राजाज्ञा जारी की गई कि विश्नोई गाँवो में कोई पेड़ नहीं काटेगा। यदि काटेगा तो राजदण्ड का भागी होगा।

इसी तरह हिरणों की रक्षा में भी शिकारियों से मुकाबला करते अनेक विश्नोई शहीद हुए हैं। सन् 1996 अक्टूबर में राजस्थान के चुरू जिले में हिरणों की रक्षा करते हुए शहीद हुए श्री

निहालचन्द विश्नोई को भारत सरकार ने मरणोपरान्त शौर्यचक्र से सम्मानित किया है। स्व. निहालचंद विश्नोई एकमात्र गैर सैनिक हैं जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ है। मूक हिरण भी अपने रक्षकों को अच्छी तरह पहचानते हैं। विश्नोइयों के आगे-पीछे हिरण बकरियों की तरह घूमते हैं।

स्मरण रहे, हमें पेड़ों की जरूरत है, पेड़ों को हमारी जरूरत नहीं है। वातावरण में दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी ही होगी तथा और पेड़ लगाने होंगे। वृक्षरक्षा तथा जीवरक्षा का संकल्प एवं नया वृक्षारोपण कार्य ही वृक्षों की रक्षा में शहीद हुए विश्नोइयों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शहीद अमृता देवी एवं 362 शहीदों के बलिदान की स्मृति में भारत शासन प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पर्यावरण पुरस्कार देता है। मध्यप्रदेश का वन विभाग प्रतिवर्ष वन-संवर्द्धन एवं वन रक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली ग्राम पंचायत अथवा संस्था को शहीद अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार और एक लाख रुपया नकद प्रदान करता है। म.प्र. सरकार शहीद अमृता देवी विश्नोई के नाम पर दो व्यक्तिगत पुरस्कार भी देती है। पचास हजार रुपये नगद और प्रशस्ति-पत्र पुरस्कार के रूप में, वन संवर्द्धन और वन्य प्राणियों की रक्षा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रतिवर्ष दिए जाते हैं।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

रक्षक	--------------	शहीद	--------------
ताम्रपत्र	--------------	प्रशस्ति	--------------

श्रद्धांजलि	---------------	उत्कृष्ट	---------------
संवर्द्धन	---------------		

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए -

क. सैनिकों की कुल्हाड़ी का सबसे पहले विरोध किसने किया?

ख. अमृता देवी का नारा क्या था?

ग. विश्नोई समाज की स्थापना किसने की थी?

घ. हिरणों की रक्षा में कौन शहीद हुआ था?

ङ. राजा ने पेड़ काटने की क्या सजा घोषित की?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. जोधपुर के राजा अभयसिंह को लकड़ी की आवश्यकता क्यों पड़ी? इसके लिए उन्होंने क्या किया?

ख. अमृता देवी वृक्षों की रक्षा और किस प्रकार से कर सकती थी? सोचकर लिखिए।

ग. अमृता देवी का नारा इस पाठ में किस तरह सार्थक हुआ?

घ. राजा अभयसिंह ने पश्चाताप किस प्रकार किया?

ङ. अमृता देवी व अन्य शहीदों से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

प्रश्न 4. सही विकल्प चुनिए -

क विश्नोई समाज के नियम मुख्यतः आधारित थे-

(अ) प्रकृति के पोषण पर (आ) समाज की परम्परा पर

(इ) धर्म की मान्यता पर (ई) जीव-जन्तुओं के प्रति करुणा पर

(उ) इन सब के सम्मिलित प्रभाव वाली प्रथा पर

ख म.प्र. सरकार किसके नाम पर दो व्यक्तिगत पुरस्कार देती है ?

(अ) विश्नोई समाज (आ) अमृता देवी विश्नोई

(इ) निहालचन्द विश्नोई (ई) शहीदों

ग वृक्ष का पर्यायवाची शब्द है-

(अ) कानन (आ) तरु

(इ) गिरि (ई) चक्षु

घ अमृता देवी के साथ शहीद विश्नोइयों की संख्या थी-

(अ) 362 (आ) 365

(इ) 363 (ई) 364

ङ श्री निहालचन्द विश्नोई को भारत सरकार ने सम्मानित किया-

(अ) पद्मश्री से (आ) शौर्य चक्र से

(इ) परमवीर चक्र से (ई) वीर चक्र से

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द उनके नीचे बनी वर्ग पहेली में दिए गए हैं। आप उन्हें खोजकर लिखिए -

वाचाल, राजा, अपमानित, भक्षक, हर्ष, क्षम्य, हिंसा, हित, दुखी, विरोध

स	म्	मा	नि	त
म	अ	हि	त	शो
र्थ	हिं	र	क्ष	क
न	सा	सु	खी	रं
अ	क्ष	म्य	मू	क

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए और उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

श्रद्धांजलि, संकल्प, शौर्यचक्र, प्रासंगिक, जम्भेश्वर

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का प्रकार लिखिए -

वृक्षारोपण, एकमेव, राजाज्ञा, मरणोपरान्त, वातावरण।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए -

ताम्रपत्र, राजदण्ड, प्रतिवर्ष, ग्रामपंचायत, शौर्यचक्र

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग पहचान कर लिखिए-

गैरसैनिक, पर्यावरण, सम्मान, प्रशस्ति, प्रदूषण, संवर्द्धन।

प्रश्न 6 निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय छाँटकर लिखिए -

(क) भगवान जम्भेश्वर द्वारा हरे-भरे वृक्षों को बनाए रखने की प्रेरणा दी गई थी।

(ख) विश्नोई समाज ने वनों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

(ग) भारत शासन प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार देता है।

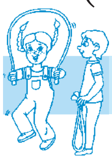

योग्यता विस्तार

1. वृक्षों से लाभ विषय पर निबंध लिखिए ।
2. वन्य प्राणी संरक्षण दिवस पर परिचर्चा कीजिए।
3. वन महोत्सव के अवसर पर अपने विद्यालय में पौधे लगाइए और उनकी देखभाल कीजिए।
4. यदि आपको लकड़ियों की आवश्यकता पड़ती तो आप क्या करते ? चर्चा कीजिए।

यह भी जानिए -

चिपको आन्दोलन

वृक्ष सदैव से मनुष्य को जीवन प्रदान करता आया है, अतः आधुनिक युग में वृक्षों की अवैध कटाई एक भीषण समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है, इस समस्या का आंशिक समाधान उत्तराखण्ड के गढ़वाल सीमा क्षेत्र में वृक्षों की अवैध कटाई को लेकर वहाँ निवास करने वाली एक सामान्य महिला गौरादेवी के आत्मविश्वास ने किया, जिससे वृक्षों की अवैध कटाई रोकी जा सकी। गौरादेवी और उसकी कुछ सहयोगी महिलाएँ वृक्षों की कटाई के समय ग्रामीण महिलाओं और बच्चों को साथ लेकर वहाँ पहुँच जाती और ये महिलाएँ और बच्चे वृक्षों के चारों और चिपक जाते अतः इस आन्दोलन का नाम 'चिपको आन्दोलन' पड़ गया। बाद में सुंदरलाल बहुगुणा के अथक प्रयास करने के बाद इस जन-आन्दोलन से हजारों वृक्षों को कटने से बचाया जा सका तथा सरकार को जन-भावनाओं के अनरूप निर्णय लेना पड़ा।

करते नित उपकार पेड़ हैं, सेवा के अवतार पेड़ हैं।
धरती के उपहार पेड़ हैं, खुशहाली के द्वार पेड़ हैं।

पाठ–11

गिरधर की कुण्डलियाँ

आइए सीखें: ● लोक व्यवहार की शिक्षा तथा प्रेरणा लेना ● चौपाई, रोला, एवं कुण्डलियाँ छंदों का परिचय ● अनुस्वार और अनुनासिक तथा ● पर्यायवाची शब्द, तुकान्त शब्द से परिचय।

पाठ परिचय– *गिरधर की इन कुण्डलियों में लोक व्यवहार की अनुभवजन्य एवं उपयोगी बातें हैं। इन्हें समझकर हम अपने जीवन को सहज और बेहतर बना सकते हैं।*

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाँउ न रहत निदान॥
ठाँउ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजै॥
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निस दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।।

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, सबद सुनै सब कोय॥
सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को रंग एक, काग सब भए अपावन॥
कह गिरधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥

शिक्षण संकेत: ■ पंक्तियों को हाव-भाव एवं लय के साथ पढ़ें ■ बच्चों से भी इसी प्रकार कविता पढ़ने को कहें। ■ अन्य कवियों – काका हाथरसी, दीनदयाल, गिरि आदि की कुण्डलियों के विषय में चर्चा करें ■ बच्चों के सहयोग से कुण्डलियों का अर्थ स्पष्ट करें एवं लोक व्यवहार में कितनी उपयोगी हैं इसकी चर्चा करें। ■ कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों के सहयोग से स्पष्ट करें ■ शब्दों के वाक्य प्रयोग कराएँ।

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही पे चित देइ॥
ताही पे चित देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै॥
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती।
आगे को सुख समुझि, होय बीती सो बीती॥

कवि परिचय : गिरधर कविराय का जन्म संवत् 1770 में हुआ। इन्होंने बहुत सी कुण्डलियाँ लिखी हैं जो बहुत लोकप्रिय हैं। इनका जन्मस्थान अवध में माना जाता है। अपने राज्य को त्यागकर वे अपनी पत्नी के साथ इधर-उधर भटकते रहे। उसी भ्रमण के समय उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने अनेक कुण्डलियाँ रचीं। कहा जाता है जिन कुण्डलियों का प्रारम्भ 'साईं' शब्द से हुआ है, वे उनकी पत्नी द्वारा रचित हैं। शेष स्वयं गिरधर ने रची। गिरधर की कुण्डलियाँ शीर्षक पुस्तक में उनकी कुण्डलियाँ संगृहीत हैं।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

(1)

दौलत	----------------	अभिमान	----------------
ठाँऊ	----------------	जस	----------------
पाहुन	----------------	जग	----------------
निदान	----------------	जियत	----------------
निस	----------------		

(2)

गाहक	----------------	बिनु	----------------
कोकिला	----------------	लहै	----------------
सहस	----------------	ठाकुर मन के	----------------

(3)

ताहि	----------------	सुधि लेइ	----------------
खता	----------------	बिसारि दे	----------------
परतीती	----------------		

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

क. हमें दूसरे व्यक्तियों से किस प्रकार के वचन बोलना चाहिए ?

ख. कोयल सबको अच्छी क्यों लगती है?

ग. धनी व्यक्ति को क्या नहीं करने को कहा है ?

घ. 'गुन के गाहक' से क्या आशय है?

ङ बीती ताहि.... कहकर कवि ने कौन-सी सलाह दी है?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

क. धन पाकर हमें अभिमान क्यों नहीं करना चाहिए?

ख. कोयल और कौए की वाणी में क्या अंतर है?

ग. बीती बातों को भूलने से क्या लाभ तथा क्या हानि है?

प्रश्न 4. 'लोक व्यवहार की बातें' इन कुण्डलियों में हैं। उदाहरण देकर समझाइए।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित भाव स्पष्ट कीजिए-

क. सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को रंग एक, काग सब भए अपावन॥

ख. बीती ताहि बिसारिदे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही पे चित देइ॥

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. 'जस' शब्द का मानकरूप 'यश' है इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए-

सपने, सहस, सबद, गुन, परतीती, जियत, गाहक।

प्रश्न 2. निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए –

"सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन" में अलंकार है–

(यमक, अनुप्रास, श्लेष)

प्रश्न 3. इस पाठ की कुण्डलियों में 'अभिमान' शब्द के समान 'निदान' तुकान्त शब्द आया है। इसी प्रकार निम्नलिखित तालिका में से तुकान्त शब्द चुनिए और सही क्रम में लिखिए–

	लीजै	तौलत	सुहावन	देइ,	पावै
	अपावन	कीजै,	दौलत	आवै	लेइ
सही क्रम					

आइए जानिए –

इस पाठ में दो प्रकार के शब्द प्रयुक्त हुए हैं –

वर्ग (1) चंचल रंग

इनमें चंचल और रंग शब्द पर (ं) चिह्न लगा है।

समझिए –

(ं) यह चिह्न अनुस्वार कहलाता है।

अनुस्वार का अर्थ है स्वर के बाद आने वाली ध्वनि।

यह नासिका व्यंजन है, इसे स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाते हैं।

अनुस्वार शब्द के मध्य या अन्त में ही आ सकता है, शब्द के प्रारंभ में नहीं।

यह जिस व्यंजन के पहले आता है उसी व्यंजन के वर्ग की (पंचमवर्ण) नासिका ध्वनि के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है।

क	वर्ग के साथ	**ङ**	जैसे–	पंक	पङ्क
च	वर्ग के साथ	**ञ**	जैसे–	पंच	पञ्च
ट	वर्ग के साथ	**ण**	जैसे–	पंडा	पण्डा
त	वर्ग के साथ	**न**	जैसे–	पंत	पन्त
प	वर्ग के साथ	**म**	जैसे–	पंप	पम्प

ध्यान दीजिए -

आज मानक रूप में पंचम वर्ण के स्थान पर (ं) अनुस्वार का चिह्न मान्य है।

(ँ) यह चिह्न चन्द्र बिन्दु कहलाता है। इसका उच्चारण अनुनासिक है, आनुनासिक स्वरों का गुण है। जब इसका उच्चारण होता है, तब हवा मुख के साथ नाक से भी निकलती है।

ठाँव, हँस शब्द पर (ँ) लगा हैं।

चन्द्रबिन्दु (ँ)लगाने के निम्नलिखित नियम है-

क. जिन स्वर मात्राओं का कोई भी हिस्सा शिरोरेखा से बाहर नहीं निकलता तो अनुनासिक के लिए (ँ) का प्रयोग करते हैं। जैसे - साँस, कुआँ, पाँव।

ख. जिन स्वरों की मात्राओं का कोई भाग शिरोरेखा के ऊपर निकल जाता है, तब चन्द्रबिन्दु के स्थान पर (ं) का ही प्रयोग होता है जैसे - चोंच, कोंपल।

प्रश्न 4. अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग वाले पाँच-पाँच शब्द लिखिए।

पहले आप छंद, छंद के अंग तथा दोहा और सोरठा के विषय में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं।

अब कुछ छंदों के विषय में और भी जानिए-

चौपाई - यह मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। तथा प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण- मंजु विलोचन मोचन वारी। बोली देखि राम महतारी॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सास-ससुर परिजनहिं पियारी॥

रोला - यह मात्रिक छंद है। इसमें चार-चार चरण होते हैं। इसमें प्रत्येक चरण में 11, 13 पर यति देकर 24 मात्राएँ होती हैं। दो चरणों के अन्त में तुक रहती है।

उदाहरण- नीलाम्बर परिधान, हरितपट पर सुन्दर है,
सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मण्डन है।
बन्दीजन खगवृन्द, शेष फन सिंहासन है।

कुण्डलिया- दोहा और रोला से मिलकर कुण्डलिया छंद बनता है। इसमें दोहा का अन्तिम चरण रोला का प्रथम चरण होता है तथा कुण्डलिया जिस शब्द से प्रारंभ होती है उसी शब्द से वह समाप्त होती है।

दोहा के विषम चरणों में 13–13 तथा सम चरणों में 11–11 मात्राएँ होती हैं तथा रोला में 11,13 पर यति देकर 24 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण– दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारिको, ठाँउ न रहत निदान।
ठाँउ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजै।
कह गिरधर कविराय, अरे, यह सब घट तौलत।
पाहुन निस दिन चारि, रहत सब ही के दौलत।

प्रश्न 5. **कुंडलिया छंद के अन्य उदाहरण छाँटकर उसकी मात्राओं की गणना कीजिए।**

प्रश्न 6. **निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द पहेली से छाँटकर लिखिए–**

दौलत, संसार, अभिमान, पाहुन

मे	ह	मा	न
लो	सं	ध	ग
क	प	न	र्व
द	दा	ज	ग
र्प	अ	ति	थि

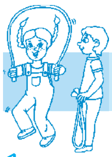

योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय की बालसभा में गिरधर की कुण्डलियों को याद करके सुनाइए।
2. गिरधर कवि के अतिरिक्त अन्य कवियों की कुण्डलियों का संकलन कीजिए, कक्षा में सुनाइए।
3. लोक व्यवहार से संबंधित रचनाएँ संकलित कीजिए तथा कक्षा में उनकी चर्चा कीजिए।
4. गिरधर की कुण्डलियाँ पढ़कर आपके मन में जो विचार उत्पन्न हुए है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
5. नैतिक सूक्तियों का संग्रह करके अपने विद्यालय की दीवारों पर लिखिए।

धन की गति तीन हैं – दान, भोग और नाश। जो न देता है, न खाता है उसकी तीसरी गति अवश्य होती है।

पाठ-12

याचक और दाता

आइए, सीखें : ● मानवीय नैतिक मूल्यों - ईमानदारी, सेवा-भाव को जीवन में उतारना। ● प्रत्यय एवम् उपसर्ग का ज्ञान। ● मुहावरों की जानकारी एवम् वाक्य-प्रयोग। ● अवतरण चिह्न का प्रयोग।

*(**पाठ-परिचय :** इस कहानी में यह बताया गया है कि ममता का भाव बिना भेद-भाव किए, निस्वार्थ भाव से सेवा करने को उत्साहित करता है। दूसरी ओर पूँजीवादी, सामंतवादी शक्तियाँ मानवीय मूल्यों का पतन कर देती हैं। कहानी में एक वृद्धा फूल आदि बेचती है और एक बच्चे का पालन-पोषण भी करती है। यह बच्चा उसका नहीं है, फिर भी उसके लिए धन-संग्रह कर एक सेठ के यहाँ जमा करती है। आवश्यकता पड़ने पर वह सेठ धन लौटाने से मुकर जाता है लेकिन जब उसे पता चलता है कि वह बच्चा उसका ही खोया हुआ पुत्र है, तब वह एकदम बदल जाता है।)*

वह प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे के पास जाकर खड़ी होती, दर्शन करने वालों को पुकारती, कहती-"ये फूल चढ़ावा तो लेते जाओ।" बोली की मिठास दर्शनार्थियों को आकर्षित करती और लोग नेत्रहीन वृद्धा से महकते फूल लेते; उसकी झोली में पैसा डालते और आगे बढ़ जाते।

सुबह से शाम तक वह उसी तरह सबका जीवन महकाती और रात्रि को मन ही मन भगवान को प्रणाम कर लाठी टेकती, झोपड़ी की राह पकड़ती। झोपड़ी के समीप आते ही दस वर्षीय बालक उछलता-कूदता उससे लिपट जाता। वृद्धा उसे टटोलती, दुलारती और माथे को चूमकर जैसे पूरा प्यार उड़ेलने का

शिक्षण संकेत : ■ कहानी को हाव-भाव के साथ बच्चों के बीच सुनाएँ।

प्रयास करती।

बच्चा कौन है? कहाँ से आया? इस बात से कोई परिचित नहीं था। कुछ वर्ष पूर्व संध्या के समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था। असहाय और रोते बच्चे को वृद्धा ने अपनी गोद में बिठाया और उसे चुप कराने का प्रयास करने लगी। ममता का आँचल पाकर बच्चा सब कुछ भूल गया था। इस तरह वह वृद्धा के पास रहने लगा। वात्सल्य की तड़प ने वृद्धा की जिजीविषा बढ़ा दी। अब वह पहले से ज्यादा श्रम करती और शीघ्र लौटने की कोशिश करती। बच्चा माँ के स्नेह को पाकर प्रसन्न था।

वृद्धा ने अपनी झोपड़ी में एक हाँड़ी गाड़ रखी थी। दिन भर की मेहनत से वह जो कमाती, उसमें से बचत करके डालती जाती। वह बच्चे के सुखद भविष्य को बुन रही थी। बच्चे को अच्छा खिलाना, पहनाना और प्रसन्न देखने में ही वह प्रसन्न रहती थी। उसे लगता जैसे उसकी मंजिल मिल गई हो। दिन भर फूल बेचती और घर आकर बच्चे को हृदय से लगा लेती। मंदिर के पुजारी की दया उस वृद्धा पर थी। वह उसे मंदिर की फुलवारी से फूल तोड़ने देता और उसकी ममता पर गर्व महसूस करता। वृद्धा भी फुलवारी को पानी से सींचकर सेवा करती।

उसी नगर में सेठ बनारसीदास रहते थे। देवभक्त और धर्मात्मा के रूप में उनकी अपनी पहचान थी। उनकी कोठी पर हर समय जरूरतमंदों की भीड़ लगी रहती । कुछ कर्ज लेने आते तो कुछ अमानत रखने। क्षेत्र के सभी मज़दूर, जो कुछ बचा पाते इन्हीं सेठ जी के यहाँ जमा कराते थे, पर वृद्धा न जाने क्यों सेठ जी के यहाँ धन जमा कराने में हिचकिचाती थी। हाँड़ी में अधिक धन हो जाने के कारण तथा चोरी हो जाने की आशंका से एक दिन संध्या को वृद्धा ने हाँड़ी उखाड़ी और छिपाकर सेठ जी की कोठी पर जा पहुँची।

सेठ जी ने बहीखाते के पृष्ठ उलटते हुए पूछा "क्या है बुढ़िया?" वृद्धा ने हाँड़ी सेठ जी की ओर सरकाते हुए, सहमे स्वर में कहा, "सेठ जी इसे जमा कर लें। मैं इसे कहाँ रखती फिरूँगी?

शिक्षण-संकेत : ■ कहानी को सुनाते समय छोटे-छोटे प्रश्न कर कहानी को आगे बढ़ाएँ ।

इसमें क्या है? सेठ जी ने हाँड़ी की ओर देखते हुए कहा । वृद्धा ने उत्तर दिया मेहनत-मजदूरी करके कुछ पैसे जमा किए हैं। चोरी न हो जाएँ इस डर से इन्हें आपके पास रखने आई। जब जरूरत होगी, तब ले जाऊँगी।

सेठजी ने मुनीम की ओर ऐनक में से देखते हुए कहा, -"इसे बहीखाते में इसके नाम से जमा कर लो।" वृद्धा चैन की साँस लेती हुई अपनी झोपड़ी में लौट आई ।

दो वर्ष सुख से बीते। एक दिन ज्वर ने लड़के को आ दबाया । वृद्धा माँ ने दवा-दारू की, वैद्य को दिखाया, पर सारे प्रयत्न जैसे व्यर्थ हो गए थे। उसका साहस टूटने लगा। वह उसे ठीक करने के उपायों पर विचार करने लगी, तभी अचानक शहर के बड़े डॉक्टर का उसे ध्यान आया। इलाज के लिए पैसे का ध्यान आते ही वह सेठ बनारसीदास के यहाँ जा पहुँची। सेठ जी आसन पर टिके बैठे थे ।

वृद्धा ने आदर प्रकट करते हुए विनम्र भाव से कहा, "मेरा बच्चा बहुत बीमार है। मेरी जमा हाँड़ी से मुझे कुछ रुपये मिल जाएँ तो मैं डॉक्टर को दिखाकर उसका इलाज करा लूँ।" "कैसी हाँड़ी ? कैसे रुपये? मेरे पास तो तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं हैं।" सेठ जी ने कठोर स्वर में, झल्लाते हुए कहा। वृद्धा ने कहा "सेठ जी अभी दो वर्ष पहले ही तो मैंने हाँड़ी में जमा-पूँजी आपके यहाँ जमा की थी।" यह कहकर मुनीम जी की ओर सहानुभूति की अपेक्षा की दृष्टि से देखने लगी।

मुनीम जी ने सेठ जी की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखने के बाद वृद्धा से कहा, "नहीं तेरे नाम तो कुछ भी जमा नहीं है। वृद्धा वहीं जमीन पर बैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी, रो-रोकर वह सेठ जी से दया करने की गुहार लगाती रही।"सेठ जी मेरा बच्चा ठीक हो जाएगा, मैं आपके जीवन भर गुण गाऊँगी।"

शिक्षण-संकेत : ■ कहानी के आधार पर पात्र चयन कर बच्चों से संबंधित संवाद बोलने का अभ्यास करवाएँ। ■ कहानी में आए मुहावरों का अर्थ बतलाते चलें तथा उनका अन्य वाक्यों में प्रयोग करवाने की गतिविधि करवाएँ।

परन्तु पत्थर में जोंक न लगी। सेठ जी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया, ''जाती है या नौकर को बुलाऊँ?''

वृद्धा लाठी टेककर खड़ी हो गई। जाते-जाते सेठ जी की ओर मुँह करते हुए उसने कहा, 'अच्छा! भगवान तुम्हें बहुत दे।'

बच्चे की हालत दिनों-दिन बिगड़ती गई। प्राणों के लाले पड़ते देख वृद्धा माँ हताश हो उठी। रह-रहकर उसे सेठ पर क्रोध आ रहा था। वह करे तो क्या करे? अचानक वह कुछ सोचकर उठी और बच्चे को गोद में उठाकर सेठ जी के घर की ओर चल पड़ी। बच्चे का शरीर ज्वर से और उसका कलेजा क्रोध से जल रहा था । बच्चे को लेकर वह सेठ जी के यहाँ पहुँची और धरना देकर बैठ गई एक नौकर आया और वृद्धा को देखकर सेठ जी को इसकी सूचना दी। सूचना पाते ही सेठ जी ने उसे वहाँ से भगा देने का आदेश दिया।

नौकर ने बहुत कोशिश की पर वह टस-से-मस न हुई। थोड़ी देर बाद सेठ जी स्वयं आए। उसे देखकर उन्हें बहुत गुस्सा आया, पर बच्चे को देखकर वे हतप्रभ रह गए। बच्चे की सूरत उनके खोए बालक मोहन से मिल रही थी।

सात वर्ष पूर्व उनका बेटा मेले में खो गया था। बालक की जाँघ पर लाल रंग का चिह्न पहचानकर सेठ जी एकाएक चिल्ला उठे, ''यह बच्चा तो अपना मोहन ही है।'' इसके साथ ही तुरन्त वृद्धा से बालक मोहन को छीनकर सेठ जी ने अपने कलेजे से लगा लिया। बालक का शरीर ज्वर से तप रहा था। हालत को गंभीर समझ सेठ जी ने तुंरत नौकर से कहा ''जाओ, तुरन्त डॉक्टर को लेकर आओ। वे बालक को लेकर अंदर चले गए।

बाहर वृद्धा चिल्ला रही थी, ''मेरे बच्चे को मुझे वापिस कर दो, वह मेरे दिल का टुकड़ा है। उसे मत छीनो।''

सेठ जी अपना अधिकार जताते हुए बोले ''यह बच्चा मेरा है। इसे कुछ नहीं होने दूँगा। इसे किसी भी कीमत पर बचाऊँगा।''

वृद्धा ने जोर-से ठहाका लगाया,'' अब यह तुम्हारा बच्चा है? इसलिए इसे प्राण देकर भी बचाओगे। दूसरे के बच्चे की जान जान नहीं होती। यह कहाँ की मानवता है ?

सेठ जी की दशा अजीब थी। वे जैसे निरुत्तर हो गए थे । उनके अंदर का अहंकार धू-धू करके जल रहा था। वृद्धा कुछ देर बाद अपनी झोपड़ी की ओर चल पड़ी।

डॉक्टर ने आकर मोहन को दवाएँ दीं। दवाओं ने अपना प्रभाव दिखाया। होश आने पर उसने आँखें खोलीं और बोला, ''माँ''। अपने आसपास माँ को न पाकर वह रोने लगा। उसकी हालत फिर बिगड़ने लगी। ज्वर बढ़ रहा था और वह माँ की रट लगाए जा रहा था। डॉक्टर परेशान थे। सेठ जी के हाथ-पाँव फूलने लगे। चारों ओर अँधेरा नज़र आ रहा था।

सहसा सेठ जी का ध्यान उस वृद्धा की ओर गया जो थोड़ी ही देर पूर्व अपने बालक की पुकार करते-करते वापिस चली गई थी। सेठ जी शीघ्र अपनी कार से झोपड़ी तक पहुँचे। बिना झिझके वे झोपड़ी के अंदर गए। वृद्धा टाट पर निस्तब्ध लेटी हुई आँसू बहा रही थी। सेठ जी पहले सहमे, कि किस मुँह से इससे बात करें? पर बालक की गंभीर दशा याद आते ही उन्होंने झुककर उसे हिलाया।

वृद्धा ज्वर से तप रही थी। सेठ जी ने प्रार्थना भरे शब्दों में कहा-''तेरा बच्चा मर रहा है। वह बार-बार माँ ही माँ पुकार रहा है। अब तू ही चलकर उसके प्राण बचा सकती है।''

आज तक सेठजी ने किसी के सामने सिर न झुकाया था, किन्तु वक्त ने वृद्धा के सामने उन्हें याचक बना दिया। सेठ जी वृद्धा के पाँवों में गिरकर बच्चे की जान बचाने की याचना करने लगे। वे बोले-''ममता की लाज रख लो।'' माँ का ममत्व जाग उठा। वह बीता हुआ सब भूल गई और सेठ जी के साथ चल पड़ी। घर पहुँचते ही वृद्धा ने मोहन के माथे पर हाथ फेरा। हाथ पहचानते ही मोहन ने तुरन्त आँखे खोल दीं। माँ तुम आ गईं। वृद्धा ने कहा , ''हाँ बेटा, तुम्हे छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ ?'' उसने मोहन का सिर अपनी गोद में रखकर थपथपाया और मोहन को नींद आ गई। कुछ दिन बाद मोहन बिल्कुल स्वस्थ हो गया। जो काम दवाइयों, डाक्टरों और हकीमों से न हो पाया, वह वृद्धा माँ की ममता ने पूरा कर दिया।

वृद्धा माँ जब वापिस लौटने लगी तो सेठ जी ने उससे मोहन के पास रुकने की बात कही, लेकिन वह न मानी। सेठ जी ने रुपयों की वह हाँड़ी क्षमा माँगते हुए उसे लौटाई तो उसने कहा, यह तो मैने मोहन के लिए इकट्ठा किए थे, उसी को दे देना। ''वृद्धा सेठ जी की धरोहर 'मोहन' को सेठ जी के यहाँ छोड़कर, लाठी टेकती हुई, झोपड़ी में लौट आई। उसके नेत्रों से आँसू बह रहे थे, पर आज इन आँसुओं में फूलों का मकरंद और ममता की गंध थी। वह आज सेठ बनारसीदास से महान हो गई थी। सेठ याचक था और वह दाता।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानी 'भिखारिन' पर आधारित

लेखक परिचय : रवीन्द्रनाथ ठाकुर – 'याचक और दाता' कहानी रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'भिखारिन' कहानी पर आधारित है। रवीन्द्रनाथ जी बंगला साहित्य के प्रख्यात साहित्यकारों में से एक हैं। आपने अनेक कहानी-संग्रह, नाटक, कविताएँ, जो बंगला साहित्य की धरोहर हैं, लिखी हैं। हमारे राष्ट्रगान के रचयिता रवीन्द्रनाथ ठाकुर ही हैं। उन्हें साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

याचक – .... शंका – ....

धरोहर – .... जिजीविषा – ....

वात्सल्य – .... निस्तब्ध – ....

हतप्रभ – .... सहानुभूति – ....

गुहार – ....

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(क) वृद्धा मंदिर के पास क्या काम करती थी ?

(ख) सेठ बनारसीदास के यहाँ किन लोगों की भीड़ लगी रहती थी ?

(ग) वृद्धा सेठ जी से क्या माँगने गई थी ?

(घ) सेठ जी ने अपने बच्चे की पहचान कैसे की ?

(ङ) बच्चा फिर से बीमार क्यों पड़ गया ?

प्रश्न 3. उपयुक्त शब्दों का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

जिजीविषा, ममत्व, निस्तब्ध, हतप्रभ, मकरंद)

(क) वृद्धा .... टाट पर लेटी हुई आँसू बहा रही थी।

(ख) असहाय बच्चे को देख माँ का .... जाग उठा।

(ग) आँसुओं में फूलों का .... और ममता की गंध थी।

(घ) सेठ जी बच्चे को देखकर .... रह गए।

(ङ) वात्सल्य की तड़प ने वृद्धा की .... बढ़ा दी थी।

प्रश्न 4. खंड 'अ' में दिए गए शब्दों का खंड 'आ' में दिए गए शब्दों से एक विशेष संबंध है। इनकी सही जोड़ी बनाते हुए खंड 'इ' में लिखिए -

(अ)	(आ)	(इ)
फूल	दाता	....
याचक	ममता	....
माँ	फुलवारी	....
मंदिर	मानवता	....
मानव	पूजा	....

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

(क) वृद्धा को उसकी मंजिल किस तरह मिल गई थी ?

(ख) मोहन कौन था? वह वृद्धा के पास कैसे आया ?

(ग) मोहन ज्वर से कैसे मुक्त हुआ ?

(घ) ''सेठ याचक था और वह दाता।'' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ङ) सेठ जी और वृद्धा के चरित्र में से किसका चरित्र आपको अच्छा लगा ? उसकी कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

भाषा-अध्ययन

> **यह भी जानिए :** किसी के द्वारा कहे गए शब्दों को जब हम ज्यों-का-त्यों प्रयोग में लाते है, तब ''..................'' चिह्न लगाते हैं। इसे अवतरण चिह्न कहते हैं, जैसे वृद्धा ने कहा ''ये फूल चढ़ावा तो लेते जाओ।''

प्रश्न 1. इस कहानी से ऐसे पाँच वाक्य लिखिए जहाँ अवतरण चिह्न का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

टस-से-मस न होना, हाथ-पाँव फूल जाना, चंगुल में दबाना, ताँता बाँधना, जान में जान आना।

प्रश्न 3. **'याचक' एवम् 'दाता' शब्दों के क्रिया रूप लिखकर संज्ञा और क्रिया रूपों के वाक्य बनाइए।**

प्रश्न 4. 'दुखिया' शब्द के दु:ख शब्द में 'इया' प्रत्यय लगा है।

दुख + इया = दुखिया

इसी प्रकार 'इया' एवम् 'वाला' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए-

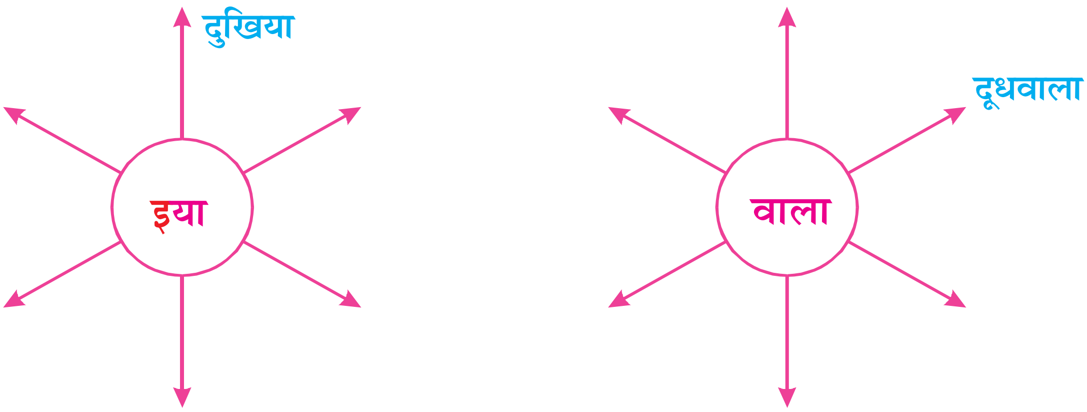

प्रश्न 5. **इसी प्रकार 'अ' और 'वि' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइये-**

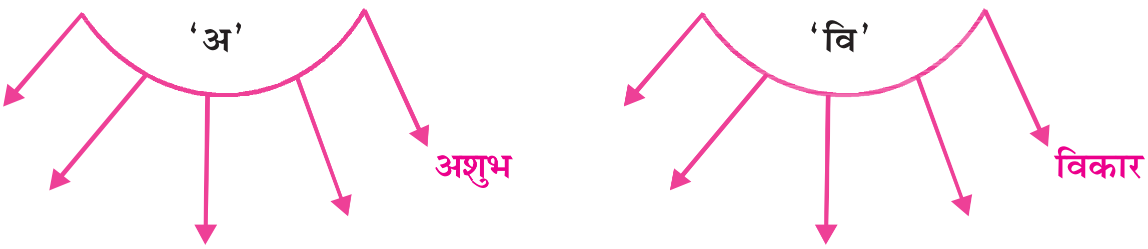

प्रश्न 6. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**

एक दिन सिद्धार्थ बगीचे में बैठे हुए थे। अचानक उनके सामने तीर से बिधा हुआ एक घायल हंस आ गिरा। सिद्धार्थ ने उसे प्यार से उठाया, घाव पर मलहम लगाया। तभी उनका चचेरा भाई देवदत्त आ पहुँचा। उसने हंस माँगा। सिद्धार्थ ने हंस देने से मना कर दिया। विवाद राजा के दरबार तक जा पहुँचा। देवदत्त का कहना था कि उसने हंस का शिकार किया है, इसलिए हंस उसका है। सिद्धार्थ ने कहा कि मैंने हंस के प्राणों की रक्षा की है, इसलिए हंस पर मेरा अधिकार है। राजा ने न्याय करते हुए कहा कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। अत: हंस पर सिद्धार्थ का अधिकार बनता है। राजा ने सिद्धार्थ को हंस दे दिया।

अ. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

आ. घायल हंस को किसने उठा लिया था ?

इ. देवदत्त हंस को क्यों माँग रहा था ?

ई. राजा ने क्या कहते हुए हंस सिद्धार्थ को सौप दिया ?

उ. राजा, दिन, तीर, प्यार के दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए।

समझिए

क. परिश्रम ही हमारी पूँजी है। ख. वह परिश्रमी व्यक्ति है।

क वाक्य में प्रयुक्त शब्द संज्ञा है और ख वाक्य में 'परिश्रमी' शब्द विशेषण है। 'परिश्रम' और 'परिश्रमी' शब्दों में अन्तर है। इसे समझकर मीठा-मिठास, विशेष-विशेषतः, बूढ़ा-बुढ़ापा में अन्तर समझिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

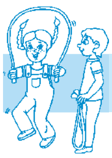

योग्यता विस्तार

1 यदि आपके दरवाजे पर कोई याचक आए, तो आप क्या करेंगे ? अपने विचार कक्षा में सुनाइए।

2 इस कहानी को पढ़कर आप क्या सोचते हैं ? संक्षिप्त में लिखिए।

3 'दानी कर्ण' जैसी दान देने वाली अन्य कहानियाँ पढ़िए और बालसभा में सुनाइए।

जिसके मन में कपट है वह कभी ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता ।

पाठ-13

न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है

आइए, सीखें : ● स्वाभिमान, शौर्य, वीरता, दृढसंकल्प, देश प्रेम की भावना का विकास ● इतिहास से प्रेरणा लेने का संदेश ● विदेशी शब्दों के स्थान पर हिन्दी शब्दों की जानकारी। ● रस परिचय ● छंद में तुकान्त/अतुकान्त की जानकारी

*(**पाठ-परिचय :** भारत ने विश्व को शांति और अहिंसा का संदेश दिया है। उसने अपने स्वाभिमान पर आँच नहीं आने दी है। देश की रक्षा के लिए वीर सपूतों ने अपने प्राणों को भी न्यौछावर कर दिया है। यहाँ के वीरों के शौर्य से आक्रमणकारी भी घबराते थे।)*

न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।
जिसे सुनकर दहलती थी कभी छाती सिंकदर की,
जिसे सुनकर कि कर से छूटती थी तेग बाबर की,
जिसे सुन शत्रु की फौजें बिखरती थीं, सिहरती थीं,
विसर्जन का शरण ले डूबती नावें उभरती थीं।
हुई नीली कि जिसकी चोट से आकाश की छाती,
न यह समझो कि अब रण बाँकुरी हुंकार सोई है।

न यह ....

कि जिसके अंश से पैदा हुए थे हर्ष और विक्रम
कि जिसके गीत गाता आ रहा संवत्सरों का क्रम

शिक्षण-संकेत : ■ कविता को हाव-भाव, सुर, ताल के साथ सुनाएँ व बालकों से दोहराने को कहें ■ ऐतिहासिक प्रसंग-सिकन्दर, बाबर, शिवाजी की वीरता, राणा प्रताप का देशप्रेम, शौर्य, जौहर की घटना आदि के विषय में चर्चा करें ■ कविता में निहित भाव स्पष्ट करें ■ भावों को स्पष्ट करने के लिए प्रेरक घटनाएँ आदि सुनाएँ ■ कविता में कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों से ही निकलवाने का प्रयास करें। (वाक्यप्रयोग, विलोम, पर्याय आदि के माध्यम से)

कि जिसके नाम पर तलवार खींची थी शिवाजी ने,
किया संग्राम अन्तिम श्वास तक राणा प्रतापी ने,
किया था नाम पर जिसके कभी चित्तौड़ ने जौहर,
न यह समझो कि धमनी में लहू की धार सोई है।

न यह ....

दिया है शान्ति का संदेश ही हमने सदा जग को,
अहिंसा का दिया उपदेश भी हमने सदा जग को,
न इसका अर्थ हम पुरुषत्व का बलिदान कर देंगे।
न इसका अर्थ हम नारीत्व का अपमान सह लेंगे।
रहे इंसान चुप कैसे कि चरणाघात सहकर जब,
उमड़ उठती धरा पर धूल, जो लाचार सोई है।

न यह ....

न सीमा का हमारे देश ने विस्तार चाहा है,
किसी के स्वर्ण पर हमने नहीं अधिकार चाहा है,
मगर यह बात कहने में न चूके हैं, न चूकेंगे।
लहू देंगे मगर इस देश की माटी नहीं देंगे।
किसी लोलुप नजर ने यदि हमारी मुक्ति को देखा,
उठेगी तब प्रलय की आग जिस पर क्षार सोई है।
न यह..........

– रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'

कवि परिचय : रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल'– वर्तमान काल के गीतकारों में रामकुमार चतुर्वेदी का गरिमापूर्ण स्थान है। चंचल जी ने जहाँ वीर और रौद्र रस से ओतप्रोत रचनाओं का लेखन किया है, वहीं श्रृंगार रस के लेखन में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। आपकी कर्मस्थली ग्वालियर रही है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोज कर लिखिए -

दहलती	---------------	सिहरती	---------------
विसर्जन	---------------	रण	---------------
संवत्सर	---------------	मुक्ति	---------------
कर	---------------	हुंकार	---------------
लहू	---------------	पुरुषत्व	---------------
नारीत्व	---------------	चरणाघात	---------------
लोलुप	---------------	क्षार	---------------
तेग	---------------	रण बाकुरी	---------------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) किस भारतीय की वीरता को सुनकर सिकन्दर की छाती दहलती थी?

(ख) नव संवत्सर किस राजा ने प्रारंभ किया था ?

(ग) शिवाजी ने किसके विरुद्ध तलवार उठाई थी ?

(घ) विश्व को शान्ति का सन्देश देने वाले किन्हीं दो महापुरुषों के नाम बतलाइए।

(ङ) सिकन्दर कौन था ?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

(क) 'तलवार सोई है' से क्या आशय है ?

(ख) हर्ष इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

(ग) यदि किसी ने हमारी स्वतंत्रता छीनने का प्रयास किया तो हम क्या करेंगे?

(घ) 'चितौड़ का जौहर' क्यों प्रसिद्ध है ?

(ङ) इस कविता से हमें क्या सन्देश मिलता है ?

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ सहित अर्थ लिखिए-

(क) लहू देंगे मगर इस देश की माटी नहीं देंगे।
किसी लोलुप नजर ने यदि हमारी मुक्ति को देखा,
उठेगी तब प्रलय की आग जिस पर क्षार सोई है,

(ख) किया संग्राम अन्तिम श्वास तक राणा प्रतापी ने,
किया था नाम पर जिसके कभी चित्तौड़ ने जौहर,
न यह समझो कि धमनी में लहू की धार सोई है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय समझाइए -

(अ) हुई नीली कि जिसकी चोट से आकाश की छाती।

(आ) रहे इंसान चुप कैसे कि चरणाघात सहकर जब।

(इ) न सीमा का हमारे देश ने विस्तार चाहा है।

(ई) न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।

भाषा-अध्ययन

पढ़िए और जानिए-	
आगत शब्द (विदेशी शब्द)	**हिन्दी शब्द**
ख्याल	विचार
ताज्जुब	आश्चर्य
दखल	हस्तक्षेप

प्रश्न 1. इस कविता से पाँच ऐसे ही आगत शब्द छाँटकर उनके हिन्दी शब्द लिखिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वर्ग पहेली से - आकाश, रण और लहू के दो-दो पर्यायवाची शब्द खोजकर लिखिए-

न	यु		रु
सं	भ	द्ध	धि
र	ग्रा	व्यो	र
क्त		म	य

प्रश्न 3. सुनील गोविन्द का मित्र है किन्तु अरविन्द का शत्रु है। इस वाक्य में मित्र और उसके विलोम शब्द शत्रु का प्रयोग हुआ है। आप इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के वाक्य प्रयोग, उनके विलोम शब्दों के साथ लिखिए-

अहिंसा, अर्थ, शान्ति, आग

प्रश्न 4. 'नारी' में 'त्व' प्रत्यय जो़डकर नारीत्व तथा पुरुष में 'त्व' प्रत्यय जोड़कर पुरुषत्व बना है। उसी प्रकार 'त्व' प्रत्यय जोड़कर तीन और शब्द बनाइए-

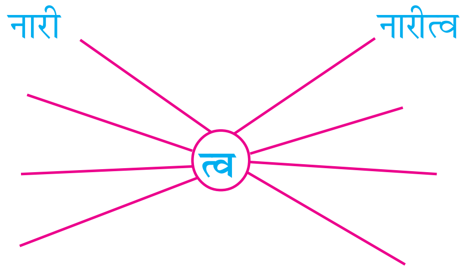

पढ़िए और समझिए

द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा।

यहाँ चरण के अन्त में एक जगह अभिरामा दूसरे चरण के अन्त में - सुदामा जैसे समान अन्तिम ध्वनि वाले शब्द आए हैं।

छन्द में ऐसी स्थिति को तुक कहते हैं। तुक छंद के प्राण हैं।

एक बात और है-

छन्द के चरणान्त में समान ध्वनि वाले वर्ण आने पर तुकान्त और असमान ध्वनि वाले वर्ण आने पर अतुकान्त स्थिति कहलाती है।

प्रश्न 5. इस पाठ में तुकान्त स्थिति समझकर - तुक मिलाने वाले शब्द छाँटकर लिखिए।

यह भी जानिए

पिछली कक्षा में आप पढ़ चुके हैं

मैया, मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसौं कहत मोल को लीन्हो, तोहि जसुमति कब जायो।

माता और पुत्र के बीच हो रहे इस वार्तालाप में कौन-सा भाव है ?

जहाँ पुत्र/पुत्री के प्रति स्नेह का भाव हो, उस वर्णन में वात्सल्य रस होता है।

रस- किसी कविता को पढ़ते या सुनते समय प्राप्त आनन्द की अनुभूति को रस कहते हैं।

साहित्य में दस रस हैं। इन सभी रसों के एक-एक स्थायी भाव हैं।

स्थायी भाव-

स्थायी भाव सहृदय के मन में चिरकाल से स्थित रहते हैं। ये उचित अवसर आने पर उत्पन्न हो जाते हैं।

विभिन्न रसों के उदाहरण पढ़िए और समझिए-

1. सोक विकल सब रोवहिं रानी। रूप, सील, बल तेज बखानी।। (करुण)
करहिं विलाप अनेक प्रकारा । परहि भूमितल बारहिं बारा।।

2. अब लौं नसानी, अब न नसैहों, (शान्त)
राम कृपा भव निसा सिरानी, जागे फिर न डसैहों।

3. सिर घोट मोट, पर चुटिया थी लहराती। (हास्य)
थी तोंद लटक कर घुटनों को छू जाती।
जब मटक-मटक कर चले हँसी भी भारी।
हो गए देखकर लोट-पोट नर-नारी।।

रस	स्थायी भाव
श्रृंगार रस	रति (प्रेम)
हास्य रस	हास (हँसी)
करुण	शोक
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
वीभत्स	जुगुप्सा (घृणाभाव)
अद्‌भुत	विस्मय (आश्चर्य)
शान्त	निर्वेद (शम, पश्चाताप)
वात्सल्य	वत्सल (पुत्र/पुत्री प्रेम)

प्रश्न 6.''न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है'' कविता में कौन-सा रस है? नाम लिखकर स्थायी भाव भी लिखिए ।

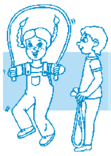

योग्यता विस्तार

1. अपनी कक्षा में हर्ष, विक्रमादित्य, शिवाजी, महाराणा प्रताप के विषय में चर्चा कीजिए।
2. भारतीय राजाओं के चित्र संग्रह करके अपनी फाइल में लगाइए और इनके संबध में संक्षेप में जानकारी लिखिए।
3. हमारे देश पर यदि कोई अन्य देश आक्रमण करे तो उस समय हम क्या करेंगे? कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. निम्नलिखित पंक्तियों को शिक्षक कक्षा में पढ़ें और इन पर बच्चों के विचार सुनें।

   वीर शिवाजी की गाथाएँ
   उसको याद जबानी थी।
   बुंदेले हरबोलों के मुँह
   हमने सुनी कहानी थी।
   खूब लड़ी मर्दानी वह तो
   झाँसी वाली रानी थी।....

5. शिक्षक की सहायता से अपनी पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं में प्रयुक्त रस को पहचानने का प्रयास कीजिए।

वीर पुरुष अपने प्राणों की परवाह किये बिना राष्ट्र की रक्षा करते हैं।

पाठ–14

नव संवत्सर

आइए, सीखें : ● भारतीय लोक-परम्पराओं, विश्वासों, पर्वों आदि का परिचय ● विक्रम संवत् एवं अन्य संवत्सरों की जानकारी ● वार्तालाप शैली से परिचय ● प्रत्यय, सन्धि, विशेषण-विशेष्य की जानकारी।

*(**पाठ-परिचय :** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नव संवत्सर प्रारंभ होता है। इस तिथि से और भी कई लोक परम्पराएँ, पौराणिक कथाएँ और विश्वास जुड़े हैं। इसे गुड़ी पड़वा भी कहते हैं। इसी दिन से भारतीय नव वर्ष का आरंभ होता है।)*

चैत्र का महीना था। प्रातः काल अखिल और समिधा अपने भाई श्रीकान्त के साथ बैठे बातचीत कर रहे थे। तभी बैठक में शेखर ने प्रवेश किया।

श्रीकान्त– "नमस्ते, शेखर! आओ बैठो।"

अखिल और समिधा–"नमस्ते शेखर भैया।"

शेखर– "नमस्ते! साथ ही नव वर्ष की बधाई।"

(अखिल, समिधा और श्रीकांत आश्चर्य से शेखर की ओर देखते हैं।)

श्रीकान्त– "शेखर, नव वर्ष बीते तो कितने दिन हो गए आज कौन सा नववर्ष है?"

शेखर– "अरे भाई, आज गुड़ी पड़वा है, यह हमारे देश में प्रचलित विक्रम संवत् का प्रथम दिन है। इसी दिन से भारतीय नव वर्ष या संवत्सर का आरंभ होता है। इसे चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भी कहते हैं।"

समिधा– "अरे! यह सब तो हमें पता ही न था।"

शेखर– "पौराणिक कथाओं के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा ने इसी तिथि को सृष्टि का सृजन किया था। भगवान विष्णु भी मत्स्यावतार के रूप में इसी तिथि को प्रकट हुए थे और सतयुग के प्रारंभ होने की भी यही तिथि है।"

अखिल– "शेखर भैया, इसे 'गुड़ी पड़वा' क्यों कहते हैं?"

शेखर– "गुड़ी का अर्थ है 'ध्वज या झण्डी' और पड़वा कहते हैं 'प्रतिपदा' को। लोक परम्परा के अनुसार माना जाता है कि इसी दिन श्री रामचंद्र जी ने किष्किंधा के राजा बाली का वधकर उसके स्वेच्छाचारी राज का अंत किया था। बाली वध के पश्चात् वहाँ की प्रजा ने पताकाएँ, जिन्हें महाराष्ट्र में गुड़ी कहते हैं, फहराकर उत्सव मनाया था।

आज वहाँ आँगन में बाँस के सहारे गुड़ी खड़ी की जाती है। इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा कहते हैं।''

श्रीकान्त ''शेखर, संवत्सर के बारे में और भी कुछ बताओ न।''

शेखर– ''सुनो संवत्सर का उपयोग समय की गणना के लिए एक वर्ष की अवधि के अर्थ में किया जाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद आदि प्राचीन ग्रंथों में भी संवत्सर का एक काल चक्र के रूप में उल्लेख है।''

श्रीकान्त ''इसका अर्थ है भारत में समय की गणना करने की विधि अति प्राचीन है।''

शेखर ''नहीं तो क्या? हमारे यहाँ दिनों महीनों की भाँति संवत्सरों का भी नामकरण किया गया है जो साठ वर्ष बाद पुनः एक चक्र के रूप में आते रहते हैं। विक्रम संवत् 2063 का नाम विकारी नाम संवत्सर है। इसके पहले के दो संवत्सरों के नाम 'हेमलम्ब नाम' और 'बिलम्ब नाम' संवत्सर थे।''

अखिल ''विक्रम संवत् क्या है?''

शेखर ''अखिल, विक्रम संवत् का प्रचलन उज्जयिनी के महान सम्राट विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रमणकारी शक राजाओं पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में ईसा पूर्व सन् 57 में किया था। समिधा, क्या तुम्हें हमारे महीनों के नाम पता है?''

समिधा ''हाँ, हाँ। जनवरी, फरवरी, मार्च....।''

शेखर ''बस, बस। जरा रुको। यह तो तुम ईसवी सन् के महीनों के नाम बता रही हो। विक्रम संवत् या भारतीय महीनों के नाम हैं, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन। अब तो नहीं भूलोगी।''

समिधा ''नहीं भैया। इनमें से कुछ नाम तो मैं भी जानती हूँ। माँ व्रतों और पर्वों के लिए इन्हें बताती थी।''

प्राचीन ग्रंथों में संवत्सर चक्र का वर्णन बारह अरे, तीन सौ सन्धियों, छह नेमियों और तीन नाभियों के रूप में किया गया है। यह बारह महीने, तीन सौ साठ तिथियों (एक चंद्र वर्ष) छः ऋतुओं (बसंत, ग्रीष्म, पावस, शरद, हेमन्त, शिशिर) और तीन चातुर्मास (ग्रीष्म, वर्षा, शीत) के प्रतीक हैं।

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक विक्रम संवत् के प्रथम दिन तथा गुड़ी पड़वा का महत्व एवं संदर्भ समझाएँ। ■ संवत्सर चक्र के चित्र को देखकर प्रत्येक बिन्दु पर चर्चा कर उन्हें समझाएँ। ■ पौराणिक कथाओं की भी कक्षा में चर्चा करें।

शेखर "इन महीनों को चंद्रमास कहते हैं। प्रत्येक माह के दो पक्ष होते हैं। अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की तिथियों को शुक्ल पक्ष और पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा से अमावस्या तक तिथियाँ कृष्ण पक्ष कहलाती हैं। ये पक्ष कभी पन्द्रह दिन के तो कभी चौदह दिन के होते हैं इसलिए चन्द्रमास भी घटता-बढ़ता रहता है।"

अखिल "शेखर भैया, प्रतिपदा की भाँति दूसरी अन्य तिथियों के भी तो नाम होंगे?"

शेखर "हाँ इनके नाम हैं, प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी। ये तिथियाँ दोनों पक्षों में होती हैं। शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं या माह की तीसवीं तिथि को अमावस्या कहते हैं।"

समिधा- "क्या विक्रम संवत् पूरे देश में प्रचलित है?"

शेखर- "हाँ, पर कुछ अंतर के साथ।"

समिधा- "कैसा अंतर?"

शेखर- "उत्तर भारत में विक्रम संवत् का आरम्भ चैत्र प्रतिपदा से होता है इसे चैत्रादि कहते हैं जबकि दक्षिण भारत में संवत्सर का आरंभ कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से माना जाता है इसे कार्तिकादि कहते हैं। व्यापारी लोग भी कार्तिकादि नववर्ष मनाते हैं, इसलिए वे दीपावली पर नया बहीखाता प्रारंभ करते हैं।"

श्रीकान्त "अरे! यह तो तुमने बड़ी रोचक बात बताई है।"

शेखर- "यही नहीं, उत्तर भारत में माह का आरम्भ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से तथा अंत पूर्णिमा से होता है, इसके विपरीत दक्षिण भारत में माह का आरंभ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से और अंत अमावस्या को होता है। इसे पूर्णिमान्त और अमान्त कहते हैं।"

समिधा- "शेखर भैया, इन तिथियों का पता हमें कैसे चलता है?"

शेखर- "समिधा, इन तिथियों का पता हमें पंचांग से चलता है। पचांग से तिथि, पक्ष, माह, चन्द्रमा और सूर्य की स्थिति के साथ-साथ अन्य नक्षत्रों की जानकारी मिलती है। आकाश में चन्द्रमा की कलाओं को देखकर भी तिथियों का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे यहाँ सौर वर्ष के साथ-साथ चाँद वर्ष का उपयोग किया गया है।"

अखिल- "सौर वर्ष और चाँद वर्ष में क्या अन्तर है?"

भारतीय महीनों के नाम इन नक्षत्रों पर आधारित हैं- चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा, मघा, पुष्य, फाल्गुन।

शेखर– "यह तो तुम्हें पता होगा कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा लगभग 365 1/4 दिन में करती है। यह अवधि एक नक्षत्र सौर वर्ष कहलाती है। जबकि चान्द्रवर्ष लगभग 354 दिनों का होता है। इसे 360 तिथियों में बाँटते हैं। सौरवर्ष और चान्द्रवर्ष में सामंजस्य बनाने के लिए प्रत्येक 32 या 33 चान्द्रमासों के बाद एक अतिरिक्त चान्द्रमास जोड़ दिया है। इस अतिरिक्त मास को अधिक मास/मल मास या लोंद का महीना कहते हैं। यह चान्द्रमास 13 महीने का होता है।"

समिधा– "तो यह बात है। तभी कुछ समय पहले दो-दो सावन के महीने हुए थे।"

शेखर– "हाँ, कभी-कभी आषाढ़ का महीना भी अतिरिक्त होता है इसीलिए एक कहावत है 'दुबले और दो आषाढ़'।"

अखिल– "यानी मुसीबत या परेशानी की अवधि का और अधिक बढ़ जाना। अच्छा, ये तो बताओ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का कोई दूसरा महत्व भी है?"

शेखर– "हाँ, चैत्र माह में बसंत ऋतु का आगमन होता है। बसंत ऋतु में प्रकृति भी अपना नव श्रृंगार करती है। पेड़ अपने पुराने पत्ते गिराकर नए पत्ते धारण करते हैं। ऋतु परिवर्तन के अवसर पर हमारे यहाँ नवरात्रि पर्व मानने की परंपरा है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होने वाली नवरात्रि वासंतीय नवरात्रि एवं पितृमोक्ष अमावस्या के

शिक्षण संकेत : ■ कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष के बारे में बताएँ। ■ उत्तर भारत और दक्षिण भारत में विक्रम संवत् का आरंभ कब होता है- बच्चों को बताएँ। ■ व्यापारी लोग भी कार्तिकादि नववर्ष मनाते हैं, इसीलिए वे दीवाली पर नया बहीखाता प्रारंभ करते हैं।

पश्चात् प्रारंभ होने वाली नवरात्रि शारदीय कहलाती है। 'वासंतीय नवरात्रि' का समापन राम नवमी और 'शारदीय नवरात्रि' का समापन दशहरा पर्व पर होता है।''

श्रीकान्त– ''रामनवमी और दशहरा दोनों पर्वों का सम्बन्ध भगवान श्री राम से है। रामनवमी उनके जन्मदिवस और दशहरा रावण पर विजय के उपलक्ष्य में मनाते हैं। यह बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।''

शेखर– ''हाँ, श्रीकान्त। नवरात्रियों का समय शक्ति की पूजा-उपासना के साथ-साथ स्वास्थ्य सम्वर्धन के लिए भी अच्छा अवसर है। गुड़ी पड़वा को चैती चाँद पर्व के रूप में भगवान झूलेलाल की जयंती भी मनाई जाती है।''

अखिल– ''भगवान झूलेलाल'' जी कौन थे?

शेखर– ''भगवान झूलेलाल का जन्म विक्रम संवत् 1007 को सिन्ध प्रान्त (जो आजकल पाकिस्तान का अंग है) में नसीरपुर नामक स्थान पर भाई रतन राय के घर में हुआ था। भगवान झूलेलाल साम्प्रदायिक सद्भाव और एकता के प्रतीक हैं। हमारे सिन्धी भाई उनकी जयंती को बड़े धूमधाम से मनाते हैं।''

श्रीकान्त– ''शेखर.... ।''

शेखर– ''अब बस भी करो भाई। मुझे यहाँ आए कितनी देर हो गई है? चलो, उठो। चलकर दूसरे मित्रों को भी गुड़ी पड़वा, नववर्ष और चैतीचाँद की बधाई दें।''

समिधा– ''हाँ, भैया। हम भी द्वार पर चौक पूर कर नव संवत्सर का स्वागत करेंगे।''

सामान्यत: सूर्य प्रत्येक चान्द्रमास में एक राशि (मेष, धनु आदि) को पार करता है, जो संक्रान्ति कहलाती है, किन्तु चन्द्रमा और सूर्य की असमान गति के कारण ऐसी स्थिति भी आती है जब किसी चन्द्रमास कोई भी राशि संक्रान्ति न हो ऐसे महीने को अधिक मास मानकर उसे, उसके अगले महीने का नाम देते हैं।

शिक्षक बच्चों को सौर वर्ष और चन्द्रवर्ष का अंतर बताएँ (सौर वर्ष लगभग 365 दिन 6 घण्टे 9 मिनिट) तथा चान्द्रवर्ष लगभग 354 दिन 8 घण्टे 48 मिनिट)

12 राशियों के नाम पंचांग या समाचार पत्र देखकर बताएँ। इन राशियों को ज्योतिष या भाग्यफल से न जोड़ें तथा राशिफल के बारे में प्रोत्साहित न करें।

शिक्षण संकेत : शिक्षक नवरात्रि पर्व, राम नवमी और दशहरा पर्व के बारे में विस्तार से बताएँ तथा इन पर्वों के मनाने के स्थानीय ढंग तथा परम्पराओं पर चर्चा करें। शिक्षक मानचित्र की सहायता से सिन्ध प्रान्त और पाकिस्तान की स्थिति बताएँ। भगवान झूलेलाल जी के बारे में अधिक जानकारी एकत्र कर बच्चों को बताएँ। विक्रम संवत् के अतिरिक्त हमारे देश में प्रचलित अन्य संवतों की भी जानकारी बच्चों को दें।

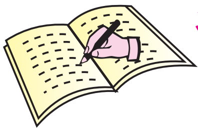

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

नवसंवत्सर	--------------	सृष्टि	--------------
मत्स्य	--------------	वध	--------------
उत्सव	--------------	चैत्रादि	--------------
कार्तिकादि	--------------	पूर्णिमान्त	--------------
अमान्त	--------------	ऋतु	--------------
श्रृंगार	--------------	संवर्धन	--------------
जयंती	--------------	आततायी	--------------
पीर	--------------		

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(क) नव संवत्सर से क्या तात्पर्य है?

(ख) गुड़ी पड़वा नाम का क्या अर्थ है?

(ग) विक्रम संवत् किसने प्रारंभ किया?

(घ) बसंत ऋतु का आगमन किस भारतीय माह में होता है?

(ङ) दक्षिण भारत में विक्रम संवत् का प्रारंभ किस भारतीय मास से होता है?

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) चैती चाँद पर्व भगवान .... की जयंती के रूप में मनाते हैं।

(ख) प्रत्येक चार वर्ष बाद अतिरिक्त माह को .... माह कहते हैं।

(ग) नवरात्रि बासंतीय .... माह में तथा नवरात्रि शारदीय .... माह में आती है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए –

(क) संवत्सरों का नामकरण किस प्रकार किया जाता है?

(ख) भगवान झूलेलाल की पूजा क्यों की जाती है?

(ग) सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष में क्या अंतर है?

(घ) सौरवर्ष और चन्द्रवर्ष के सामंजस्य के लिए क्या विधि अपनाते हैं?

(ङ) विक्रम संवत् के अनुसार वर्ष के महीनों के नाम लिखिए।

(च) विक्रम संवत् की प्रथम तिथि में कौन-कौन से प्रसंग जुड़े हैं ? लिखिए।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

चैत्र, पौराणिक, किष्किन्धा, ऋग्वेद, अथर्ववेद, पूर्णिमा, विक्रमादित्य, स्वेच्छाचारी।

ध्यान से पढ़िए -

प्रथम अकारान्त ध्वनि वाले शब्द में 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर ह्रस्व ध्वनि दीर्घ में परिवर्तित हो जाती है। जैसे-'संसार' में 'इक' प्रत्यय जुड़कर 'सांसारिक' शब्द बनता है। यदि शब्द की प्रथम ध्वनि इ/ई तो वह ऐ में परिवर्तित हो जाती है। इतिहास+इक= ऐतिहासिक

शब्द की प्रथम ध्वनि उ/ऊ हो तो 'औ' में परिवर्तित हो जाती है। जैसे पुराण+इक=पौराणिक

अब समझिए

शब्द	इक प्रत्यय	परिवर्तन	परिवर्तित शब्द
संसार	इक	अ आ	सांसारिक
इतिहास	इक	इ ऐ	ऐतिहासिक
पुराण	इक	उ औ	पौराणिक
भूगोल	इक	ऊ औ	भौगोलिक

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में इक प्रत्यय का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए -

प्रसंग - ....

समाज - ....

परिवार - ....

नीति - ....

साहित्य - ....

मूल - ....

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों की संन्धि विच्छेद कीजिए -

स्वेच्छाचारी, विक्रमादित्य, सूर्योदय, पुस्तकालय, नरेन्द्र, नीरोग, निष्कपट, प्रात:काल।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ खोजिए तथा उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

पर्व, गणना, मलमास, उपलक्ष्य, प्रस्थान, संवर्धन ।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों को वर्ण क्रम के अनुसार लिखिए-

शेखर, नव, पता, अखिल, चैत्र, उपयोग, ग्रंथों, ऋग्वेद, संवत्, विक्रम, बाद, रोचक, दक्षिण, और, तेरह, माह, कहा, आगमन।

सही क्रम - अखिल, आगमन

....

....

....

....

प्रश्न 6. नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण और विशेष्य छाँटकर तालिका में लिखिए-

क. नववर्ष बीते तो कितने दिन हो गए।

ख. प्राचीन ग्रंथों में भी संवत्सर का एक कालचक्र के रूप में उल्लेख है।

ग. प्रत्येक माह के दो पक्ष होते हैं।

ङ	यह तो तुमने बड़ी रोचक बात बताई।

तालिका	
विशेषण	विशेष्य

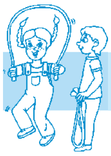

योग्यता विस्तार

1. संवत्सर के महत्व पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।
2. भारत में प्रचलित संवत् / सन् आदि की सूची बनाइए।
3. नव संवत्सर के उत्सव को आप अपने घरों में किस प्रकार मनाते हैं?
4. शिक्षक की सहायता से प्रसंग/घटना का वर्णन कीजिए और साथियों के साथ वार्तालाप कीजिए।

इन्हें भी जानिए :

संवत्- हमारे देश में विक्रम संवत् के अतिरिक्त अन्य कई संवत् भी प्रचलित हैं। **ईसवी संवत् या सन्-** यह संवत् ईसाई धर्म के पैगम्बर संत ईसा मसीह के जन्म दिन से आरंभ होता है। इसके पहले के समय को ईसापूर्व (ई.पू.) कहा जाता है। **शक संवत्-** यह राष्ट्रीय संवत् है जो विक्रम संवत् के 135 वर्ष बाद शक क्षत्रप (राजा) चष्टन ने उज्जयिनी पर शकों के पुनः अधिकार होने पर चलाया था। **हिजरी संवत्-** यह इस्लाम धर्म के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब के मक्का से हिजरत प्रस्थान करने की घटना के दिन से प्रारंभ हुआ था। **शालिवाहन संवत्-** यह महाराज शालिवाहन द्वारा प्रचलित संवत है यह भी गुड़ी पड़वा के दिन से प्रारंभ होता है। **कलिसंवत्-** इसका प्रारंभ कलियुग के प्रथम दिन से माना जाता है। कलियुग का प्रारंभ भगवान श्री कृष्ण के अवसान के उपरांत हुआ था। इसके अतिरिक्त देश में बंगला संवत् भी प्रचलित है।

अनेकता में एकता हमारे देश की विशेषता है।

विविध प्रश्नावली - 2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. एक वाक्य के लिए एक शब्द के आधार पर सही जोड़ी बनाइए।

उपकार मानने वाला	-	अनुकरणीय
कम खाने वाला	-	आस्तिक
जो ईश्वर में विश्वास करता है	-	सर्वज्ञ
जो सब कुछ जानता हो	-	कृतज्ञ
जो अनुकरण करने योग्य हो	-	मिताहारी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) पाटलिपुत्र नगर .... के अध्ययन के लिए मशहूर था।

(ख) मुण्डा जन जाति में 'सिंग' का अर्थ है .... ।

(ग) कहा जाता है कि .... ऋषि ने भेड़ाघाट में तपस्या की थी।

(घ) सबद सुनै सब कोय .... सबै सुहावन।

(ङ) बहुत अधिक फूल खिलने के कारण पटना का नाम .... भी था।

3. सही विकल्प चुनिए-

(क) सत्याग्रह शब्द का संधि विच्छेद .... है

(1) सत्य + ग्रह (2) सत्य + आग्रह (3) सत्या + ग्रह (4) सत्याग + रह

(ख) युवावस्था शब्द का संधि विच्छेद .... है

(1) युवा + अवस्था (2) युवाव + आस्था

(3) युव + अवस्था (4) युव + आस्था

(ग) हाथ पाँव फूलना मुहावरे का अर्थ .... है

(1) सूजन आ जाना (2) ताकतवर हो जाना (3) घबरा जाना (4) खुश होना

4. निम्नलिखित समास विग्रह शब्दों के समक्ष सामासिक पद लिखिए।

शंख से नाद, गाँव के वासी, राजा का दण्ड, हर एक वर्ष, शौर्य के लिए चक्र, सेना का पति, नीला कमल

5. निम्नलिखित शब्दों का अनुनासिक और अनुस्वार चिह्न के आधार पर वर्गीकरण कीजिए।

गाँव, पंचम, दंड, मंगल, काँच, हँस, बाँधना, बंधन, सम्बंध, हंस

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पाटलिपुत्र किन-किन सम्राटों की राजधानी रहा है ?
2. ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत की सबसे बड़ी देन क्या है ?
3. राजा अभयसिंह ने खेजडली ग्राम जाकर किसलिए क्षमा माँगी ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'भेड़ाघाट' पाठ के लेखक की ममता नर्मदा से स्वाभाविक रूप से क्यों है ?
2. 'भेड़ाघाट' पाठ का लेखक विधाता को क्या चुनौती देना चाहता है और क्यों ?
3. किस घटना ने बिरसा मुंडा के जीवन की दिशा बदल दी ?
4. बिरसा मुंडा के आन्दोलन के समय और कौन-कौन से सेनानियों की चर्चा की गई है ?
5. अर्जुन अपने लक्ष्य में कैसे सफल हुए ?
6. वृद्धा सेठ जी के पास अपनी अमानत वापिस माँगने क्यों गई थी ?
7. वाक्य रचना की विशेषताएँ बताइए ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ''नाच रहे पागल हो ताली दे-दे चल दल'' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए ।
2. ''पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन'' कह कर कवि क्या कहना चाहता है?
3. ''सावन मनभावन क्यों लगने लगता है ?
4. जन्मभूमि की स्वतंत्रता का बिरसा का सपना अधूरा कब रह गया ?
5. ''प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए'' पाठ का मुख्य संदेश अपने शब्दों में लिखिए ।
6. 'याचक और दाता' कहानी में सही अर्थो में याचक कौन है और क्यों ? कारण सहित उत्तर लिखिए ।

7. आपके आसपास की कोई प्रसिद्ध नदी तथा उसके आसपास का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

8. निम्नलिखित गद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

"जब हम सूर्य की किरणों को किसी आतशी शीशे के सहारे एक कागज के टुकड़े पर केन्द्रित करते हैं तो वह जल उठता है। जल में प्रच्छन्न विद्युत को कुछ साधनों से केन्द्रित करके बड़े–बड़े कारखाने चलाए जाते हैं। एकाग्र करके उससे संसार को हिलाया जा सकता है।"

9. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

"ठाँउ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजे।
मीठे वचन सुनाय, विनय सब ही सौं कीजे,
कह गिरधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निस दिन चारि, रहत सब ही के दौलत॥

(क) पंक्तियों में कौन-सा छंद है? नाम लिखकर उसके लक्षण लिखिए।

(ख) पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

(ग) रचनाकार का नाम बताइए।

(घ) कवि इन पंक्तियों के माध्यम से क्या कहना चाहता है?

10. "चाँद आता है तो चाँदी जैसी चमक उठती है सूरज आता है तो उस जैसी तप उठती है" यह कथन किसके बारे में कहा गया है?

पंक्ति का आशय अपने शब्दों में लिखिए ।

11. भारत वर्ष में प्रचलित संवत्/सन् आदि की सूची बनाइए।

12. पाण्डवों और कौरवों की परीक्षा सम्बन्धी घटना लिखिए।

13. गिरधर कवि की कुण्डलियाँ पढ़कर आपके मन में जो विचार उत्पन्न हुए हैं, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

14. वृक्षों से लाभ विषय पर एक निबंध लिखिए।

विशेष :- इसके अतिरिक्त शिक्षक छात्रों से कुछ मौखिक प्रश्न भी करें जिससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का आकलन हो सके।

पाठ-15

महेश्वर

आइए, सीखें : ● महेश्वर का पुरातात्विक महत्व ● प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की जानकारी ● समास, सन्धि ● वाक्यांश के लिए एक शब्द ● उपसर्ग ● पत्र-लेखन ● यात्रा वर्णन।

*(**पाठ-परिचय :** महेश्वर नगर भारत के प्राचीनतम नगरों में से एक है। यह नगर पुरातात्विक दृष्टिकोण से विशेष महत्व रखता है। इस नगर की खुदाई में पाषाण काल से लेकर मराठा काल तक की सभ्यता का पता चलता है। इस पाठ में महेश्वर की प्रसिद्धि के विषय में पत्र के माध्यम से जानकारी दी गई है।)*

महेश्वर
10.02.07

प्रिय मनोज और माधवी,

आशीर्वाद। पिछले दो दिन से मैं मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के महेश्वर नामक नगर में हूँ। नर्मदा नदी के किनारे बसा महेश्वर इन्दौर से लगभग 105 किलोमीटर दूर है। छोटा-सा नगर होने पर भी प्राचीन सभ्यता-संस्कृति और इतिहास की दृष्टि से महेश्वर एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ की खुदाई में पुरातात्विक महत्व की अनेक वस्तुएँ और अवशेष प्राप्त हुए हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार महेश्वर का प्राचीन नाम माहेश्वरी अथवा माहिष्मती था। इसे सूर्यवंश के राजा मान्धाता ने बसाया था। उनके बाद इस नगर पर कीर्तवीर्य सहस्त्रार्जुन का आधिपत्य हो गया। उसने इसे अपने हैहय साम्राज्य की राजधानी बनाया था। सहस्त्रार्जुन का अन्त भगवान परशुराम ने किया, क्योंकि सहस्त्रार्जुन ने परशुराम जी के पिता ऋषि जमदग्नि को मार डाला था। धीरे-धीरे यह स्थान इतिहास के गर्त में खो गया।

इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने महेश्वर को एक बार फिर से प्रसिद्धि प्रदान की । उन्हें यह स्थान अत्यन्त प्रिय था। उन्होंने इस स्थान पर नर्मदा के तट पर एक किला और भगवान शिव का विशाल मंदिर बनवाया। यहाँ स्थित पवित्र शिवलिंग महेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर में महारानी अहिल्याबाई द्वारा प्रज्ज्वलित अखण्ड दीप में यहाँ आने वाला प्रत्येक दर्शनार्थी घी डालकर अपने आपको धन्य समझता है। यहाँ आने पर सभी को सुखद अनुभूति और शान्ति मिलती है।

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक पत्र विधा की जानकारी दें ■ मध्यप्रदेश के विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक, प्रागैतिहासिक स्थलों की शिक्षक चर्चा करें ■ महेश्वर की विस्तृत जानकारी दें।

महेश्वर के मंदिर और नर्मदा नदी के घाटों का चित्र

प्रातः और सायंकाल पुण्य सलिला नर्मदा में 'जय नर्मदे मैया' कहते और स्नान करते हुए नर-नारी, मन्दिरों से गूँजती घण्टियों और आरती की मधुर ध्वनि, 'ऊँ नमः शिवाय' के मंत्र में डूबा भक्तिमय वातावरण और इतना ही पवित्र प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा मनोहारी है। महारानी अहिल्याबाई को पूरे मालवा की तरह यहाँ भी ''लोकमाता'' के रूप में देखा जाता है। यहाँ घर-घर में उनके चित्र लगे हैं।

महेश्वर धार्मिक पौराणिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सम्पदा से सम्पन्न है। यहाँ नर्मदा घाटी में पाषाण कालीन सभ्यता के पत्थर के औजार मिले हैं। प्रागैतिहासिक काल के पुरा-अवशेषों से पता चलता है कि उस समय यहाँ के लोग घास-फूस के झोपड़ों में या पेड़ों पर बने घरों में रहते थे। उस समय की पाई गई वस्तुओं में लाल और काले रंग के मिट्टी के बरतनों और घड़ों के टुकड़े प्रमुख हैं। ईसा पूर्व की चौथी सदी से लेकर पहली सदी तक का समय महेश्वर के इतिहास में महत्वपूर्ण है। इस समय के भवनों के अवशेष यहाँ मिले हैं। इन भवनों में ईंटों का प्रयोग किया गया है। उस समय मिट्टी के कलात्मक और सुन्दर घड़े बनाए जाते थे। साँचे में ढली मुद्रा और पत्थर की बनी कई वस्तुएँ यहाँ खुदाई में मिली हैं।

इसके बाद के समय अर्थात् ईसवी सन् 100 से सन् 500 ई. तक महेश्वर का विकास चरमसीमा पर था। मौर्य, सातवाहन और गुप्तकालीन सभ्यता का प्रभाव भी इस नगर पर पड़ा।

अलंकरणयुक्त भवनों का निर्माण इस युग की विशेषता है।

इस समय धातुओं जैसे - सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा,लोहा आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया। महेश्वर में पाए गए पुरा-अवशेषों को कई संग्रहालयों में प्रदर्शित किया गया है।

मराठों के शासन काल में महारानी अहिल्याबाई ने यहाँ सुन्दर घाटों, मन्दिरों, धर्मशालाओं, तथा भवनों का निर्माण कराया। उनके काल में महेश्वर का सर्वतोन्मुखी विकास हुआ। एक बात तो मैं भूला ही जा रहा था। यहाँ की बनी रेशमी साड़ियाँ महेश्वरी साड़ियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। महेश्वर के बारे में जितना भी लिखूँ, कम है। दीदी और जीजाजी को मेरा चरण स्पर्श कहना। सभी को प्यार।

तुम्हारा मामा

सुबोध

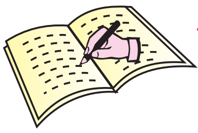

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

संस्कृति	--------------	पुरातात्विक	--------------
पुराविद्	--------------	उत्तरदायित्व	--------------
सर्वतोन्मुखी	--------------	पाषाण	--------------
प्रागैतिहासिक	--------------	उत्खनन	--------------
फलक	--------------	अवशेष	--------------
अलंकरण	--------------		

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) महेश्वर का प्राचीन नाम क्या है ?

(ख) महेश्वर मध्यप्रदेश के किस जिले में स्थित है ?

(ग) महेश्वर की खुदाई में किस प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं ?

(घ) हैहय साम्राज्य की स्थापना किसने की थी ?

(ङ) नर्मदा के तट पर किला और शिव का मन्दिर किसने बनवाया था?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

(क) सहस्त्रार्जुन के वध का क्या कारण था ?

(ख) महारानी अहिल्याबाई के किन-किन कार्यों से महेश्वर प्रसिद्ध हुआ?

(ग) महारानी अहिल्याबाई को 'लोकमाता' के रूप में क्यों याद किया जाता है ?

(घ) पाषाणकालीन सभ्यता के लोग अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करते थे?

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों द्वारा कीजिए -

(नर्मदा, रेशम, पुरातात्विक, महेश्वर)

(क) महेश्वर की खुदाई में .... महत्व की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।

(ख) महारानी अहिल्याबाई ने .... में किला और शिव मन्दिर बनवाया था।

(ग) महेश्वर की बनी .... की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं।

(घ) महेश्वर ....नदी के किनारे बसा है।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(आशीर्वाद, सहस्त्रार्जुन, संस्कृति, ऋषि, जमदग्नि, दर्शनार्थी, प्रज्ज्वलित, पुरातात्विक)

प्रश्न 2 निम्नलिखित शब्दों का समास - विग्रह करके, उनके सामने समास का नाम लिखिए-

लोकमाता, मधुर ध्वनि, नर-नारी, विशाल मन्दिर, अखण्ड दीप, महारानी।

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग छाँटकर लिखिए-

अखण्ड, अवशेष, प्रसिद्ध, अनुशासन, विज्ञान।

प्रश्न 4 निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद कीजिए और उनके सामने सन्धि का नाम लिखिए-

महेश्वर, मनोहर, आशीर्वाद, दर्शनार्थी

प्रश्न 5 निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय छाँटकर लिखिए-

(क) इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने सुन्दर घाटों, मन्दिरों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया था।

(ख) पाषाण कालीन सभ्यता के औजार नर्मदा के घाटों की खुदाई में मिले हैं।

(ग) महेश्वर की सिल्क साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 6 सही जोड़ी बनाइए-

वाक्यांश	शब्द
प्राचीन काल से सम्बन्धित	ऐतिहासिक
धर्म से सम्बन्धित	पुरातात्विक
संस्कृति से सम्बन्धित	धार्मिक
इतिहास से सम्बन्धित	पौराणिक
पुराणों से सम्बन्धित	सांस्कृतिक

प्रश्न 7 प्रधनाध्यापक को एक पत्र लिखिए, जिसमें महेश्वर दर्शनीय स्थल पर भ्रमण-दल ले जाने का अनुरोध कीजिए।

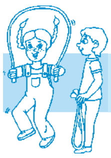

योग्यता विस्तार

1 अपने मित्र को किसी ऐतिहासिक/धार्मिक स्थल से सम्बन्धित जानकारी देते हुए पत्र लिखिए।

2 महेश्वर से सम्बन्धित पौराणिक कथा 'संक्षेप' में लिखिए।

3 इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई के सम्बन्ध में अन्य पुस्तकों से भी छाँट कर विशेष जानकारी प्राप्त कीजिए।

4 महान महिलाओं की सूची तैयार कीजिए और प्रत्येक के विषय में संक्षिप्त परिचय लिखिए।

मन चंगा तो कठौती मे गंगा।

पाठ-16

पथिक से

आइए सीखें : ● सांसारिक समस्याओं का साहस और विवेक पूर्वक सामना करना ● साधारण - वाक्यों को काव्य पंक्तियों में बदलना ● पर्यायवाची शब्द, पुनरूक्ति शब्द ● अलंकार की परिभाषा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकार।

*(**पाठ परिचय :** अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने में पथिक के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती ही हैं, लेकिन मार्ग के सुहावने दृश्य-नदियाँ, झरने, पहाड़, वन भी अपने सौन्दर्य से उसे आकर्षित करते हैं। जो स्थिति साधारण-यात्रा की है, वही स्थिति जीवन-यात्रा की भी है। सांसारिक समस्याएँ - दुख, शोक, हताशा उसे कर्त्तव्य से विमुख करती हैं। इस कविता में कवि ने जीवन-पथ के पथिक को सचेत करते हुए परामर्श दिया है कि इन सब बाधाओं का साहस और विवेकपूर्वक सामना करते हुए वे अपने-अपने कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर होते रहें।)*

पथ भूल न जाना पथिक कहीं
पथ में काँटे तो होंगे ही,
दूर्वादल सरिता, सर होंगे।
सुन्दर गिरि-वन-वापी होंगे
सुन्दर-सुन्दर निर्झर होंगे।

सुन्दरता की मृगतृष्णा में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

जब कठिन कर्म पगडंडी पर,
राही का मन उन्मन होगा।
जब सपने सब मिट जाएँगे,
कर्त्तव्य मार्ग सम्मुख होगा।

शिक्षण संकेत : ■ कविता को हाव-भाव एवम् लय के साथ सुनाएँ। छात्रों से सस्वर अनुकरण वाचन करवाएँ। ■ कविता के भाव को स्पष्ट करें। ■ कठिन शब्दों के अर्थ, पर्यायवाची शब्द एवम् विलोम शब्दों द्वारा पंक्तियों की व्याख्या की जाए। ■ स्वतंत्रता संग्राम में शहीद, वीरों के जीवन की प्रेरक घटनाओं का उल्लेख किया जाए।

तब अपनी प्रथम विफलता में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

अपने भी विमुख पराये बन,
आँखों के सम्मुख आएँगे।
पग-पग पर घोर निराशा के,
काले बादल छा जाएँगे।

तब अपने एकाकीपन में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

रणभेरी सुन-सुन विदा-विदा
जब सैनिक पुलक रहे होंगे,
हाथों में कुमकुम थाल लिए
जलकण कुछ ढुलक रहे होंगे।

कर्त्तव्य प्रेम की उलझन में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे,
जब महाकाल की माला में ।
माँ माँग रही होगी आहुति,
जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।

पल भर भी पड़ असमंजस में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।।

– **डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन**

कवि परिचय : डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' मूल रूप से उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के रहने वाले थे, किन्तु उनकी आधी शिक्षा मध्यभारत में ही हुई थी। ग्वालियर के महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज में व्याख्याता के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। उज्जैन के माधव कॉलेज में वे प्राचार्य रहे। वे विक्रम विश्वविद्यालय में बरसों कुलपति के रूप में कार्यरत रहे। सुमन जी हिन्दी के अग्रणी कवियों में माने जाते हैं।

टिप्पणी : मृगतृष्णा– मृगतृष्णा एक प्रकार का भ्रम है। गर्मी के दिनों में, जब सूर्य की किरणें धरती पर आती हैं तब वे गर्म हवा की विभिन्न ताप वाली परतों से होती हुई धरती से वापस लौट जाती हैं। लौटते समय आँखों में इसकी चमक दिखाई देती है जो रेत में पानी का भ्रम पैदा करती है। हरिण इसी भ्रम के कारण रेत के मैदानों में पानी की तलाश करता रहता है। इसीलिए इसे मृगतृष्णा कहा गया है।

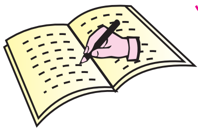

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए –

पथिक	--------------	दूर्वादल	--------------
वापी	--------------	निर्झर	--------------
जलकण	--------------	उन्मन	--------------
एकाकीपन	--------------	कुमकुम थाल	---------------
असमंजस	--------------	आहुति	---------------
हवन सामग्री	--------------		

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए –

(क) 'पथ में काँटे तो होंगे ही' इस पंक्ति में काँटे शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) नीचे दो खण्डों में कविता की आंशिक पंक्तियाँ दी गई हैं। खण्ड 'अ' और खण्ड 'ब' से एक सही पंक्ति लेकर पूरी कीजिए।

अ	ब
(अ) जब कठिन कर्म पगडंडी पर	(अ) जब सैनिक पुलक रहे होंगे।
(आ) माँ माँग रही होगी आहुति	(आ) काले बादल छा जाएँगे।
(इ) रणभेरी सुन-सुन विदा-विदा	(इ) राही का मन उन्मन होगा।
(ई) पग-पग पर घोर निराशा के	(ई) जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।

(ग) स्वतंत्रता की ज्वाला में माँ आहुति की माँग कर रही है। 'माँ' शब्द के प्रयोग द्वारा यहाँ किस माँ की ओर संकेत किया गया है?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

(क) जीवन पथ पर चलते हुए पथिक को किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है? कविता के आधार पर कोई तीन बाधाओं को लिखिए।

(ख) किस स्थिति में कदम-कदम पर मनुष्य अपने आपको घोर निराशा में देखता है?

(ग) सुन्दरता की मृगतृष्णा का क्या तात्पर्य है ?

(घ) कवि के अनुसार पथिक के सामने कब असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है ?

(ङ) कवि ने इस कविता में प्रकृति के कौन-कौन-से अंगों-उपांगों का चित्रण किया है जो पथिक को उसके मार्ग में मिलते हैं?

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के चार-चार पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं, जिनमें से एक-एक शब्द गलत है। गलत शब्द पर गोला लगाएँ-

(क) पहाड़ - गिरि, अचल, पाषाण, पर्वत

(ख) वन - अरण्य, जम्बुक, कानन, विपिन

(ग) तालाब - सर, तड़ाग, सरोवर, तटिनी

प्रश्न 2. नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द दिए गए हैं। दोनों को अलग-अलग लिखिए-

प्रथम, सम्मुख, विफलता, अन्तिम, माँग, कठिन, विमुख, सफलता, अनुराग, प्रलय, पुष्ट, जर्जर, विराग, सरल, पूर्ति, सृष्टि ।

शब्द	विलोम शब्द
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

प्रश्न 3. कविता में आए पुनरुक्ति शब्दों (जैसे अपना-अपना) को छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 4. एकाकीपन शब्द में 'एकाकी' में 'पन' प्रत्यय है। इसी प्रकार 'पन' प्रत्यय जोड़कर चार शब्द बनाइए।

प्रश्न 5. 'सरित सर' में अनुप्रास अलंकार है। अनुप्रास अलंकार के अन्य उदाहरण छाँटकर लिखिए।

और भी जानिए :

1 मैया, मैं तो चन्द्र खिलौना लैंहौं ।

2 चरण-कमल बन्दौ हरि राई ।

यहाँ उदाहरण 1 में चन्द्र खिलौना - चन्द्रमा रूपी खिलौना

2 में चरण कमल - चरण रूपी कमल

यहाँ उपमेय और उपमान को एक कर दिया गया है।

नियमीकरण :

जहाँ गुण की समानता के कारण उपमेय में ही उपमान का आरोप कर दिया जाए, वहाँ **रूपक अलंकार** होता है।

यह भी जानिए :

1. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप पर्‍यो प्रभात।।

इस उदाहरण में श्रीकृष्ण के सुन्दर, श्याम शरीर में नीलमणि पर्वत की और शरीर पर शोभायमान पीताम्बर में प्रभात की धूप की मनोरम कल्पना है, जिसमें सम्भावना की गई है।

नियमीकरण : जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाती है, वहाँ **उत्प्रेक्षा अलंकार** होता है, जैसे-

2. फूले कास सकल महि छाई। जनु बरसा कृत प्रगट बुढ़ाई।।

यहाँ कास के फूल (उपमेय) में वर्षा ऋतु के बुढ़ापे (उपमान) की सम्भावना की गई है। संक्षेप में कह सकते हैं कि

जहँ कीजै सम्भावना, तहँ उत्प्रेक्षा जान।

इस अलंकार में जनु, मनु, जानो, मानों, ज्यों, मानहुँ जैसे वाचक शब्द आते हैं।

6. **निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर उनमें प्रयुक्त अलंकार पहचान कर, उनके नाम लिखिए-**

क. जब कठिन कर्म पगडंडी पर ।
राही का मन उन्मन होगा ॥

ख. मानों झूम रहे हैं तरु भी, मन्द पवन के झोंकों से ।

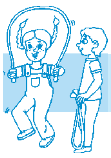

योग्यता विस्तार

1. डॉ. शिव मंगलसिंह 'सुमन' की लिखी पुस्तकें विद्यालय के पुस्तकालय से प्राप्त करके पढ़िए।
2. इस कविता को कण्ठस्थ करके बालसभा में सुनाइए।
3. कर्त्तव्यपरायणता से सम्बन्धित कहानी या कविता शिक्षक की सहायता से खोजिए और पढ़िए।

विपत्ति आने पर जो व्यक्ति घबराते नहीं हैं वे ही सफलता प्राप्त करते हैं।

पाठ-17

वसीयतनामे का रहस्य

आइए सीखें : ● समस्या में ही समाधान छिपा रहता है, यह भावना बच्चों में प्रस्थापित करना। ● कारकों की विभक्ति का ज्ञान। आगत शब्द, वाक्य-भेद, शब्द युग्म- पुनरूक्त, विशेषण विशेष अनुतान, वचन

*(**पाठ परिचय**- इस कहानी में गाँव के एक वयोवृद्ध किसान की न्यायप्रियता, दूरदर्शिता, ईमानदारी, निष्पक्षता और बुद्धिचातुर्य से परिचित कराया गया है। गाँव के बड़े से बड़े विवादों को वह इस प्रकार सुलझाता था कि दोनों ही पक्ष प्रसन्न होकर जाते थे। उसके चार पुत्र और एक पुत्री थी। उसने अपनी वसीयत में लिखा था कि मेरी जायदाद मेरे तीन पुत्रों में बाँट दी जाए और विवाद की स्थिति में जो भी निष्पक्ष न्याय करे, उससे मेरी पुत्री का विवाह कर दिया जाए। उसके मरने के बाद जायदाद के बँटवारे के लिए विवाद हुआ। गाँव में पंचायत हुई, किन्तु किन तीन बेटों को जायदाद का बँटवारा हो, कोई निर्णय नहीं दे सका। आखिर न्याय के लिए चारों बेटे और बेटी राजा के पास पहुँचे। राजा ने निष्पक्ष न्याय कर दिया और बेटी की शादी राजा के साथ हो गई।)*

एक गाँव में एक वृद्ध किसान रहता था। वह बहुत बुद्धिमान, दूरदर्शी व न्यायप्रिय था। दूर-दूर से लोग अपने झगड़ों का निपटारा कराने के लिए उसके पास आते थे। वह उनका फैसला इतनी निष्पक्षता व बुद्धिमानी से करता था कि दोनों पक्ष संतुष्ट होकर ही वापस जाते। एक न्यायप्रिय पंच के रूप में वह चारों ओर प्रसिद्ध हो गया था।

वृद्ध किसान के चार बेटे व एक अत्यन्त रूपवती कन्या थी। लेकिन उसने अपनी सारी जायदाद के तीन हिस्से किए और वसीयत लिखकर वह मर गया। उसके बेटों ने वसीयत पढ़ी तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उसमें दो बातें लिखी थीं।पहली सम्पूर्ण जायदाद के तीन हिस्से कर उसे तीन भाइयों में बाँट दिया जाए लेकिन यह नहीं लिखा था कि किस भाई को हिस्सा न दिया जाए। दूसरी-जो पंच इस बात का फैसला करे उसके साथ बेटी का विवाह कर दिया जाए।

चारों भाई जायदाद के बँटवारे को लेकर झगड़ने लगे। जायदाद के तीन हिस्से थे और चार हिस्सेदार! किसी तरह निपटारा नहीं हो रहा था। यदि एक भाई अपना हिस्सा छोड़ देता तो न्याय हो जाता। लेकिन कोई भी भाई अपना हक छोड़ने के लिए तैयार नहीं था।

शिक्षण-संकेत : ■ कहानी का वाचन कराएँ ■ कहानी में छिपे नैतिक मूल्य, न्यायप्रियता, ईमानदारी, निष्पक्षता और बुद्धिचातुर्य की भावना को बच्चों में प्रस्थापित करना ■ वसीयतनामे का अर्थ तथा रहस्य स्पष्ट करना। ■ कारकों की विभक्तियों का प्रयोग विभिन्न वाक्यों के माध्यम से करना ■ वाक्य के प्रकार साधारण, मिश्रित तथा संयुक्त वाक्यों के प्रयोग।

चारों भाइयों का झगड़ा देखकर भीड़ इकट्ठी हो गयी। एक दो लोगों ने आगे बढ़कर झगड़े का कारण पूछा। चारों भाइयों ने पूरी बात बता दी। गाँव वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने ऐसी वसीयत क्यों लिखी? अवश्य ही इसमें कोई रहस्य होगा। उन्होंने इस विवाद को जटिल समझकर उन्हें पंचायत बैठाने की सलाह दी। चारों भाई पंचायत के लिए सहर्ष तैयार हो गये।

अगले दिन गाँव के बाहर बरगद के पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। सभी पंचों ने सारे मामले पर गंभीरता से विचार किया। चारों भाइयों से तरह-तरह के प्रश्न पूछे। पंचों को यह शक था कि वृद्ध किसान के तीन बेटे असली हैं व एक बेटा उसका नहीं है। इसलिए उसने अपनी जायदाद के तीन हिस्से करने की बात वसीयत में लिखी है किन्तु चारों बेटों से पूछताछ करने पर यह स्पष्ट हो गया कि चारों बेटे वृद्ध के ही हैं। सभी पंच बहुत परेशान थे। एक महीना हो गया, लेकिन पंचायत कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी।

एक दिन पंचायत लगी हुई थी। तभी वहाँ से एक राहगीर निकला। उसने पंचों से राम-राम की और बैठ गया। पंचों ने राहगीर को पूरा मामला समझाया और सहायता करने को कहा। राहगीर को भी आश्चर्य हुआ। उसने सभी पंचों को समझाया कि मामला इतना जटिल है कि इसका फैसला केवल महाराजा ही कर सकता है। उसने उन्हें महाराजा का पता भी बता दिया।

चारों भाई अपनी बहन तथा कुछ साथियों को लेकर महाराजा के पास चल दिए। वह

जंगल में एक शानदार महल में रहता था। महाराजा के महल तक पहुँचने के लिए दो महलों को पार करके जाना पड़ता था।

महाराजा बड़े निर्भीक, साहसी और निडर थे। उन्होंने अपनी रक्षा के लिए एक भी सैनिक नहीं रखा था। वह हमेशा प्रजा के सुख और आराम के लिए ही कार्य करते थे। उनके पास दूर-दूर से एक-से-एक जटिल मामले आते, जिन्हें वह कुछ ही पलों में इस बुद्धिमानी से हल, कर लेते कि लोग देखते रह जाते।

चारों भाई भी अपनी बहन तथा साथियों के साथ बिना रोक-टोक के पहले महल तक पहुँच गये। तभी उन्हें सत्रह-अठारह वर्ष का एक युवक दिखा।

''महाराजा कहाँ मिलेंगे?'' एक भाई ने युवक से पूछा।

''महाराजा को मरे तो तीन साल हो गए। आगे जाओ।'' युवक बोला और महल के अन्दर चला गया।

चारों भाइयों व उनके साथियों को युवक की बात बड़ी विचित्र लगी। वे आगे बढ़े। कुछ ही दूरी पर दूसरा महल था। वहाँ उन्नीस-बीस वर्षीय अद्वितीय सुन्दरी कन्या घूम रही थी।

''महाराजा कहाँ मिलेंगे?'' एक साथी ने कन्या से पूछा।

''महाराजा तो अंधे हो गए है,आगे जाओ।'' कन्या बोली और महल के अन्दर चली गई।

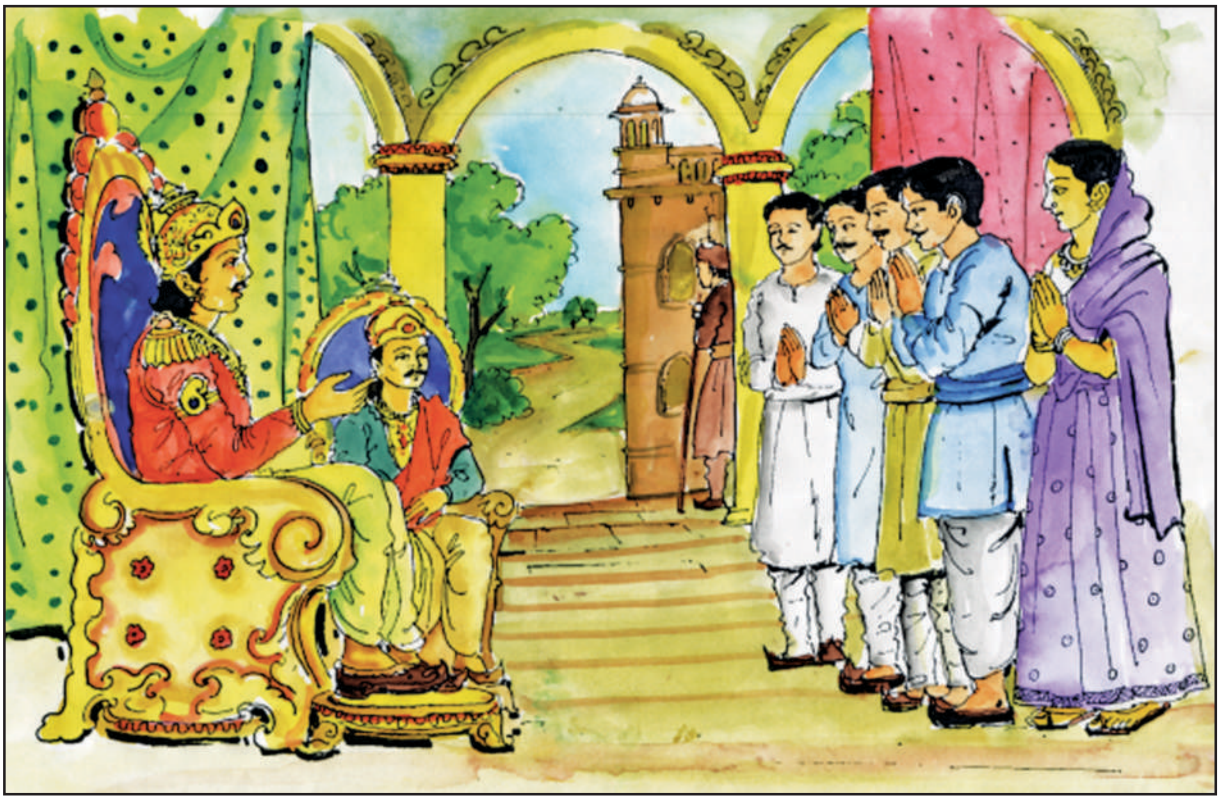

चारों भाइयों व उनके साथियों को ऐसा लग रहा था जैसे कि किसी विचित्र संसार में आ गए हों। उन्हें युवक-युवती दोनों पागल मालूम पड़े।

वे आगे बढ़े सामने महाराजा का महल था।

अभी वे लोग महल के भीतर प्रवेश करने जा रहे थे कि अन्दर से बीस-पच्चीस ग्रामीण ''महाराजा की जय'', ''महाराजा की जय'' चिल्लाते हुए बाहर निकले।

एक भाई ने उनमें से एक युवक को रोककर सारी बात पूछी। उस युवक ने बताया कि वे लोग अभी कुछ ही देर पहले एक झगड़े का निपटारा कराने महाराजा के पास आए थे और महाराजा ने अपनी बुद्धिमानी से पल भर में फैसला कर दिया। महाराजा दूध का दूध और पानी का पानी कर देता है।

युवक की बातों से चारों भाइयों व उनके साथियों को विश्वास हो गया कि महाराजा शीघ्र ही उनका निपटारा कर देगा।

वे हिम्मत करके फिर आगे बढ़े।

सामने एक बड़ा सा कमरा था, जिसमें एक ऊँचे आसन पर महाराजा बैठे हुए थे।

सभी लोगों ने महाराजा को सर झुकाकर प्रणाम किया। उन्होंने उठकर सभी को आशीर्वाद दिया और फिर अपने आसन पर बैठ गए।

''कहो, तुम लोग क्यों आए हो?'' महाराजा गम्भीर आवाज में बोले।

''महाराजा, हम लोग आपसे एक मामले का फैसला कराने आए हैं, लेकिन हमारे मामले का फैसला करने से पहले आप हमें दो बातें बता दीजिए।'' एक वृद्ध व्यक्ति बड़ी नम्रता से बोला।

''पूछो, क्या पूछना चाहते हो?'' महाराजा मुस्कराते हुए बोला।

''जब हम पहले महल के पास से गुजर रहे थे तो एक युवक मिला था। उससे हमने आपके बारे में पूछा तो उसने बताया कि आपको मरे तीन साल हो गए हैं। इस बात का क्या राज है?'' वृद्ध व्यक्ति बोला।

''दूसरी बात क्या है?'' महाराजा फिर मुस्कराते हुए बोला।

''जब हम लोग दूसरे महल के पास से गुजर रहे थे तो एक अत्यन्त रूपवती कन्या मिली। उससे हमने आपके बारे में पूछा तो उसने बताया कि आप अन्धे हो गए हैं। इस बात का राज़ भी बता दीजिए।'' उसी वृद्ध व्यक्ति ने बड़ी विनम्रता से पूछा।

''पहले जो युवक मिला था वह मेरा भाई है। राजकाज में फँसा होने के कारण मैं उससे

तीन साल से नहीं मिल सका। अत: वह कह रहा था कि मुझे मरे तीन साल हो गये और बाद में जो युवती मिली थी वह मेरी छोटी बहन है। वह जवान हो गई है और विवाह करना चाहती है। राजकाज में व्यस्त होने के कारण मैं उसके लिए वर नहीं खोज पा रहा हूँ। इसीलिए वह कह रही थी कि मैं अंधा हो गया हूँ।'' महाराजा ने गंभीरता से दोनों प्रश्नों के उत्तर दे दिए। तभी उनकी दृष्टि उस युवती पर पड़ी जो चारों भाइयों के साथ आयी थी। महाराजा को युवती बड़ी अच्छी लगी।

चारों भाइयों और उनके साथियों को महाराजा की बुद्धिमत्तापूर्ण बातों से पक्का विश्वास हो गया कि उनके मामले का निर्णय वह अवश्य कर देंगे।

''अब तुम लोग अपना मामला विस्तार से बताओ।'' महाराजा युवती की ओर से ध्यान हटाकर गंभीरता से बोले।

एक वृद्ध व्यक्ति ने आगे बढ़कर पूरी बात बता दी।

''अरे यह तो बड़ी आसान बात है। इसका निर्णय तो अभी हुआ जाता है।'' महाराजा हँसते हुए बोले और उठकर खड़े हो गए।

उन्होंने अपनी कमर से बँधी तलवार निकाली और चारों भाइयों को ले जाकर एक कमरे में बन्द कर दिया। फिर उन्होंने सबसे बड़े भाई को बुलाया और एक दूसरे कमरे में ले जाकर अपनी तलवार उसके हाथ में देते हुए बोले– ''देखो भाई, तुम होशियार आदमी हो और होशियार वही होता है जो अवसर का लाभ उठाए मैंने तुम्हारे तीनों भाइयों को एक कमरे में बन्द कर दिया है। वे खाली हाथ हैं और तुम्हारे पास तलवार है। तुम अपने तीनों भाइयों को मार डालो। मैं तुम्हें सारी जायदाद का मालिक बना दूँगा।''

महाराजा ने उसे अपनी युवा बहन से विवाह का लालच भी दिया।

''मुझे अपने छोटे भाइयों की हत्या करके जायदाद नहीं लेनी। इससे तो अच्छा है कि मैं अपना हिस्सा छोड़ दूँ और तीनों भाई अपना-अपना हिस्सा लेकर आराम से रहें।'' बड़ा भाई शान्त स्वर में बोला और उसने महाराजा को उसकी तलवार वापस कर दी।

अब महाराजा दूसरे भाई को लेकर उसी एकान्त कमरे में पहुँचा। उन्होंने उसे भी तलवार दी और पहले की तरह अपने भाइयों की हत्या करने को कहा। दूसरे भाई ने भी पहले के समान तलवार वापस करते हुए अपने भाइयों की हत्या से इन्कार कर दिया। इसी प्रकार तीसरा भाई भी अपना हिस्सा छोड़ने को तैयार हो गया और उसने भी अपने भाइयों की हत्या करने से मना कर दिया।

अब महाराजा चौथे भाई को लेकर एकान्त कमरे में पहुँचा। उसने उसे भी तलवार देकर पहले की तरह अपने भाइयों को कत्ल करने के लिए कहा।

चौथा भाई अपने भाइयों का कत्ल करने के लिए तैयार हो गया। उसने सोचा कि धनवान बनने का यह अच्छा अवसर है। यदि वह अपने भाइयों को कत्ल कर दे तो पूरी जायदाद उसे मिल जाएगी। साथ ही महाराजा की सुन्दर बहन से उसका विवाह भी हो जाएगा।

अभी चौथा भाई रंगीन सपने देख ही रहा था कि महाराजा ने उसको जेल में डाल दिया।

महाराजा ने बाहर निकलकर तीनों भाइयों और उनके साथियों को पूरी बातें समझाईं।

सभी इस निर्णय से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने सोचा कि अवश्य ही छोटा भाई अपने पिता को भी इसी तरह कष्ट देता होगा। इसलिए उन्होंने अपनी जायदाद के तीन हिस्से किए थे।

बड़े भाई ने महाराजा के साथ अपनी बहन के विवाह की इच्छा व्यक्त की। महाराजा तैयार हो गया। वह तो पहले से ही उस पर मोहित हो चुका था।

शुभ मुहूर्त देखकर महाराजा ने विवाह किया। उसकी नवविवाहिता पत्नी केवल रूपवती ही नहीं गुणवती भी थी। उसने शीघ्र ही अपनी ननद व देवर का विवाह भी करा दिया।

- डॉ. परशुराम शुक्ल

लेखक परिचय : डॉ. परशुराम शुक्ल- हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल ने बाल साहित्य की सभी विधाओं पर अधिकारपूर्वक लेखनी चलाई है। शिशुगीत, बाल कविताएँ, बाल एकांकी तथा बाल उपयोगी ज्ञान-विज्ञान संबंधी आलेखों का सफलतापूर्वक सृजन किया है। आपका जन्म 6 जून 1947 को कानपुर जिले के मैबलू नामक ग्राम में हुआ था। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं- वृक्ष कथा, मास्टर दीनदयाल, विश्व जलचरकोश, ज्ञान विज्ञानकोश आदि।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

दूरदर्शी	-------------	जटिल	-------------
न्यायप्रिय	-------------	जायदाद	-------------
निष्पक्ष	-------------	विवाद	-------------
वसीयत	-------------		

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क वसीयतनामे का अर्थ समझाइए।

ख गाँव का वयोवृद्ध व्यक्ति किस विशिष्ट कार्य के लिए प्रसिद्ध था?

ग वसीयत नामे में जायदाद कितने पुत्रों को बाँटने का संकेत था?

घ बटवारे का अंतिम निर्णय किसने किया?

ङ राजा के प्रथम दो महलों में जो दो लोग मिले, वे कौन थे?

च पंचों को किस बात की शंका थी?

छ वसीयतनामे में क्या लिखा था?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

क झगड़े का कारण क्या था?

ख गाँव वालों को वसीयत के बारे में जानकर आश्चर्य क्यों हुआ?

ग गाँव के वृद्ध व्यक्ति ने राजा से कौन-सी दो बातें पूछीं?

घ राजा ने तीनों भाइयों को अलग-अलग ले जाकर क्या कहा?

ङ क्या तीनों भाई राजा के प्रस्ताव से सहमत थे?

च चौथा भाई राजा के द्वारा दिए गए प्रस्ताव से क्या सोचकर सहमत हो गया?

छ राजा ने समस्या का निदान कैसे किया?

प्रश्न 4. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प को (✓) चिह्नित कीजिए :

वसीयतनामे के विषय में जानकर पंचों को शक था–

(1) वसीयतकर्ता मूर्ख था।

(2) भूल से उससे गलती हो गई।

(3) तीन बेटे असली हैं और एक बेटा उसका नहीं है।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. जायदाद विदेशी शब्द है, इसके स्थान पर मानक हिन्दी शब्द सम्पत्ति होता है। इसी प्रकार इस पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों के भी मानक हिन्दी शब्द लिखिए–

वसीयतनामे, हिस्सा, हिस्सेदार, हक, राहगीर, शानदार, फैसला, मामला, गुजर, राज, होशियार।

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए -

चारों भाइयों का झगड़ा देखकर भीड़ इकट्ठी हो गई। एक दो लोगों ने आगे बढ़कर झगड़े का कारण पूछा। चारों भाइयों ने पूरी बात बता दी। गाँव वालों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने ऐसी वसीयत क्यों लिखी? अवश्य ही इसमें कोई रहस्य होगा। उन्होंने इस विवाद को जटिल समझकर उन्हें पंचायत बैठाने की सलाह दी। चारों भाई पंचायत के लिए सहर्ष तैयार हो गए।

अब समझिए -

इस अनुच्छेद में रेखांकित शब्द का, ने, के लिए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की क्रिया के साथ भूमिका निश्चित कर रहे हैं। जैसे–

भाइयों का   लोगों ने   पंचायत के लिए

ये शब्द कर्त्ता तथा क्रिया को जोड़ते हैं जिससे वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है। इनके बिना वाक्य पूर्ण नहीं होता।

नियमीकरण -

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसको कारक कहते हैं।

कारकों के चिह्न परसर्ग या विभक्ति कहे जाते हैं। जैसे– का, ने, के लिए।

कारकों के आठ भेद हैं इनके परसर्ग (विभक्ति) निम्नानुसार हैं-

	कारक	कार्य	विभक्तियाँ (परसर्ग)
1.	कर्ता	क्रिया को करने वाला	ने
2.	कर्म	जिस पर क्रिया का प्रभाव/फल पड़े	को
3.	करण	जिस साधन से क्रिया हो	से, द्वारा, के साथ
4.	सम्प्रदान	जिसके लिए क्रिया की गई हो	के लिए, के निमित्त
5.	अपादान	जिसमें अलग करने का भाव हो	से (पृथकता सूचक)
6.	सम्बन्ध	क्रिया से सम्बन्ध बताने वाला	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
7.	अधिकरण	क्रिया करने का स्थान/आधार	में, पर
8.	सम्बोधन	जिससे संज्ञा को पुकारा जाए	अरे, ओ, हे आदि।

प्रश्न 3. इस पाठ में आने वाले विभिन्न कारकों के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों में से साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य अलग करके लिखिए।

(क) एक गाँव में एक किसान रहता था।

(ख) जायदाद के तीन हिस्से थे और चार हिस्सेदार थे।

(ग) यदि एक भाई अपना हिस्सा छोड़ देता तो न्याय हो जाता।

(घ) वे सोचने लगे कि इतने बुद्धिमान व्यक्ति ने ऐसी वसीयत क्यों लिखी?

(ङ) एक दिन पंचायत लगी थी।

(च) महाराजा हँसते हुए बोला और उठकर खड़ा हो गया।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्द, शब्द युग्म हैं या पुनरुक्त? उनके सामने लिखिए।

दूर-दूर.................. तरह-तरह .... राम-राम ....

सत्रह-अठारह .... युवक-युवती .... उन्नीस-बीस ....

अपना-अपना .... एक-दो ....

प्रश्न 6. पाठ में दिए गए प्रसंग के अनुसार सही जोड़े (विशेषण विशेष्य) बनाइए।

वर्ग (क)	वर्ग (ख)	सही जोड़े
दूसरा	मामला	दूसरा महल
अद्वितीय	स्वर	....
शान्त	महल	....
पूरा	कन्या	....
रंगीन	सुन्दरी	....
रूपवती	सपने	....

प्रश्न 7. उदाहरण की तरह शब्दों के रूप परिवर्तित कीजिए।

दुकान – दुकानें

कपड़ा – कपड़े

बहन, भाई, युवक, युवती,

महल, सपना, मामला, राहगीर

पढ़िए और समझिए–

अनुतान– जब हम बोलते हैं तब हमारा लहजा बदलता रहता है। शब्दों को हमेशा एक ही लहजे में न बोलकर उतार–चढ़ाव के साथ बोलते हैं। बोलने में आए इन उतार चढ़ावों के अन्तर को सुर–परिवर्तन कहते हैं।

हिन्दी में सुर–परिवर्तन या सुर का उतार–चढ़ाव तो मिलता है पर इसके कारण शब्दों का अर्थ नहीं बदलता। हिन्दी में सुर–परिवर्तन वाक्य के स्तर पर कार्य करता है, अर्थात वाक्य का अर्थ बदल देता है जब सुर–परिवर्तन से वाक्य का अर्थ बदल जाता है तब वह अनुतान कहलाता है।

प्रश्न 8. शिक्षक की सहायता से इस पाठ के कुछ महत्वपूर्ण वाक्यों को अनुतान के साथ (भिन्न-भिन्न ढंग से) पढ़िए और उनके बोलने से होने वाले अर्थ परिवर्तन को समझिए।

उदाहरण -

वाक्य स्तर पर अनुतान का प्रयोग

मोहन जाएगा।	(सामान्य कथन)
मोहन जाएगा?	(प्रश्नवाचक)
मोहन जाएगा!	(विस्मय सूचक)

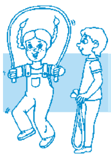

योग्यता विस्तार

1. इस पाठ को पढ़कर अपने मन में पैदा होने वाले विचारों को संक्षेप में लिखिए अथवा उनके विषय में कक्षा में चर्चा कीजिए।
2. आपने यदि ऐसी ही कोई अन्य कहानी पढ़ी या सुनी हो तो बाल सभा में हाव-भाव के साथ सुनाइए।
3. इस कहानी से हमें क्या संदेश (शिक्षा) मिलता है? कक्षा में सबको समझाइए।

यह भी जानिए :

मध्यप्रदेश में बहुत-सी जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है। यह विशिष्टता न केवल खानपान, रहन-सहन, लोक परम्पराओं में परिलक्षित होती है, अपितु प्रशासन एवं न्याय व्यवस्था में भी इसे देखा जा सकता है। मोघिया न्याय व्यवस्था में पंचायत के माध्यम से निर्णय किया जाता है, जिसमें पंच रोचक कहानी के माध्यम से परिणाम तक पहुँचते हैं। प्रस्तुत कहानी इसी विशिष्ट न्याय व्यवस्था पर आधारित है।

पराये धन की ओर ललचाई दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

पाठ-18

युद्ध-गीता

आइए, सीखें - ● रसानुभूति ● नैतिकता और सदाचार के गुणों का विकास करना। ● उपसर्ग, विपरीतार्थी शब्द, विराम चिह्नों का प्रयोग ● समास-विग्रह और उसकी पहचान करना। ● दोहा,चौपाई और उपमा, उत्प्रेक्षा तथा रूपक अलंकार जानना।

*(**पाठ परिचय**-राम को केन्द्र में रखकर अनेक ग्रंथ लिखे गए। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर कालिदास और भवभूति से होती हुई यह परम्परा तुलसीदास तक अक्षुण्ण रही। उसके संदर्भ में भूत, भविष्य और वर्तमान आदि की तथा देशकाल की सब सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं। लंका के युद्ध क्षेत्र में रावण श्रीराम से युद्ध करने के लिए अपने रथ पर आरूढ़ होकर आता है। उसकी सेना विशाल है। उसके साधन तथा युद्ध की तैयारी भी विशाल है। विभीषण उस दृश्य को देखकर हृदय में आतंकित हो जाता है और सोचता है - ''क्या बिना साधनों के राम, रावण को पराजित कर सकेंगे?'' वे अपना संशय राम के सम्मुख रख देते हैं। तब जिस तरह महाभारत युद्ध के आरंभ में श्रीकृष्ण अर्जुन की शंकाओं का समाधान करने तथा मनोबल बढ़ाने के लिए गीता का उपदेश देते हैं, उसी तरह रामचरित मानस में भी युद्ध के समय श्रीराम विभीषण की आशंकाओं का समाधान करते हुए धर्म के उन आधार भूत*

शिक्षण संकेत - ■ बच्चों की सहभागिता से कठिन शब्दों का अर्थ संदर्भ सहित वाक्यों में प्रयोग करते हुए करें। ■ कठिन शब्दों के विलोम तथा पर्यायवाची शब्द भी बताएँ। ■ रामचरित मानस, महाभारत, श्रीमद् भगवद् गीता के संदर्भ स्पष्ट करें। ■ श्रीराम-रावण युद्ध के बारे में बातचीत करें।

तत्वों (शौर्य, धैर्य, सत्य-शील, साहस, यम-नियम, दम, दया, परोपकार आदि गुण) का संदर्भ देकर कहते हैं कि इन सद्‌गुण रूपी धर्मरथ पर आरूढ़ होकर प्रत्येक बाह्य एवं आन्तरिक शत्रु को जीता जा सकता है । काव्यांश के आरंभ में राक्षस सेना के विशाल और भयंकर स्वरूप का दिग्दर्शन है वहीं वानर और भालुओं के उत्साह उमंग और वीरता का भी मनोरम चित्रण है। इस काव्यांश में श्रीराम द्वारा वर्णित धर्मरथ के रूपक में जिस युद्ध गीता के सूत्रों को प्रतिपादित किया गया है वे श्रीमद् भगवद् गीता के सार तत्व की ओर भी संकेत करते हैं।)

चलेउ निसाचर कटकु अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा॥
बिबिधि भाँति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज नाना॥
चले मत्त गज जूथ घनेरे। प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे॥
बरन बरन बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया॥
अति विचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेनु जनु साजी।
चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं॥
उठी रेनु रबि गयउ छपाई। मरुत थकित बसुधा अकुलाई॥
पनव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ॥
भेरि नफीरि बाज सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई॥
केहरि नाद बीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष उच्चरहीं॥
कहइ दसासन सुनहु सुभट्टा। मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा॥
हौं, मारिहऊँ भूप द्वौ भाई। अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई॥
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई। धाए करि रघुबीर दोहाई॥

छं.- **धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।**
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर बृंद नाना बान ते॥
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं॥
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं॥

शिक्षण-संकेत : ■ शिक्षक काव्यांश का अर्थ स्पष्ट करें। ■ युद्धवर्णन के समय वीर रस तथा धर्मरथ के वर्णन के समय शांत रस के भाव स्पष्ट करें। ■ अनुप्रास एवं उपमा तथा अन्य अलंकारों की ओर ध्यान आकर्षित करें। ■ विभिन्न महामानवों के गुणों पर चर्चा करें।

दो.- **दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि।**
भिरे बीर इत रामहि उत रावनहि बखानि॥

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमन अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें।।

दो. **महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।**
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥
सुनि प्रभु बचन बिभीषण हरषि गहे पद कंज।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज॥

-तुलसीदास

	रथ के उपांग		धर्मरथ के उपांग
1.	दो पहिए	–	शौर्य और धैर्य
2.	ध्वजा–पताका	–	सत्य और शील
3.	चार घोड़े	–	बल, विवेक, दम (इन्द्रियों को जीतना) परोपकार,
4.	डोरी	–	क्षमा, दया, समता
5.	सारथी	–	ईश्वर–भजन
6.	आयुध (ढाल, तलवार, फरसा, शक्ति, धनुष)	–	वैराग्य, संतोष, दान, बुद्धि, श्रेष्ठ, विज्ञान
7.	तरकश	–	निर्मल और अचलमन
8.	बाण	–	यम–नियम और संयम
9.	कवच	–	ब्राह्मण और गुरुओं का पूजन

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए–

निशाचर	----------------	कटक	----------------
पताका	----------------	गज	----------------
जलद	----------------	प्रेरे	----------------
समर	----------------	बहु	----------------
पयोधि	----------------	रेनु	----------------
घोर	----------------	प्रलय	----------------
नफीरि	----------------	पौरुष	----------------
दसानन	----------------	मर्दहु	----------------

हौं	----------------	कपिन्ह	----------------
कराल	----------------	सपच्छ	----------------
बृंद	----------------	चतुरंगिनीअनी	----------------
बरन	----------------	मत्त	----------------
जूथ	----------------	मरुत	----------------
सूर	----------------	निकाया	----------------
छुभित	----------------	कुधर	----------------
वसुधा	----------------	निसान	----------------
रव	----------------	घन	----------------
गाजहि	----------------	सहनाई	----------------
केहरिनाद	----------------	उच्चरहि	----------------
सुभट्टा	----------------	ठट्टा	----------------
भूप	----------------	दुहाई	----------------
मर्कट	----------------	भूधर	----------------
नाना–बान	----------------	महाद्रुम	----------------
संक	----------------	निज–निज	----------------
जान	----------------	अधीरा	----------------
सनेह	----------------		
स्यंदन	----------------	सौरज	----------------
दृढ़	----------------	परहित	----------------
घोरे	----------------	कृपाना	----------------
त्रोन	----------------	कवच	----------------
रिपु	----------------	संसार रिपु	----------------
पद कंज	----------------	पुंज	----------------
आयुध	----------------	मृगराज	----------------

जोरी	----------------	विरथ	----------------
वंदि	----------------	पदत्राना	---------------
आना	----------------	धीरज	---------------
दम	----------------	चाका	---------------
रजु	----------------	परसु	---------------
कोदण्डा	----------------	अभेद	---------------
जाके	----------------	ताके	---------------
मिस	----------------	अमन	----------------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए-

(क) राक्षस सेना के चलने पर धरती पर क्या प्रभाव पड़ा है?

(ख) कवि ने दौड़ते वानर-भालुओं की तुलना किससे की है?

(ग) श्रीराम के पराक्रम का मुख्य आधार क्या है?

(घ) धर्मरथ के दो पहिए कौन-कौन से हैं?

प्रश्न 3. शिक्षक की सहायता से सही जोड़ी बनाइए -

श्रीमदभगवद् गीता	उपनिषद्
धर्मरथ (युद्ध गीता)	वेद
ऋचाएँ	महाभारत
दर्शन	रामचरित मानस

प्रश्न 4. इन प्रश्नों के उत्तर तीन से चार पंक्तियों में लिखिए -

(क) युद्ध भूमि में विभीषण ने अधीर होकर श्रीराम से क्या कहा?

(ख) श्रीराम ने विभीषण की शंका का समाधान किस प्रकार किया?

(ग) आत्म शक्ति और बाह्य शक्ति में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(घ) श्रीराम ने धर्मरथ में जोते चार घोड़े किसे कहा है?

(ङ) संसार रूपी शत्रु को किस रथ पर सवार होकर जीता जा सकता है?

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

लोभ, समकक्ष, पराक्रम, धर्मनीति, आत्मशक्ति, दुर्जय, मर्यादा

प्रश्न 2. 'सुसज्जित' शब्द में 'सु' उपसर्ग है। निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग पहचान कर लिखिए-

शब्द	उपसर्ग
विशेष	....
विरथ	....
अधीर	....
दुर्जय	....

प्रश्न 3. बॉक्स में कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द लिखे हैं। इनकी सही जोड़ियाँ बनाकर लिखिए -

उचित, अपेक्षा, विजय, लाभ, जीवन, सुरक्षा, पराजय,
धर्म, अनुचित, मृत्यु, असुरक्षा, उपेक्षा, अधर्म, हानि।

प्रश्न 4. पाठ के आधार पर जोड़ी बनाइए-

रण	-	दर्शन
युद्ध	-	रथ
मार्ग	-	सिर
धर्म	-	नीति
दस	-	कला

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-

धर्मनीति, प्रतिदिन, आत्मशक्ति, राम-रावण।

प्रश्न 6. निम्नलिखित अनुच्छेद में यथास्थान उचित विराम चिह्न लगाइए-

चरित्र का अर्थ है आचरण या चाल-चलन यहाँ आचरण का अर्थ है सद्गुणों का भंडार

जिस व्यक्ति के व्यवहार में सत्य न्याय प्रेम मानवता करुणा दया अहिंसा त्याग आदि गुण एकत्र हो जाते हैं वह चरित्रवान कहलाता है यहाँ चरित्र की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है किस बल पर पाण्डव कौरवों पर भारी पड़े किस बल पर वनवासी राम ने लंकापति रावण को परास्त किया

प्रश्न 7. क. महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥

ख. नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना। केहि विधि जितब बीर बलवाना।

(अ) उपर्युक्त छंदों के चरणों में मात्राएँ पहचानकर छन्द का नाम लिखिए।

यह भी जानिए

अनुप्रास अलंकार में एक ही अक्षर/ वर्ण की बार-बार (एक से अधिक बार) आवृति होती है। यह आवृति (दुहराना) शब्दों के प्रारंभ या अन्त में हो सकती है।

शब्द के प्रांरभ में - दाख दुखी मिसरो मुरी (द, म)

शब्द के अन्त में - सौरज धीरज तेहि रथ चाका। (ज)

(ब) इस पाठ में से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 8 निम्नलिखित शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए-

धीरज	----------------	ईस	----------------
सौरज	----------------	बुधि	----------------
सील	----------------	ताकत	----------------
छमा	----------------	जम	----------------

धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।

इस पंक्ति में भालू और वानरों को काल के समान बताया है। जब हम किसी वस्तु का वर्णन करते समय उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी तुलना करते हैं, तब उपमा अलंकार होता है। इसमें दो वस्तुओं की समता रूप, रंग तथा गुण में की जाती है, जैसे माधवी का मुख चन्द्रमा के समान सुंदर है।

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं उपमेय, उपमान, साधारण धर्म एवं वाचक।

उपमेय - जिसकी तुलना की जा रही है। (जैसे-मुख)

उपमान – जिससे तुलना की जा रही है। (जैसे–चन्द्रमा)

साधारण धर्म – वह गुण जिसकी बराबरी की गई है (जैसे–सुन्दर)

वाचक – वह शब्द जिसके द्वारा समानता बताई गई (जैसे–समान, सम)

उत्प्रेक्षा अलंकार – जब उपमेय में भिन्नता जानते हुए भी उपमा की सम्भावना की जाती है उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मनु, मनहु, मानो, जनु, जान हु, जानो, निश्चय, मेरे जाने, इव, ये शब्द या इनके पर्याय उत्प्रेक्षा के 'वाचक' शब्द हैं। उदाहरण – मानहुँ सपच्छ उड़ाहि भूधर वृंद नाना बान ते।

रूपक अलंकार – जहाँ एक वस्तु (उपमेय) दूसरी वस्तु (उपमान) में दिखाई जाए वहाँ रूपक अलंकार होता है। उपमा में जहाँ समानता होती है वहीं रूपक में एकरूपता होती है। उदाहरण – जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं। इसमें राम को सिंह तथा रावण को मतवाला हाथी निरूपित किया गया है।

प्रश्न 9. पाठ में आए उपमा, उत्प्रेक्षा तथा रूपक अलंकारों के अन्य उदाहरण छाँटकर लिखिए।

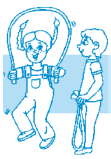

योग्यता विस्तार

1 श्रीराम द्वारा बताए गए धर्म रथ के उपांगों को सुन्दर अक्षरों में लिखकर प्रदर्शित कीजिए।

2 इस पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

3 'आत्मबल सभी बलों में श्रेष्ठ है' इस कथन पर परिचर्चा कीजिए।

4 संत तुलसीदास जी की अन्य रचनाओं (ग्रथों) की सूची बनाइए तथा उनके प्रसिद्ध पद तथा नीति दोहों का संग्रह कीजिए।

धर्मयुद्ध बाहरी जीत के लिए नहीं होता।

पाठ-19

बहादुर बेटा

आइए सीखें: ● सेवा भाव, त्याग, समर्पण, देश और समाज के प्रति प्रतिबद्धता ● योजक चिह्न ● पर्यायवाची शब्द ● उपसर्ग ● प्रत्यय ● मुहावरे बनाना उसके अर्थ समझना।

*(**पाठ का सार:** प्रस्तुत एकांकी में संकट के समय सहयोग करने की भावना को परिलक्षित किया गया है। कुलदीप और संदीप दो भाई अपनी बहन मधुर और माँ के साथ रहते हैं। स्कूल में कुलदीप को पता चलता है कि तूफान के कारण वर्षा होने से नदियों में बाढ़ आ गई है। यह सूचना माँ को देकर वह साथियों के साथ धन आदि संग्रह करने चला जाता है। उधर संदीप नदी में बाढ़ में फँसे लोगों को, अपनी जान की परवाह न करते हुए बचाता है। एक स्थान पर वह स्वयं नदी में डूबते-डूबते बचता है। इस प्रकार एकांकी परोपकार की भावना को रेखांकित करता हुआ मानवता की सेवा करने वाली संस्था 'रेडक्रास' का परिचय कराता है।)*

पात्र परिचय

माँ	:	
संदीप	:	बड़ा बेटा
कुलदीप	:	छोटा बेटा
मधुर	:	बेटी
एक युवक डॉक्टर और एक युवती	:	दोनों रेडक्रास के सदस्य
एक युवक	:	संदीप का मित्र

(मंच पर एक साधारण से घर में एक कमरा। मधुर बैठी पढ़ रही है। बीच-बीच में कार्नस पर रखी घड़ी को देख लेती है। उसी समय माँ अंदर से आती है।)

कुलदीप : माँ, माँ, तुमने सुना?

मधुर : तुम अब तक कहाँ थे कुलदीप ?

माँ : हाँ आज इतनी देर कैसे हो गई ?

शिक्षण संकेत : ■ पाठ प्रारंभ करने के पूर्व एकांकी की कथावस्तु कहानी के रुप में सुनाएँ। ■ अभिनय के साथ-साथ बच्चों से संवाद सुनें, पढ़वाएँ। ■ संवाद में उतार-चढ़ाव की स्थिति स्पष्ट करें।

कुलदीप : तुमने सुना नहीं माँ। बहुत बुरी हालत है।

माँ : किसकी बुरी हालत है? क्या हुआ ?

कुलदीप : माँ, तुम सुनती तो हो नहीं। बड़े जोर का तूफान आया है। नदियों में बाढ़ आ गई है। स्कूल में मास्टरजी कह रहे थे, गाँव के गाँव बह गए। सैकड़ों आदमी मर गए। जानवरों का तो कहना ही क्या ? मकान गिर पड़े। बस चारों तरफ हाहाकार मचा है। मास्टरजी ने कहा है कि हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए, वहाँ जाना चाहिए। उनको कपड़े और पैसे देने चाहिए। (तेजी से बोलता चला जाता है)

माँ : तू तो बेटा, एक साँस में इतनी बात कह गया कि मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया। सुना तो मैंने भी है कि जोर की बाढ़ आई है, पर इतना नुकसान हो गया, यह किसी ने नहीं बताया था।

मधुर : चर्चा तो आज हमारे स्कूल में भी हो रही थी पर ऐसी कोई बात मैंने नही सुनी कि इतना नुकसान हुआ ।

कुलदीप : तुमको कुछ पता भी है ? इतने जोरों का तूफान आया कि नदी का सारा पानी गाँव में भर गया और अभी भी नदी बढ़ रही है। कल तक यहाँ भी बुरी हालत होने वाली है। इसलिए यह हुक्म हुआ है कि जो कोई जो कुछ भी कर सके, करे। जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, वे वहाँ जाकर लोगों को बचाने का काम करें। जो धनी हैं वे धन दें, जिनके पास अनाज है वे अनाज दें। कपड़े हैं, कपड़े दें.....

माँ : हाँ, हाँ, यह तो होना ही चाहिए। मेरे पास पैसा तो नहीं है लेकिन जो कुछ हो सकता है वह अवश्य करूँगी। कहाँ भेजना है पैसा?

कुलदीप : वह तो लेने वाले यही आ जाएँगे। लेकिन मैं जा रहा हूँ।

मधुर, माँ: (एक साथ) तू कहाँ जा रहा है ?

कुलदीप : लोगों को बचाने ।

माँ : (हँसकर) तेरे विचार बहुत अच्छे हैं। लेकिन तू इतना छोटा है कि उनको क्या बचाएगा। खुद वे लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जाएँगे।

मधुर : काम करने को तो यहाँ भी बहुत हैं। चाहो तो तुम घर पर जाकर चंदा इकट्ठा कर सकते हो।

कुलदीप : वह तुम करना। मैं घर पर नहीं बैठ सकता।

माँ : अच्छा, अच्छा, पहले तू रोटी खा ले। और हाँ, संदीप अभी तक क्यों नहीं आया। कहीं वह भी........

मधुर : हाँ, माँ, वह जरूर चले गए होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें किया करते हैं-मैं कुछ करना चाहता हूँ, मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। मेरे देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण दिए थे। अपना सब कुछ लुटा दिया था। अब मुझे भी तो कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।

हाहाकार- रोने की ऊँची आवाजें।

(सहसा एक युवक का प्रवेश)

युवक : संदीप का घर यही है।

सब : (एक साथ) हाँ, हाँ, यही है। क्या बात है ?

युवक : मैं आपको यह बताने आया हूँ कि संदीप बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिए चला गया है।

माँ : (घबराकर) क्या ?

मधुर : तो भैया चले ही गए।

युवक : लेकिन आप कोई चिंता न कीजिए। (तेजी से कहकर लौटता है।)

माँ : सुनो तो बेटा, सुनो। कितनी देर हो गई उसे गए।

युवक : वह तो सुबह ही चले गए थे लेकिन मैं आपको जल्दी खबर नहीं दे सका।

(तेजी से चला जाता है।)

मधुर : मैं जानती हूँ। यह सब सुनकर वह रुक ही नहीं सकते थे।

कुलदीप : लेकिन मुझे तो रुकना पड़ेगा। बहुत बुरे हैं। सब कामों में वही आगे रहते हैं।

माँ : (हँसकर) वह बड़ा जो है। मुझे खुशी है कि वह ऐसा है। बिल्कुल अपने पिता पर गया है। जिंदगी भर वह भी यही करते रहे। कभी चैन से नहीं बैठे।

मधुर : और अब भैया भी नहीं बैठेंगे। अच्छा ही है, पिताजी का काम कोई तो करे। (एकदम) माँ!

(सहसा रुक जाती है। माँ तब तक जैसे ध्यानस्थ हो गई हैं और धीरे-धीरे बोल रही हैं।

माँ : हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है? कब दूर होगी ये परेशानियाँ। कितना बलिदान चाहता है तू? हे भगवान! तू मेरे बच्चे की रक्षा करना। वह खूब सेवा करे। पर... पर...

मधुर : (माँ को झकझोरकर) माँ, माँ, तुम कहाँ खो गई? क्या सोचने लगीं। हमें कुछ करना चाहिए। चलो, हम दोनों घर-घर से अनाज और धन इकट्ठा करें। और हाँ, बाढ़

पीड़ितों के लिए खाने की जरूरत भी तो होगी।

कुलदीप : खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टरजी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगवा दिए हैं। माँ मैं जाता हूँ। स्कूल में वालंटियरों की जरूरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ।

माँ : क्यों नहीं कर सकता ? तू भी जा लेकिन एक बात का ध्यान रखना, नदी के पास मत जाना।

कुलदीप : मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा ? वह तो खुद ही हमारे पास आ गई है। (हँसकर) अच्छा, मैं चला।

माँ : लेकिन खाना तो खाता जा।

कुलदीप : नहीं, नहीं, देर हो जाएगी। वहीं कुछ खा लूँगा।

(तेजी से चला जाता है। बाहर शोर उठता है। माँ खिड़की से झाँकती है।)

मधुर : देखो, देखो, माँ कितने लोग इधर ही चले आ रहे हैं। और वह देखो ट्रक भी आ रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये बाढ़ पीड़ित गाँवों से लोगों को निकाल कर ला रहे हैं। क्यों माँ, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं।

माँ : क्या ही अच्छा हो यदि सभी ऐसा कर सकें। इससे तो बहुत सारी समस्याएँ खत्म हो जाएँगी। पता नहीं सरकार क्या करेगी? लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवाकार्य में लग गए। भगवान उनकी रक्षा करें।

मधुर : जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी रक्षा करते हैं।

माँ : हाँ, करते तो हैं।

(सहसा माँ फिर ध्यानस्थ हो जाती है। और वहीं बैठ जाती है। मधुर उसे फिर झकझोरना चाहती है लेकिन सहसा रुक जाती है। जैसे दूर कहीं से संगीत का मधुर स्वर उठता है। वह चारों और देखती है। तभी एक युवती वहाँ आ जाती है। उसके वस्त्रों पर रेडक्रास का चिह्न लगा हुआ है।)

युवती : क्या संदीप जी का मकान यही है?

मधुर : जी।

माँ : (आँखें खोलकर) संदीप, कहाँ है संदीप ? कैसा है वह ?

युवती : आप शायद उनकी माँ हैं। चिंता न कीजिए। कोई विशेष बात नहीं है।

मधुर : लेकिन आप कौन हैं?

शिक्षण संकेत : ■ प्राकृतिक आपदाएँ आने पर किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कक्षा में चर्चा करें।

युवती : मैं रेडक्रास की सदस्या हूँ। बाहर मेरे बहुत से साथी हैं। हम सब लोग बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने के लिए गए हुए थे। आपके पुत्र संदीपजी ने वहाँ बहुत काम किया। अपने प्राणों की चिंता किए बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनका साहस देखकर हम लोग दंग रह गए। हमारे मना करने पर भी उन्होंने जरा आराम नहीं किया। लेकिन अचानक ....

माँ और मधुर : (एक-साथ) अचानक क्या हुआ? बोलती क्यों नहीं? उन्हें क्या हुआ?

युवती : आप घबराइए नहीं, मैं बता रही हूँ। लोगों को बचाते-बचाते अचानक उनकी नाव उलट गई। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की मदद की। जब तक सबको दूसरी नाव में नहीं चढ़ा दिया, तब तक वह नहीं चढ़े। और जब चढ़ने लगे तब सहसा पानी का बड़े जोर का रेला आया और वह बह गए।

माँ : (चीखकर) हाय राम !

युवती : (शीघ्रता से) नहीं, नहीं, दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्र बचा लिया। कठिन परिश्रम के कारण वह बेहोश हो गए हैं लेकिन हमने उन्हें फर्स्ट-एड दे दी है। बहुत जल्दी ही वह ठीक हो जाएँगे।

मधुर : वह हैं कहाँ ?

युवती : बाहर। गाड़ी में। आप मेरे साथ आइए उन्हें अंदर ले आएँ।

(सब तेजी से चले जाते हैं। मधुर एकदम लौटती है और पलंग बिछाती है। फिर बाहर की ओर भागती है। तभी वे सब संदीप को लाकर पलंग पर लिटा देते हैं।

युवती : (युवक को दिखाकर) यह हमारे डॉक्टर हैं। इन्होंने अच्छी तरह देख लिया है। डर की कोई बात नहीं है। अभी दो क्षण में इन्हें होश आ जाएगा।

युवक : मैं अभी एक और इंजेक्शन लगा देता हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है। आपका बेटा बहुत बहादुर है।

मधुर : और आप लोग कम बहादुर हैं !

(इसी बीच में युवक संदीप को इंजेक्शन लगाता है। माँ संदीप के ऊपर झुकी हुई है। बार-बार उसके चेहरे को छूती है। मधुर कभी भैया की ओर देखती है, कभी रेडक्रास के सदस्यों के बैज को देखती है। तभी कुलदीप भागा हुआ आता है।

कुलदीप : माँ, माँ, मैंने सुना है...... (एकदम देखकर) अरे, यह तो भैया आ गए। क्या हुआ है इन्हें, और ये कौन हैं?

शिक्षण संकेत : ■ रेडक्रास संस्था के बारे में विस्तार से जानकारी दें।

मधुर : बाढ़ पीड़ितों को बचाते भैया स्वयं नदी में गिर गए। इन लोगों ने उन्हें बचाया है।थक गए हैं और कोई खास बात नहीं है।

युवक : बस, इन्हें होश आ रहा है। लेकिन आप लोग इनसे ज्यादा बातें मत कीजिए। शाम तक चुपचाप पड़े रहने दीजिए। रात को मैं आकर देख जाऊँगा।

माँ : हे भगवान! इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं।

संदीप : (आँखें खोलकर) मैं, मैं, कहाँ हूँ ?

युवक : अपने घर में हो। यह तुम्हारी माँ है, बहन है, भाई है। और हम तुम्हारे साथी।

संदीप : ओह! तुम हो डॉक्टर। मुझे इतनी ही याद है कि जैसे मैं डूब गया हूँ और फिर कोई अंतरिक्ष में से आकर बचा रहा है। वह तुम थे।

युवती : संदीप बाबू आप बोलिए नहीं। एक-दो दिन आराम कीजिए।

संदीप : बहुत अच्छा डॉक्टर! आपकी आज्ञा का पालन होगा। (सब हँस पड़ते हैं)

युवक और युवती : (एक साथ) अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए।

माँ : नहीं, नहीं ऐसे नहीं। बिना मुँह मीठा किए तुम नहीं जा सकते। अरे, मधुर ..... लो वह तो अंदर चली भी गई। शायद चाय बना रही होगी।

युवक : माँ, हमें तो आज्ञा ही दीजिए।

कुलदीप : समझ लीजिए, भैया को अभी होश नहीं आया है। बस पाँच मिनिट लगेंगे।

(सब हँसते हैं। वह भी अंदर चला जाता है।)

माँ : आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी तो अवसर दिया कीजिए।

युवती : हम भी तो आपके ही हैं। और फिर आपने कम सेवा की है?

(दोनों मुस्कुराते हैं और अंदर से मधुर, कुलदीप चाय का सामान लेकर आते हैं। पर्दा गिरने लगता है।

- विष्णु प्रभाकर

लेखक परिचय : विष्णु प्रभाकर का जन्म 1912 में मीरनपुर, जिला मुजफ्फरनगर उत्तरप्रदेश में हुआ था। आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी और रिपोर्ताज में रचनाएँ की हैं। इनकी रचनाएँ रोचक होने के साथ-साथ संवेदन शील भी हैं। उपन्यासों में 'ढलती रात', 'स्वप्नमयी', कहानी संग्रहों में 'आदि और अंत', 'संघर्ष के बाद', तथा एकांकी संग्रह 'डॉक्टर', 'प्रकाश' और परछाइयाँ हैं।

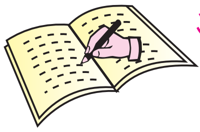

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

हाहाकार	--------------	ध्यानस्थ	--------------
वालंटियर	--------------	रेडक्रास	--------------
फर्स्ट एड	--------------	बैज	--------------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए -

क. संदीप और कुलदीप को घर आने में देर क्यों हो गई?

ख. नदियों में बाढ़ आ जाने से क्या-क्या हानि होती हैं?

ग. रेडक्रास के सदस्य क्या कार्य करते हैं?

घ. संदीप पानी में कैसे बह गया था?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. संदीप और कुलदीप को परोपकार की सीख कैसे मिली?

ख. संदीप द्वारा किए गए बचाव कार्य को युवती ने किस तरह बताया? लिखिए।

ग. बाढ़ पीड़ितों को क्या-क्या आवश्यकताएँ होती हैं? उन्हें किस तरह सहयोग दिया जाता है?

घ. इस एकांकी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

ङ. बहादुर बेटा किसे कहा गया है और क्यों ?

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों में कौन, किससे कह रहा है -

''हाँ, माँ वह जरूर चले गए होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें किया करते हैं। मैं कुछ करना चाहता हूँ मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। मेरे देश में हजारों लोगों ने अपने प्राण दिए थे। अपना सब कुछ दिया था। अब मुझे भी तो कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।''

''खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टरजी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगाए हैं। माँ मैं जाता हूँ। स्कूल में वालंटियर की जरुरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ।''

"आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी तो हमें भी सेवा का अवसर दिया कीजिए।"

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. इस पाठ से योजक चिह्न वाले शब्द (जैसे धीरे-धीरे) छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में से अनुस्वार और अनुनासिक वाले शब्द अलग-अलग लिखिए-

गंगा, माँ, पाँच, वंचित, हूँ, माँगने, पांडव, शांत, बाँध, संहारक, संसार, जाऊँगा।

प्रश्न 3. उदाहरण के अनुसार 'हृदय' तथा 'आँख', 'कान' शब्द से मुहावरे बनाइए तथा उनके अर्थ लिखिए-

हृदय

लगाना	- हृदय लगाना	- प्रेम करना
टूक-टूक होना	-	
भर आना	-	

आँख

तारा	- आँखों का तारा	- बहुत प्यारा
गिरना	-	
अंधा	-	
धूल झोंकना	-	
खुलना	-	

कान

खाना	- कान खाना	- शोर मचाना
कच्चा होना	-	
पकड़ना	-	
भरना		

प्रश्न 4. नीचे बनी आकृति में से निम्नलिखित शब्दों के 3-3 पर्यायवाची शब्द पहचानकर लिखिए-

जाह्नवी	-	....	रात्रि	-	....
जननी	-	....	सूर्य	-	....

गं	मा	ता	सु	र
भा	गा	माँ	र	वि
गी	अ	र	स	स
र	म्बा	ज	रि	वि
थी	नि	नी	भा	ता
शा	या	मि	नी	नु

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

लाज – तज – धीर

सूरज – भीख – माता

प्रश्न 6. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय पहचानकर अलग कीजिए-

गाड़ीवान, अपरिचित, प्रकाशित, प्रशंसनीय, रथवान, संहारक, बेकरार, मातृहीन, दयालु, सुशोभित।

प्रश्न 7. नीचे कुछ वाक्य/अनुच्छेद लिखे हैं, उनमें विराम चिह्न नहीं हैं, आप यथा-स्थान विराम चिह्न लगाकर उन्हें पुनः लिखिए-

(क) काश मैं उसे समझ पाता तो मैं उसके पास इस काम के लिए कभी नहीं जाता

(ख) रेखा पूनम सुनीता और राधा बगीचे में घूम रही हैं

(ग) जीवन में सुख दुख लाभ हानि तो लगे ही रहते हैं हमें इनकी कभी चिन्ता न करनी चाहिए

(घ) गीता में कहा है कर्म करो परन्तु फल की इच्छा मत करो

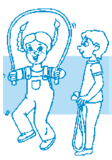

योग्यता विस्तार

1. आपके शहर या ग्राम की नदी में बाढ़ आ जाए तो आप किस प्रकार सहयोग करेंगे?
2. परोपकार संबंधी अन्य कोई एकांकी खोजकर शाला के वार्षिक उत्सव में मंचन कीजिए।
3. रेडक्रास संस्था के उद्देश्य और कार्यों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

सेवा से आत्मसंतुष्टि मिलती है।

पाठ-20

नन्हा सत्याग्रही

आइए सीखें : ● स्वाभिमान को जीवन में आत्मसात करना ● "अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है" उक्त पंक्ति का जीवन में महत्व ● प्रत्यय एवं क्रिया के रूपों की पहचान। अनुस्वार और अनुनासिक मुहवरे-वाक्य प्रयोग

*(**पाठ परिचय**- प्रस्तुत कहानी में एक बालक गांधी जी के बताये मार्ग पर चलते हुए पुलिस अधिकारी के एक गलत व्यवहार का शिकार होता है। वह अपनी माँ, अपने पड़ोसियों के अनेक बार समझाने पर, पुलिस अधिकारी के रौब दिखाने पर भी अपने निश्चय पर अटल रहता है। अंत में पुलिस अधिकारी को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ती है। बालक बस चाहता भी यही था।)*

बात जरा-सी थी पर मोहन था कि रोये चला जा रहा था। समझा-समझाकर थक गए कि बड़े छोटों को पीटते चले आए हैं, अगर 'पुलिस चाचा' ने उसके एक चपत लगा भी दी तो क्या हो गया? कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा उस पर? बड़े हैं, पड़ौसी हैं, प्यार भी करते हैं, अच्छे-बुरे में काम भी आते हैं। पर वह अब रोते-रोते मुँह बिसूरने लगा था, उसकी हिचकियाँ बँध गई।

"अरे भाई, बड़े हैं, जरा जल्दी होगी, किसी ने उन्हें नहीं टोका। एक तुम्हीं उनके आड़े आ गए।"

"क्योंकि उनकी गलती थी। बड़ों ने नहीं टोका उन्हें और मैंने टोक दिया, तो मुझे पीट दिया, क्यों? कोई बड़ा उन्हें रोकता-टोकता तो क्या वह उसे चाँटा जड़ देते? नहीं तो, मुझे इसलिए पीट दिया कि मैं बच्चा हूँ, छोटा और कमजोर हूँ... ।"

लोग भी तरह-तरह की बातें कर रहे थे-

"लड़का जिरह किये जाता है, इसे कौन समझाए?"

"रोता है, रोने दो - कब तक रोएगा?"

"अभी थककर आप चुप हो जाएगा।"

"चलो जी, चलो.... सब-इंस्पेक्टर साहब आप भी चलें..... सुबह-ही-सुबह रोनी सूरत

शिक्षण संकेत : ■ कहानी के प्रेरक प्रसंग पर चर्चा करते हुए गांधी के सत्य बोलने एवं दृढ़ निश्चयी होने के उदाहरणों पर चर्चा करें ■ संकल्प एवं दृढ़ इच्छा शक्ति से बने महान महापुरुषों के बारे में बताएँ।

सामने पड़ी। छुट्टी का दिन न बिगड़ जाए।'' इतना कह–सुनकर दूध की दुकान के आगे खड़े लोग बिखर गए। दूध खत्म होने पर दूधवाला भी बूथ बन्द कर चला गया। पर वह वहीं खड़ा रोता रहा–रोता रहा; टस से मस न हुआ। सूरज की किरणें चमकने पर भी जब वह घर न पहुँचा तो उसकी माँ ने इधर–उधर पूछा। पड़ोस के गुल्लू ने सारी बात बतलाई। सुनकर माँ उस बूथ के पास गई, तो वह उनसे लिपट गया। हिचकियाँ भरकर रोने लगा। माँ ने भी वही कहा जो सबने कहा था। ''अरे बेटा! बड़े हैं, बाप बराबर, तनिक चपतिया दिया तो क्या हो गया? कौन तीर तान दिया? चुप भी हो जा अब।''

''मार दिया तो कुछ नहीं, बड़े हैं, और मार दें, पर मेरा कसूर तो बताएँ। बप्पा को कारखाने में यूनियन वालों ने मारा; वे अस्पताल में पड़े हैं। उनका कोई कसूर होगा, पर मुझे क्यों मारा। मेरी क्या गलती थी? क्या कसूर था?''

''अब जिद मत कर, तूने दूध भी नहीं लिया...... तेरे बप्पा को अस्पताल नाश्ता देने जाना है, तुझे याद नहीं?''

''मैं नहीं जाऊँगा। कहीं नहीं जाऊँगा। जाऊँगा तो पुलिस चाचा के घर।''

''मान भी जा बेटे, मैं उनसे कह दूँगी कि आगे से ऐसा सुलूक न करें बच्चों के साथ।''

''पर जो दो चाँटे मुझे जड़ दिए, उनका क्या?''

''उनका क्या? अब चुप भी हो ले, नहीं तो मैं भी लगा दूँगी, चल''

''तो तुम भी क्यों चूको, लगा दो''

''मैं कहती हूँ, घर चल। अस्पताल जाना है, अब उठ भी।''

''मैं नहीं आता, पुलिस चाचा के घर जाकर पूछूँगा उनसे कि मेरा कसूर बताओ।''

''नहीं आता तो बैठ यहीं।'' इतना कह माँ सिर पर पल्ला ढँककर वहाँ से चल दी।

ट्रिन.... ट्रिन .... ट्रिन घंटी सरसराई। थोड़ी देर बाद दरवाजा खोला तो पाया– भीगी आँखें लिए, सामने मोहन खड़ा है। उसे देखकर शेरसिंह सकपकाए।

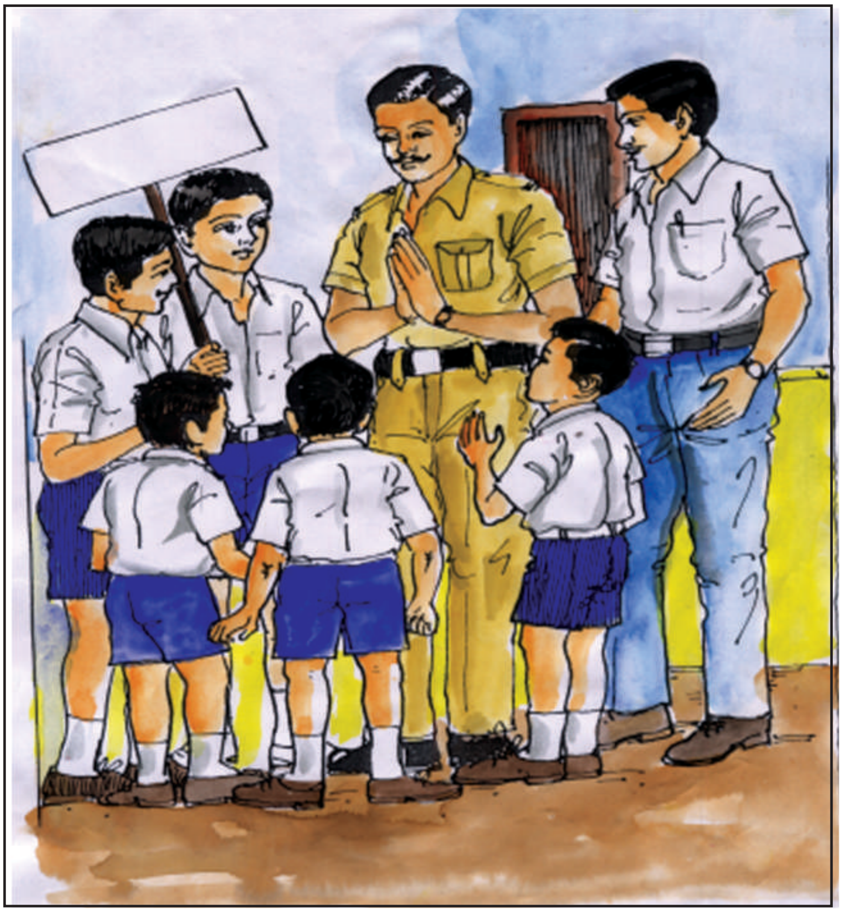

''चाचा आपने मुझे क्यों मारा? मेरा कसूर क्या था?'' सुबकते हुए उसने वही सवाल पूछा।

''किसने मारा? किसको? मैं कुछ नहीं जानता।''

''आपने मारा मुझे। आखिर क्यों मारा?''

''जा, मारा तो मारा। दफा हो जा यहाँ से, नहीं तो और पिट जाएगा। चल खिसक।'' वह गरजे।

''मारो.... और मारो, पर मैं नहीं जाऊँगा, जब तक आप यह नहीं बताएँगे कि मेरा कसूर क्या था....'' वह भी कड़ककर बोला। अब आसपास के घरों की मुँडेरों से दस-पाँच चेहरे उभर आए। देखा, बरामदे के सामने मुँह बिसूरता मोहन खड़ा है और अपने बरामदे में झल्लाए शेरसिंह।

''जाएगा भी यहाँ से, या दो-एक चपत खाकर ही टलेगा।''

''आप जो चाहें करें। जब तक मेरा कसूर नहीं बताएँगे, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।''

''अजीब उजड्ड-ढीठ लड़का है।'' एक पड़ोसी ने कहा।

''देखिए, आप इसे समझाएँ; अगर यहाँ से दफा नहीं हुआ तो मैं इसे कोतवाली में बन्द करवा दूँगा,'' शेरसिंह गरजे।

''आप जो चाहें सो करें, पर मेरा कसूर बताएँ, जिससे मैं आगे ऐसा कुछ न करूँ कि बड़ों को मुझ पर हाथ उठाना पड़े?'' मोहन बोला।

''अभी तो बस तू इतना कर कि यहाँ से दफा हो जा। नहीं तो.....'' वह भन्नाए। ''सच, पड़ोस का लिहाज है, वरना इस बच्चू को वह सबक सिखाता कि....'' शेरसिंह कुढ़कर बोले। परसों ही वे नायक से तरक्की लेकर असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर बने थे।

''मैं सबक सीखने ही आया हूँ। आप मुझे बताएँ कि कतार तोड़ने वाले को टोकना कोई पाप है?''

''यार, इस लड़के पर कौन-सा भूत सवार है? किसी भी तरह नहीं मानता।'' इतना कहकर शर्मा जी नीचे उतरे! वर्मा जी भी साथ आए और उसे पुचकारकर दिलासा देते बोले, बहुत हो गया, बेटे मोहन। अब छोड़ो भी और घर चले जाओ।

''आप सच मानें, मेरी हेठी नहीं हुई, अगर चाचा ने पीट दिया.... और लगा दें दो-चार पर बताएँ तो कि आखिर क्यों मारा मुझे?......''

''कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी। कहा न भाई बड़े हैं।''

''बड़े तो आप सब हैं। सभी पीट दें, मैं कुछ नहीं बोलूँगा। लेकिन इतना बताए कि क्यों, सिर्फ इसलिए कि मैं छोटा हूँ, कमजोर हूँ।''

''नहीं-नहीं यह बात नहीं। तुमसे कोई बदतमीजी हुई होगी। इसलिए, बस।''

''तो यह बता दें कि क्या बदतमीजी हुई?''

''जा, जा कुछ नहीं हुआ। पीट दिया हमने, कर ले जो कुछ करना हो;'' अब शेरसिंह के भीतर बैठा पुलिसवाला बोला।

''ठीक है, तो मैं यहीं बैठा हूँ। आपके फाटक के बाहर।''

''बैठ या मर, हमारी बला से,'' शेरसिंह ने कहा। तभी उनकी घरवाली बाहर आई और उसके सामने खड़े लोगों के हाथ जोड़कर वहाँ से जाने को कहा और मोहन की बाँह थाम भीतर ले गई।

''अब बोल बेटा! क्या गजब हो गया? अगर इन्होंने एक-आध लगा भी दी, तो क्या हुआ जैसे-हमारी अमृत, वैसा तू। चल मुँह धो, कुल्ला कर और नाश्ता कर ले, उठ!''

''चाची! आपकी बात सर आँखों पर ...... पर चाचा बताएँ तो?''

''अब क्या बताएँ .... समझ ले कि गुस्सा आ गया।''

''तो बस, बाहर पाँच पड़ोसियों के सामने यही कह दें।''

''भई, तू तो बहुत जिद्दी है, इससे क्या हो जाएगा?''

''मुझे तसल्ली हो जाएगी कि मैने ठीक काम किया था।''

''मैं कहती हूँ कि तुमने गलती नहीं की, ठीक किया।''

''आपने कहा, माना ..... पर पीटा तो चाचा ने, सबके सामने।''

''अजी सुनते हो, सुबह-सबेरे क्या महाभारत रचा बैठे। कह दो कि ठीक था मोहन, बस गुस्से में पीट दिया।''

''बस, बस रहने दो अपनी भलमनसाहत। यह नाचीज मुझे अपने घर में, अपने बच्चों के सामने, अपमानित करना चाहता है,'' शेरसिंह गुर्राए।

''इसमें क्या हुआ जो हेठी होती है आपकी?''

''तुम रुको, मैं इसे अभी धक्के मारकर बाहर कर देता हूँ।'' इतना कहकर शेरसिंह आगे बढ़े।

''आप क्यों हलकान होते हैं साहब, मैं खुद ही चला जाता हूँ आपके घर से।'' मोहन ने इतना कहा और हाथ जोड़कर बाहर आ गया, पर गया नहीं। फाटक पर ही घुटनों में सिर रखकर बैठ गया।

उधर वह पुलिस की नई वर्दी पहनकर तैयार होने लगे।

''सुनिए, वह लड़का अभी तक फाटक पर डटा है, कह दो कि गुस्सा आ गया था। क्यों जगत में डंका पिटवाते हो कि बित्ते-भर का छोकरा थानेदार के दर्जे के सरकारी अफसर के दरवाजे पर सत्याग्रह किए बैठा है। कहीं अखबारवालों को भनक पड़ गयी तो तिल का ताड़ बनेगा। फिर आज गांधी जयन्ती भी है।''

''क्या कहती हो, उसके आगे गिड़गिड़ाऊँ, कहूँ कि मेरे बाप बख्शो....?'' (तभी सबको सन्मति दे भगवान, ईश्वर-अल्लाह तेरे नाम की गूँज सुनायी दी।) खिड़की से झाँका तो देखा -लड़के झंडे और तख्तियाँ उठाए प्रभात-फेरी पर निकले हैं। असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर भीतर खड़े थे और मोहन बाहर उनके फाटक पर डटा था, तभी लड़कों की टोली आ पहुँची। वहाँ अपने साथी को गठरी बना बैठे देखा, तो सब वहीं रुक गए।

''क्या हुआ?''

''मोहन यहाँ क्यों बैठा है?''

''चलो, इसे भी साथ लो, इसे भी तो एक तख्ती बनानी थी।''

''चलो मोहन, प्रभात फेरी में। यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?'' आगे वाले बड़े लड़के ने

उसकी बाँह थामकर उठाया तो देखा, उसकी आँखे सूजकर लाल हो गयी हैं और अभी भी उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।

''अरे क्या हुआ इसे?'' सभी के मुँह से निकला।

तभी एक लड़के ने जो सुबह दूध लेने आया था, सारी बात बताई और कहा कि मोहन सुबह से इस बात पर अड़ा है कि इंस्पेक्टर साहब बताएँ, उसने ऐसा क्या कसूर किया था, जो उन्होने उसे पीट दिया। सब समझाकर हार गए, पर यह यहाँ से टलता ही नहीं।

''मोहन तुम्हारी तख्ती का पन्ना कहाँ है कल तो हेकड़ी बघार रहे थे कि गांधी जी की वह बात चुनूँगा कि....।''

''वह तो यह रहा, लो पढ़ो,'' कहकर मोहन ने एक कागज आगे बढ़ा दिया। उस पर लिखा था – ''अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है।''

''ठीक है, गांधी जयंती पर गांधी जी एक बात को सही करके दिखाएँ।'' इतना बोल एक बड़े लड़के ने तिरंगा ऊँचा करते हुए जोर से कहा – ''दोस्तो, इंस्पेक्टर साहब को सफाई तो देनी ही होगी। हम सब यहीं रुकें। बोलो – महात्मा गांधी की जय।..... इंस्पेक्टर साहब, बाहर आओ....।'' आस-पास ऐसे ही नारे गूँजने लगे।

अब तो मोहल्ले भर के लोग भी वहाँ जमा हो गए। नारे गूँजते रहे। मोहन हाथ जोड़कर फाटक के आगे खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद बाबा फरीद फाटक खोलकर भीतर गए और शेरसिंह जी के साथ बाहर आए। फिर सबको स्नेह से देखते हुए बोले, ''प्यारे बच्चो! सुनो, चाचा तुमसे कुछ कहना चाहते हैं।'' इतना कहकर वे पीछे हट गए।

अब सामने शेरसिंह आए और कहने लगे, ''अच्छा बच्चो! आज सुबह मुझसे एक ज्यादती हो गई। मैं अत्याचार कर बैठा। गुस्से में मैने मोहन पर हाथ उठा दिया। कसूर मेरा ही था। मैं शर्मिन्दा हूँ।'' इतना सुनना था कि मोहन ने आगे बढ़कर शेरसिंह के चरण छुए और जोर से नारा लगाया, ''इंस्पेक्टर साहब जिन्दाबाद!''

– आलमशाह खान

लेखक परिचय : आलमशाह खान – आलम खान का जन्म 31 मार्च 1936 को उदयपुर (राजस्थान) में हुआ था। आप मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर में हिन्दी विषय के सहायक प्राध्यापक रहे तथा राजस्थान मानवाधिकार आयोग के सदस्य रहे हैं। आपके प्रकाशित कहानी संग्रह हैं – 'मीरा लोकतात्विक अध्ययन' (आलोचना), राजस्थान के कहानीकार 'एक गधे की जन्म कुण्डली', 'एक और सीता', 'परायी प्यास का सफर' आदि।

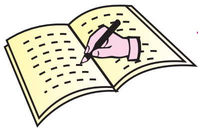

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

सलूक	----------------	बदतमीजी	----------------
दफा हो जाना	----------------	सकपकाए	----------------
नाचीज	----------------	हलाकान	----------------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में लिखिए-

क. वह 'बात जरा-सी थी' वह जरा-सी बात क्या थी जिसके कारण मोहन रोये जा रहा था?

ख. "जा, जा कुछ नहीं हुआ। पीट दिया हमने। कर ले जो कुछ करना है। अब शेरसिंह के भीतर बैठा पुलिसवाला बोला।" इस कथन में पुलिस वाले का क्या भाव है? सही उत्तर चुनकर लिखिए।

(क) घमण्ड   (ख) घृणा

(ग) क्रोध   (घ) लापरवाही

ग. मोहन के मित्रों ने उसका साथ कैसे दिया?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क इस पाठ में कुछ वाक्य ऐसे हैं जिनमें बालकों की बात पर ध्यान न देने का भाव दिया है। ऐसे चार वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए ।

ख 'लड़का जिरह किए जाता है, इसे कौन समझाए?' लोग किस आधार पर ऐसा कह रहे थे?

ग आस-पास की मुँडेरों से उभर आए चार-पाँच चेहरों ने जो देखा, उससे संबंधित पंक्तियाँ लिखिए ।

घ फरीद बाबा ने शेरसिंह को क्या-क्या कहा होगा ? जिसे सुनकर वे माफी माँगने आ गए।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. ‘चपत’ से बना है ‘चपतिया’। ऐसे ही ‘इया’ प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाइए।

प्रश्न 2. बदतमीज से भाववाचक संज्ञा बदतमीजी बनी है। नीचे लिखे शब्दों से भाव वाचक संज्ञाएँ बनाइए-

ईमानदार ------------ खराब ------------

बेईमान ------------ सफेद ------------

कमजोर ------------ चालाक ------------

प्रश्न 3. नीचे लिखे शब्द दो-दो शब्दों से बने हैं। इन सभी का दूसरा शब्द ‘आत्मा’ है। प्रथम शब्द क्या है? लिखिए-

महात्मा, धर्मात्मा, पुण्यात्मा, परमात्मा, पापात्मा।

प्रश्न 4. नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठक में अंकित मूल क्रिया का सही रूप बनाकर रिक्त स्थान भरिए।

1. स्कूल की घंटी .... । मंदिर में घंटा ....। (बजाना)
2. हम गांधी जयंती .... । बच्चे बाल दिवस ....। (मनाना)
3. प्रधानजी ने झंडा...............। अध्यापक ने झंडियाँ............। (फहराया)
4. घर में भाई ....। घर में बहन .... । (आना)

प्रश्न 5. कुछ शब्दों में से ‘ ं ’ या ‘ ँ ’ हट गये हैं। जहाँ जो जरूरी हो, वहाँ वही चिह्न लगाकर ठीक/सही कर दें-

पाच .... आख ....

डका .... तख्तिया ....

मुह .... गाधी ....

हसना .... मच ....

प्रश्न 6.'बड़ा' या 'बड़े' शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। भिन्न-भिन्न अर्थों में इसका प्रयोग कीजिये और अर्थ भी लिखिए।

प्रश्न 7. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

टस से मस न होना, पहाड़ टूट पड़ना।

प्रश्न 8.'खाना' सहायक क्रिया का विभिन्न अर्थों में प्रयोग करते हुए चार वाक्य लिखिए।

प्रश्न 9. निम्नलिखित प्रेरणर्धक क्रियाओं को अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

बनवाया, करवाना, सुनवाया, धुलवाना।

और भी जानिए-

ऐसी क्रिया, जिससे यह ज्ञात हो कि कर्ता स्वयं नहीं कर रहा है आयितु कार्य करने के लिए किसी अन्य को प्रेरित कर रहा है, वह प्रेरणर्थक क्रिया कहलाती है। जैसे-

मनू प्रांजल से पत्र लिखनाता है।

उसने मुझसे पाठ पढ़वाया।

इन वाक्यों में क्रिया का प्रयोग कर्ता द्वारा सम्पन्न होता है। किन्तु कर्ता स्वर्द किसी अन्य द्वारा सम्पन्न कराता है।

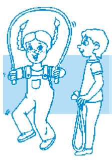

योग्यता विस्तार

1 दूध की दुकान पर क्या-क्या हुआ होगा? लिखिए ।

2. यदि आप मोहन के स्थान पर होते तो किस प्रकार प्रतिकार करते ?

3. इस एकांकी से हमें क्या प्रेरण मिलता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

सत्यमेव जयते

पाठ–21

सालिम अली

आइए, सीखें : ● पक्षी प्रेम और पक्षी संरक्षण ● प्रेक्षण और परीक्षण का महत्व ● जिज्ञासा और संकल्प की प्रेरणा ● शब्द रचना ● अनेक शब्दों के लिए एक शब्द।

*(**पाठ परिचय :** सालिम अली का पूरा नाम सालिमाई मुईजुद्दीन अब्दुल अली था। वे असाधारण पक्षी–प्रेमी थे। बयापक्षी के अध्ययन के परिणाम के प्रकाशन से उन्हें बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई। 'फिन' बया पक्षी की खोज उनकी महत्वपूर्ण देन है। उन्होंने बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स लिखी, जिसमें पक्षियों के रोचक वर्णन के साथ उनके सुन्दर चित्र भी थे। उन्होंने पक्षी प्रेमी एस. डिलन रिप्ले के साथ हैण्ड बुक ऑफ द बर्ड्स इंडिया एण्ड पाकिस्तान लिखी। सालिम अली को पक्षी संरक्षण के लिए 'जे. पॉल वाइल्ड लाइफ कंजरवेशन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें कई राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार मिले।)*

एक दस वर्षीय बालक भाग कर आया और उसने वृक्ष के नीचे से घायल चिड़िया को उठा लिया। पक्षी गौरैया जैसा लगता था मगर यह देखकर बालक को आश्चर्य हुआ कि उसके गले पर पीला धब्बा था। दुविधा में पड़कर बालक उस पक्षी को अपने चाचा अमीरुद्दीन तैयबजी के पास ले गया और पूछा कि यह किस किस्म की चिड़िया है ? उसके चाचा इस बारे में कुछ नहीं जानते थे। लेकिन वह बालक को बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के ऑफिस में ले गए

– अॅपोलो स्ट्रीट पर एक बड़े भवन में एक छोटा–सा कमरा। लड़के का परिचय डब्लू. एस. मिलार्ड से, जो सोसाइटी के अवैतनिक सचिव थे कराया गया।

मिलार्ड को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि एक भारतीय लड़का यह पूछ रहा है कि यह कौन–सी

चिड़िया है। वह उसे उस कमरे में ले गए जहाँ तरह-तरह के मरे हुए पक्षियों के शरीरों में भूसा भरकर रखा हुआ था। एक के बाद दूसरे दराज खोले गए और तरह-तरह की चिड़ियाँ दिखाई गईं। लड़के ने शायद यह कल्पना भी नहीं की थी कि पक्षी भी इतने प्रकार के होते हैं।

वह आश्चर्यचकित-सा मुँह बाये देखता रहा। मिलार्ड ने एक दराज खोला जिसमें तरह-तरह की गौरैयाँ रखी थीं। सावधानी से देखकर मिलार्ड ने एक मरा हुआ पक्षी उठाया। वह पक्षी बिल्कुल वैसा ही था, जैसा वह बालक अपने साथ लाया था। यह एक नर बया पक्षी था। वह केवल वर्षाऋतु में ही पहचाना जा सकता है जब उसके गले पर पीला धब्बा उभर आता है।

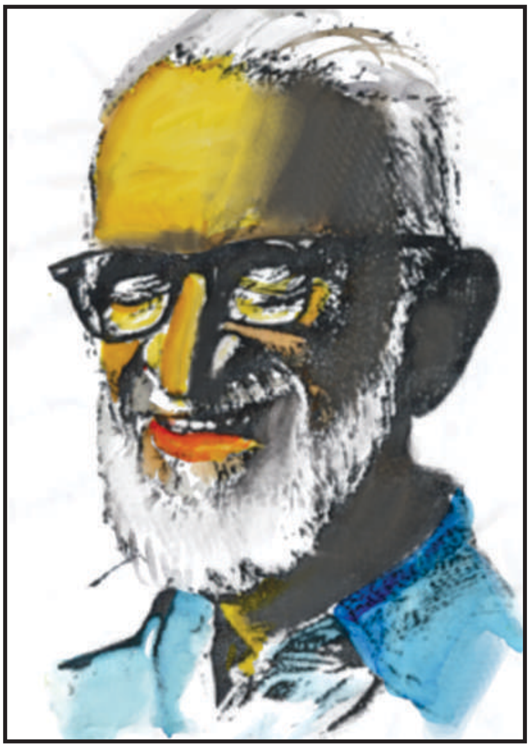

सालिम अली

लड़के ने विस्मित हो कर कहा, ''मिलार्ड, मुझे नहीं पता था कि इतनी तरह के पक्षी होते हैं। मैं इनके बारे में सीखना चाहता हूँ।'' मिलार्ड ने मुस्कराकर सिर हिलाया। उन्होंने अब तक पक्षियों के बारे में जानने के लिए इस क्षेत्र के किसी वयस्क में भी विशेष उत्साह नहीं देखा था। उसके पश्चात् यह बालक प्राय: वहाँ आने लगा। वह सीखने लगा कि पक्षियों को कैसे पहचाना जाता है, मरे पक्षी को सुरक्षित रखने के लिए उनके शरीर को कैसे भरा जाता है।

इस बालक का नाम था सालिम मुईज़ुद्दीन अब्दुल अली, जिन्हें सारा संसार असाधारण पक्षी प्रेमी सालिमअली के नाम से जानता है। उसका जन्म 12 नवम्बर सन् 1896 में हुआ था। अपनी उम्र के नवें दशक में पहुँचकर भी पक्षियों में उनकी रुचि वैसी ही रही जैसी तब थी जब वह पहले-पहल मिलार्ड से मिले थे। उन्होंने पक्षियों के संरक्षण के लिए जो योगदान दिया है उसके लिए उन्हें जे. पॉल वाइल्ड लाइफ कंजरवेशन पुरस्कार मिला है। उन्हें कई राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार भी मिले।

आश्चर्य की बात यह है कि सालिम अली के पास किसी विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं थी। यद्यपि उन्होंने कॉलेज में प्रवेश लिया था मगर बीजगणित से डर कर पढ़ाई छोड़कर भाग खड़े हुए। वह अपने भाई की बुलफ्रैम के माइनिंग में मदद करने बर्मा चले गए। लेकिन यहाँ भी वह असफल रहे। वह बर्मा के जंगलों में बुलफ्रैम के बदले पक्षियों की खोज करने लगे।

घर लौटने पर उन्होंने प्राणिशास्त्र में एक कोर्स कर लिया और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के अजायबघर में गार्ड नियुक्त हो गए। वह इसका उच्च प्रशिक्षण लेने के लिए जर्मनी गए। एक वर्ष बाद लौटने पर उन्होंने पाया कि उनकी नौकरी चली गई है और वह बेकार हो गए हैं। पैसे की कमी के कारण उनकी अनुपस्थिति में उनका पद ही समाप्त कर दिया गया था।

सालिम अली विवाहित थे और उन्हें काम की सख्त जरूरत थी। लेकिन उन्हें ज्यादा से ज्यादा क्लर्क का ही काम मिलने की उम्मीद थी। उसके बाद उन्हें अपने मन चाहे काम 'बर्ड वाचिंग' के लिए अधिक समय नहीं मिल सकता था।

सौभाग्य से उनकी पत्नी की कुछ निजी आय थी जिससे उन्हें बहुत सहारा मिला। उन्होंने बंदरगाह के पार किहीम में एक छोटा-सा घर ले लिया।

वह घर पेड़ों के बीच बना हुआ था और वहाँ बड़ी शान्ति थी। जब वर्षाऋतु आई तो सालिम अली ने देखा कि घर के पास ही बया पक्षियों ने एक पेड़ पर अपनी बस्ती बनाई है। तब बया पक्षी के बारे में लोगों को कुछ ज्यादा जानकारी नहीं थी। इन पक्षियों का अध्ययन करने का सालिम अली के लिए यह सुनहरा अवसर था। तीन-चार महीनों तक वे रोज घंटों बैठे बड़े धैर्य से इन पक्षियों को वहाँ कार्यरत देखते रहते । सन् 1930 में उन्होंने अपने इस अध्ययन के परिणाम को प्रकाशित किया तो उन्हें पक्षीविज्ञान (ऑरनिथोलॉजी) में खूब ख्याति मिली।

जो महीने उन्होंने बया पक्षियों का अध्ययन करते हुए बिताए थे। उससे उन्हें स्वयं परीक्षण और प्रेक्षण का महत्व समझ में आया और यह भी जान गए कि आँखें बंद करके किसी की बात को चाहे वह कितने भी प्रसिद्ध व्यक्ति ने क्यों न कही हो, स्वीकार नहीं करना चाहिए। वह अपने पर्यवेक्षण के परिणामों को बार-बार जाँचते थे और जल्दी किसी परिणाम पर नहीं पहुँचते थे। इससे उनके विचारों और राय को आधिकारिक माना जाने लगा है और इसी कारण कई बार उनका टकराव वरिष्ठ पक्षी प्रेमियों से हुआ।

इसका प्रसिद्ध उदाहरण है रैकेट टेल्ड ड्रोंगों में दुम के परों का निकलना। एक प्रसिद्ध पक्षीविज्ञानी ने कहा कि सालिम अली का प्रेक्षण गलत है। लेकिन अंततः सालिम अली ही ठीक निकले। उनकी फिन बया की खोज भी महत्वपूर्ण योगदान है। समझा जाता था कि 100 वर्ष से वह पक्षी विलुप्त हो गया है, मगर सालिम अली ने कुमाऊँ की पहाड़ियों में उसे खोज निकाला।

अपने बचपन में सालिम अली को भारतीय पक्षियों पर एक अच्छी पुस्तक की कमी बहुत खलती थी। जो कुछ पुस्तकें उपलब्ध थीं, उनमें चित्र ही नहीं थे और इनमें केवल उबा देने वाला विस्तृत वर्णन था। ऐसी पुस्तकें किसी का पक्षियों के प्रति उत्साह बढ़ाने के स्थान पर उसे बिल्कुल समाप्त कर देती हैं, विशेषकर बच्चों में। सन् 1941 में उन्होंने यह कमी पूरी करने

की कोशिश की और बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स लिखी। उसमें पक्षियों का रोचक और सुन्दर वर्णन भी था और प्रत्येक जाति का सुन्दर चित्र भी। किसी अजनबी के लिए भी उसे देखकर पक्षी पहचानना आसान हो जाता है। सन् 1948 में उन्होंने प्रसिद्ध पक्षी प्रेमी एस. डिलन रिप्ले के साथ एक अन्य महत्वाकांक्षी योजना पर काम आरम्भ किया। दोनों ने दस खंडों में एक पुस्तक लिखी ''हैंडबुक ऑफ द बर्ड्स ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान''। इस पुस्तक में इस उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले सभी पक्षियों के बारे में जानकारी है। उनकी आकृति, उनके पाए जाने की जगहें उनकी प्रजनन की आदतें, प्रव्रजन (माइग्रेशन) और यह भी कि उनके बारे में और क्या जानना बाकी है।

सन् 1987 में सालिम अली की मृत्यु हो गई।

– दिलीप मधुकर साल्वी

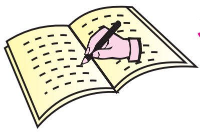

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए –

खूंखार	-------------	प्रेक्षण	-------------
पर्यवेक्षण	-------------	वरिष्ठ	-------------
विलुप्त	-------------	बुलफ्रेम	-------------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए –

(क) सालिम अली का पूरा नाम क्या था?

(ख) चाचा ने सालिम अली का परिचय किससे कराया था?

(ग) ऑपोलो स्ट्रीट पर किस सोसाइटी का कार्यालय था?

(घ) सालिम अली ने कौन-से पक्षी को खोज निकाला?

(ङ) सालिम अली को पक्षी संरक्षण के लिए कौन-सा पुरस्कार मिला था?

(च) इस पाठ में कौन-कौन सी पुस्तकों का उल्लेख है?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(क) सालिम अली ने जिस घायल पक्षी को उठाया था, उसकी पहचान मुश्किल क्यों थी?

(ख) बॉम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी में सालिम अली ने क्या-क्या सीखा?

(ग) एक भारतीय बालक द्वारा किसी पक्षी के बारे में सवाल किए जाने पर मिस्टर मिलार्ड को क्यों आश्चर्य हुआ?

(घ) सालिम अली का अन्य पक्षी प्रेमियों से टकराव होने का क्या कारण था?

(ङ) सालिम अली के पास कॉलेज की डिग्री नहीं थी परन्तु वे कौन-से गुण थे, जिन्होंने उन्हें असाधारण बनाया?

प्रश्न 4. सही जोड़ियाँ बनाइए -

(अ)	(आ)
वर्षा	घर
अजायब	ऋतु
विश्व	चिड़िया
घायल	विज्ञानी
पक्षी	विद्यालय

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

ऑफिस, अवैतनिक, विस्मित, वयस्क प्राणिशास्त्र, कॉलेज।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग लिखिए-

विलुप्त, असाधारण, सम्मान, प्रशिक्षण, अनुपस्थिति, उपयोग, सौभाग्य

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय लिखिए-

नारीत्व, राष्ट्रीय, भारतीय, विवाहित, पक्षीवाला

> 'प्राणिशास्त्र' शब्द दो शब्दों 'प्राणी' और 'शास्त्र' से मिलकर बना है। जब दो ऐसे शब्दों में संधि होती है तब पहले शब्द के अन्त में दीर्घ 'ई' की मात्रा हो तो सन्धि के बाद बने शब्द में वह मात्रा बदलकर ह्रस्व 'इ' की मात्रा हो जाती है।

प्रश्न 4. नीचे लिखे शब्द किन दो शब्दों के मेल से बने हैं? लिखिए-

अजायबघर, पक्षिविज्ञानी, महत्वपूर्ण, महाद्वीप, महत्वाकांक्षी, प्रस्तुतीकरण, प्राणिशास्त्र।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

जो बिना वेतन लिए काम करता है। ....

जो मार्गदर्शन करता है। ....

जहाँ पानी के जहाज आकर खड़े होते हैं। ....

जो पक्षियों से प्रेम करता है। ....

पक्षियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखने वाला।...

जो बात मुख से कही गई है। ....

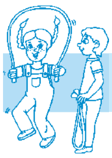

योग्यता विस्तार

अपने घर के आस-पास बाग-बगीचों में आने या रहने वाले पक्षियों को ध्यान से देखो और नीचे बना चार्ट पूरा कीजिए।

पक्षी का नाम	आकृति रंग रूप	भोजन	आदतें	प्रजनन का समय

प्रकृति और मानव समाज में परस्पर पूरकता का संबंध है।

पाठ-22

गीता का मर्म

आइए सीखें: • शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य , परोपकार, सेवा, ज्ञान पिपासा, विद्या का महत्व। •उपसर्ग, प्रत्यय, समास, सन्धि पहचानना। • निषेधवाचक वाक्यों में नहीं, मत और न का प्रयोग। • अर्थ के आधार पर वाक्यों की पहचान।

(पाठ-परिचय : प्रस्तुत कहानी में लेखक ने सच्ची एवं सही शिक्षा प्राप्त करने की ओर प्रेरित किया है। शिक्षा मात्र धनोपार्जन तथा यश प्राप्ति का साधन नहीं है वरन इसका उपयोग मानव कल्याण के लिए होना चाहिए। ज्ञान (शिक्षा) को यदि हम अपने चरित्र में भी ढाल लेते हैं तो वह अधिक सार्थक हो सकता है। इसमें लेखक ने हमें लोभ और लालच से बचने का संदेश भी दिया है।

बहुत पुरानी बात है। आनन्दपाल नाम के एक राजा थे। उनका राज्य बहुत विशाल था। वे विद्वानों का आदर भी बहुत करते थे। उनके राज्य में बड़े-बड़े विद्वान एवं शास्त्र मर्मज्ञ थे तथा दूर-दूर के देशों से भी विद्वान उनके दरबार में आते रहते थे। राजा भी उनका यथोचित स्वागत सम्मान करते थे और भेंट भी देते थे। उनके यहाँ से कोई भी विद्वान निराश होकर नहीं लौटता था।

एक बार राजा ने अपने मंत्रियों से कहा - ''मुझे श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान प्राप्त करना है। अतः आप पूरे राज्य में घोषणा करवा दें कि जो भी मुझे पूर्णरूप से गीता समझा देगा, उसे मैं अपना आधा राज्य दे दूँगा।''

मंत्रियों ने ढिंढोरा पिटवाकर पूरे राज्य के समस्त नगरों तथा ग्रामों में तथा राज्य के बाहर भी घोषणा करने को कहा। ढिंढोरा पीटकर घोषणा की गई - सुनो....., सुनो........, सुनो! हमारे महाराज को जो कोई भी गीता पूर्ण रूप से समझा देगा उसे आधा राज्य दिया जाएगा। सुनो....., सुनो........, सुनो......!

घोषणा सुनकर दूर-दूर से, बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित, ज्ञानीजन राजा के पास आने लगे। वे राजा को गीता का महात्म्य समझाते, उसके श्लोकों की विवेचना करते, अर्थ समझाते तथा अनेक उदाहरणों के माध्यम से व्याख्या करते किन्तु राजा की समझ में कुछ नहीं आता। वे सभी से यही कहते -''श्रीमान्, मैं आपके प्रवचन से सन्तुष्ट नहीं हूँ। मुझे गीता समझ में नहीं आई।''

शिक्षण संकेत : • पाठ का शुद्ध एवं स्पष्ट वाचन करें तथा बच्चों से भी करवाएँ। • गीता के विषय में चर्चा करें। • शिक्षा (ज्ञान) प्राप्ति के विभिन्न उद्देश्य समझाएँ। • चरित्र निर्माण में शिक्षा का महत्व समझाएँ।

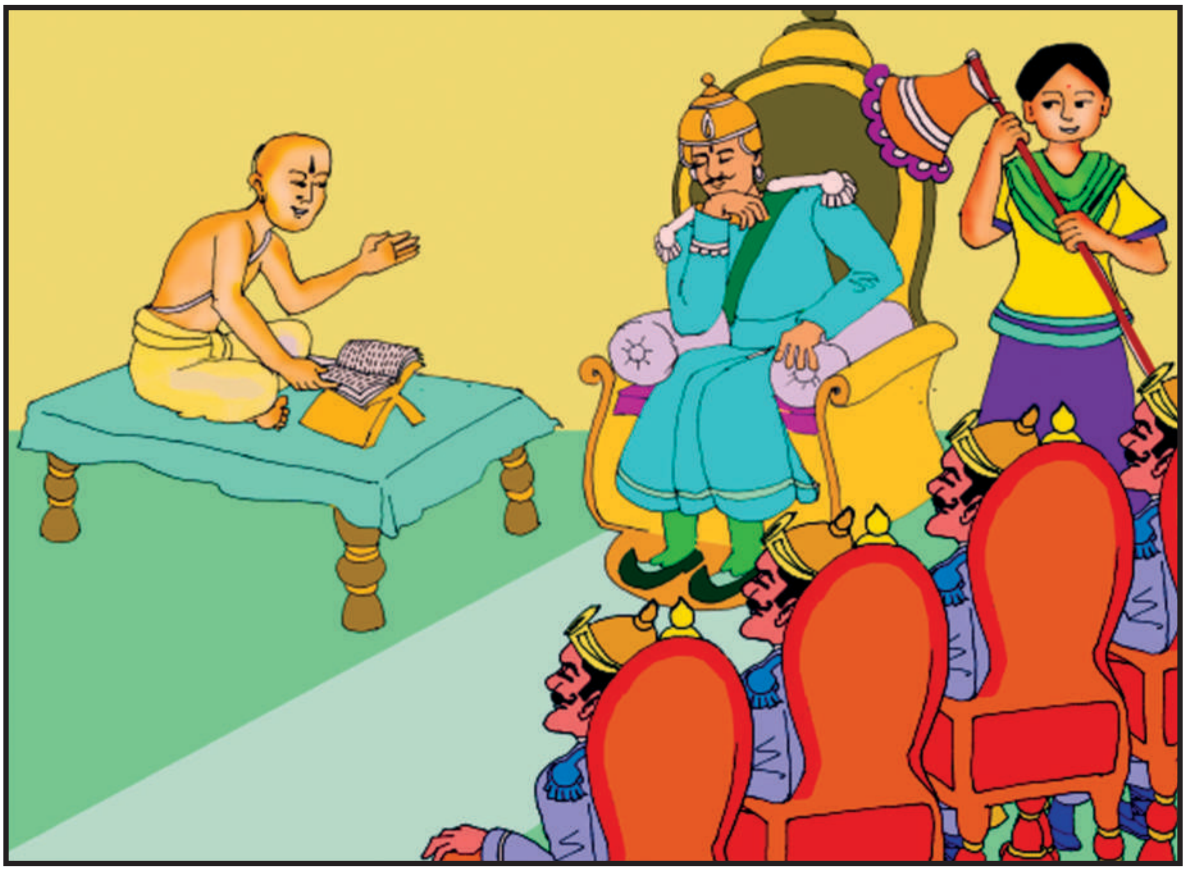

उसी समय गौवर्ण नाम का एक प्रकाण्ड विद्वान भी राजा के पास आया और बोला ''राजन्। मैं आपको गीता समझाऊँगा।'' राजा ने कहा - ''श्रीमान्, आप व्यर्थ में ही कष्ट कर रहे हैं। आज तक मुझे कोई भी विद्वान गीता का मर्म नहीं समझा पाया। आप क्या समझाएँगे ? कृपया आप मेरा और अपना समय नष्ट मत कीजिए।''

गौवर्ण ने कहा - ''कृपया मुझे एक अवसर तो दीजिए महाराज! मैं आपको अवश्य संतुष्ट कर दूँगा।''

राजा ने कहा - ''जैसी आपकी इच्छा।''

गौवर्ण ने गीता के एक-एक श्लोक का अर्थ व्याख्या सहित समझाया। 'धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे .... से प्रारम्भ कर यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः' तक पूरे सात सौ श्लोक राजा को लगभग कंठस्थ करा दिए। यद्यपि राजा की समझ में सब आ गया, किन्तु आधा राज्य न देने का लोभ व कुटिलता राजा के मन में समा गई थी। उन्होंने कहा मेरी समझ में कुछ नहीं आया श्रीमान्।'' गौवर्ण ने कहा - ''राजन्! आप लोभवश ऐसा कह रहे हैं, जबकि गीता का एक-एक श्लोक उसका अर्थ व व्याख्या आप समझ चुके हैं।'' राजा ने क्रोध भरी वाणी में कहा ''श्रीमान्, वाचालता न दिखाएँ और अपना मार्ग ग्रहण करें। मैंने आपको बताया था कि आपसे पहले भी अनेक विद्वान यह प्रयास कर चुके हैं और सभी निराश होकर यहाँ से गए

हैं। आपको भी मैंने पूर्व में ही मना किया था कि आप मेरा और स्वयं का समय नष्ट न करें।''

गौवर्ण ने कहा - ''महाराज। आप असत्य भाषण न करें। गीता की एक-एक बात मैं आपको गहराई से समझा चुका हूँ।''

राजा ने कहा - ''असत्य भाषण मैं क्यों करूँगा? यह तो आप ही हैं जो मेरा आधा राज्य पाने के लालच में ऐसी बातें कर रहे हैं। मुझे वास्तव में गीता बिल्कुल भी समझ में नहीं आई।'' गौवर्ण ने कहा -''राजन्, आपको गीता समझ में आ चुकी है पर आप अपने दिए हुए वचन से पीछे हट रहे हैं।'' इस प्रकार विवाद बढ़ता गया। इसी समय वहाँ महायोगी विशाख भी आ पहुँचे। दोनों ने उनसे मध्यस्थता करने की प्रार्थना की।

योगीराज विशाख ने राजा आनन्दपाल से पूछा- ''राजन्, क्या आप गीता को समझे?

राजा ने कहा -''तपोनिधि! नहीं, मैं कुछ भी नहीं समझा।'' फिर उन्होंने गौवर्ण से पूछा- ''श्रीमान्। आपने राजन् को गीता अच्छी तरह से समझा दी क्या?''

गौवर्ण ने कहा - ''हाँ, मुनिवर। एक-एक शब्द, पद व अक्षर की व्याख्या करके समझाया है।''

महायोगी विशाख गौवर्ण से बोले - ''सच तो यह है कि आपने स्वयं ही गीता का मर्म नहीं समझा अन्यथा आप आधे राज्य के लोभ के कारण इस प्रपंच में नहीं पड़ते क्योंकि गीता तो निष्काम कर्म करने की शिक्षा देती है, फल प्राप्ति की आशा से कर्म करने की नहीं। राजन् ने भी अर्थ नहीं समझा है, अन्यथा विद्वानों का मान-सम्मान करने वाले राजा का व्यवहार इस प्रकार का नहीं होता। वास्तव में दूसरे को उपदेश देने का अधिकारी वही है जो स्वयं उस पर आचरण करता हो। ज्ञान या स्वाध्याय का अर्थ हमें स्वयं को जानना है। विद्याग्रहण करने के बाद भी जिसने स्वयं को न जाना वह उसी व्यक्ति के समान है जिसके पास नक्शा तो है पर मार्ग नहीं सूझता। ज्ञान हमें रास्ता बताता है। इससे हमारी विचार शक्ति बढ़ती है और देखने की शक्ति व्यापक हो जाती है तथा मनन करने की शक्ति में वृद्धि हो जाती है। हम किसी परिणाम पर युक्तियुक्त ढंग से पहुँचने का प्रयत्न करते हैं। विद्या से विनम्रता आती है और व्यक्ति शालीन बन जाता है। मन शान्त हो जाता है, चित्त एकाग्र हो जाता है और तृष्णाओं का शमन होता है। मात्र विषयों को जानना ही सच्चा ज्ञान नहीं है, पढ़े हुए को चरित्र में ढालना ही सच्चा ज्ञान है।

इसी तारतम्य में महायोगी विशाख ने एक और प्रसंग राजा आनंदपाल तथा पंडित गौवर्ण को सुनाया। उन्होंने कहा एक बार अर्जुन देवलोक में इंद्र के पास धनुर्विद्या प्राप्त करने के लिए पहुँचे। परीक्षा में पूर्णरूपेण सफलता प्राप्त कर लेने पर इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न होकर अर्जुन से बोले - ''अर्जुन तुमने अपने परिश्रम, पुरुषार्थ और लगन से धनुर्विद्या प्राप्त कर ली है। अब जाओ और पृथ्वी को जीतकर चक्रवर्ती राज का सुख भोगते हुए यश का उपार्जन करो।''

इन्द्र की बात सुनकर अर्जुन उदास हो गए। उन्हें उदास देखकर इन्द्र बोले, - ''क्या बात है वत्स?'' अर्जुन ने विनम्रता पूर्वक कहा - ''धृष्टता क्षमा करें देव! विजय, यश और राज्य भोगने के लिए मैंने धनुर्विद्या प्राप्त नहीं की है।''

''तो फिर इस विद्या का क्या करोगे? स्पष्ट कहो'', इन्द्र ने कहा।

अर्जुन बोले-''हे देव! सत्य व न्याय की रक्षा, दुष्टों का दमन, असहायों की सहायता, नारी की रक्षा करने, निर्बल को सबल बनाने तथा धर्म की रक्षा हेतु ही मैंने धनुर्विद्या प्राप्त की है।''

इस प्रसंग ने राजा आनन्दपाल के मन में हलचल मचा दी। उन्हें लगा कि राजा के रूप में उनका कार्य जन कल्याण होना चाहिए, राज भोग की लिप्सा नहीं। उनके मन में वैराग्य भाव जाग्रत हो गया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण राजपाट गीता का मर्म सुनाने वाले पंडित गौवर्ण को देने की इच्छा व्यक्त की। उधर महाज्ञानी गौवर्ण सोचने लगे कि मैं तो पंडित हूँ, राज भोग अथवा आधे राज्य का लालच मेरे आत्मकल्याण के लिए उचित नहीं। उनके मन में भी विरक्ति पैदा हो गई और वे भी राज-पाट के मोह से मुक्त हो गए।

महायोगी विशाख ने दोनों के इस मन्तव्य पर प्रसन्नता व्यक्त की और उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि ''अब आप दोनों ही गीता के मर्म को भली-भाँति समझ गए हैं।''

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न-1 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

विशाल -	वाचालता -	प्रकांड -	पार्थ -	शास्त्र
मर्मज्ञ -	प्रयास -	मर्म -	मध्यस्थता -	धर्मक्षेत्र
महात्म्य -	प्रपंच -	तारतम्य -	चित्त	
प्रवचन -	युक्तियुक्त -	लिप्सा -	व्यापक	
कुटिलता -	धृष्टता -	मन्तव्य -	शमन	

प्रश्न-2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क. राजा ने मंत्रियों के समक्ष कौनसी इच्छा प्रकट की?

ख. राजा की घोषणा सुनकर उनके पास कौन-कौन आने लगे?

ग. गौवर्ण राजा के पास क्यों आया था?

घ. गीता में कुल कितने श्लोक हैं?

ङ. राजा के मन में कौन-सी कुटिलता समाई हुई थी?

च. दूसरों को उपदेश देने का अधिकारी कौन हो सकता है?

छ. विद्या से हममे कौन-कौन से गुण आते हैं?

प्रश्न-3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. राजा आनन्दपाल ने अपने मंत्रियों से क्या कहा और क्यों?

ख. गौवर्ण ने राजा को गीता का मर्म समझाने के लिए क्या प्रयास किया?

ग. महायोगी विशाख ने दोनों की मध्यस्थता करते हुए क्या कहा?

घ. अर्जुन ने इन्द्र से अपनी विद्या का उपयोग किन-किन के लिए करने को कहा था?

ङ. राजा आनन्दपाल के मन में किस प्रसंग को सुनकर हलचल मची और क्यों?

च. इस कहानी से आज का विद्यार्थी क्या सीख ले सकता है? अपने विचार प्रकट कीजिए।

प्रश्न-4 किसने, किससे कहा -

क. ''मुझे गीता का ज्ञान प्राप्त करना है।''

ख. ''राजन आप लोभवश ऐसा कह रहे हैं।''

ग. ''आप अपने दिए हुए वचन से पीछे हट रहे हैं।''

घ. ''धृष्टता क्षमा करें देव। विजय, यश और राज्य भोगने के लिए मैनें धनुर्विद्या प्राप्त नहीं की है।''

ङ. ''आप दोनों ही गीता के मर्म को भली-भाँति समझ गए है।''

भाषा-अध्ययन

प्रश्न-1 निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

मर्मज्ञ, ढिंढोरा, महात्म्य, प्रकाण्ड, धनुर्विधा, स्वाध्याय, तृष्णा।

प्रश्न-2 'वाचाल' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाकर नया शब्द 'वाचालता' और 'सत्य' में 'अ' उपसर्ग लगाकर 'असत्य' नया शब्द बना है। इसी प्रकार 'ता' प्रत्यय और 'अ' उपसर्ग लगाकर चार-चार शब्द लिखिए -

'ता' प्रत्यय से बने शब्द ....

'अ' उपसर्ग से बने शब्द ....

प्रश्न-3 निम्नलिखित सामासिक पदों का **समास विग्रह करते हुए उनमें निहित समास पहचानकर लिखिए -**

महापण्डित, मान-सम्मान, यथोचित, लोभवश, महाराज, देवलोक, तपोनिधि।

प्रश्न-4 निम्नलिखित शब्दों का सन्धि विच्छेद कीजिए और सन्धि का प्रकार भी लिखिए-

सम्मान, स्वागत, उत्थान, निराश, परोपकार

प्रश्न-5 दी गई **वर्ग पहेली में से राजा, इन्द्र, नारी और धनुष के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द खोजकर लिखिए-**

औरत	नृप	अर्थ	वनिता
देवराज	महिला	भूपति	चाप
वित्त	सुरेन्द्र	भूपाल	पवन
सुरपति	लक्ष्मी	धनु	शरासन

प्रश्न-6 उदाहरण के अनुसार 'नहीं', 'मत' और 'न' का प्रयोग करते हुए निषेधवाचक वाक्य (दो-दो) लिखिए—

क. 'नहीं' का प्रयोग -

उदाहरण - मेरी समझ में कुछ नहीं आया।

1. ....

2...

ख. 'मत' का प्रयोग

उदाहरण - कक्षा में शोर मत करो।

1. ....

2...

ग. 'न' का प्रयोग

उदाहरण - आप इधर न बैठें।

1. ....

2...

यह भी जानिए –

1– तो फिर इस विद्या का क्या करोगे ?''

2–अब जाओ और पृथ्वी को जीतकर चक्रवर्ती राज का सुख भोगते हुए यश का उपार्जन करो।''

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में से पहले वाक्य में प्रश्न किया जा रहा है जबकि दूसरे वाक्य से कार्य करने की आज्ञा का बोध हो रहा है।

वास्तव में हम अपने वाक्यों में कभी आज्ञा देकर कोई कार्य करवाते हैं, कभी प्रार्थना करते हैं, कभी अपने मन की इच्छाओं या भाावनाओं को प्रकट करना चाहते हैं, कभी आश्चर्य प्रकट करते हैं और कभी प्रश्न करते हैं। इस प्रकार अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद किये जा सकते हैं –

(1) विधान वाचक वाक्य (सकारात्मक वाक्य) जिन वाक्यों से किसी बात या कार्य के करने या होने का बोध होता है उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं।
जैसे – बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

(2) निषेध वाचक वाक्य– (नकारात्मक वाक्य) जिन वाक्यों से किसी बात या कार्य के न करने या न होने का बोध होता है उन्हें निषेधवाचक या नकारात्मक वाक्य कहते हैं।
जैसे – बच्चे मैदान में नहीं खेल रहे हैं।

(3) आज्ञा वाचक वाक्य – जिन वाक्यों द्वारा किसी व्यक्ति को आदेश, आज्ञा या निर्देश देकर कार्य करने को कहा या करवाया जाता है वहाँ आज्ञावाचक वाक्य होता है।
जैसे – बच्चो! मैदान में जाकर खेलो।

(4) प्रश्न वाचक वाक्य – जिन वाक्यों में वक्ता कोई प्रश्न करता है उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। ऐसे वाक्य सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार से बनाये जा सकते हैं। जैसे–

- क्या बच्चे मैदान में खेल रहे हैं ? (सकारात्मक)
- क्या बच्चे मैदान में नहीं खेल रहे हैं ? (नकारात्मक)

(5) इच्छा वाचक वाक्य – जिन वाक्यों में वक्ता (अपने लिए या दूसरों के लिए) किसी न किसी प्रकार की इच्छा प्रकट करता है उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।
जैसे – बच्चों को मैदान में खेलना चाहिए।

(6) संकेत वाचक वाक्य – जिन वाक्यों में किसी बात या काम का होना या न होना शर्त पर निर्भर करता है उन्हें संकेत वाचक वाक्य कहते हैं।
जैसे – यदि अनुमति हो तो बच्चे मैदान में खेलें।

(7) संदेह वाचक वाक्य – जिन वाक्यों से प्रायः संदेह की भावना प्रकट होती है उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।
जैसे – शायद बच्चे मैदान में खेल रहे होंगे।

(8) विस्मयादि बोधक वाक्य – जिन वाक्यों में हर्ष, विस्मय, घृणा या शोक आदि भावों का प्रयोग होता है, उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।
जैसे – अरे! बच्चे मैदान में खेलेंगे।

प्रश्न-7 अर्थ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के भेद उनके सामने लिखिए-

क. अरे! रात भूकम्प आया था। ------------------------------

ख. कल कौन आ रहा है? ------------------------------

ग. आपकी यात्रा शुभ हो। ------------------------------

घ. वह पुस्तक पढ़ो। ------------------------------

ङ. शायद आज वर्षा हो। ------------------------------

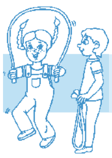

योग्यता विस्तार

1. आपका शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य क्या है? लिखिए।
2. राजा बार-बार सबसे कहता - मेरी समझ में कुछ नहीं आया।
   यह कथन आपको कैसा लगा। कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. विद्या के व्यावहारिक उपयोग पर लगभग एक पृष्ठ में भाषण तैयार कीजिए।
4. अर्जुन के विचार आपको कैसे लगे? चर्चा कीजिए।

शिक्षा का वास्तविक प्रयोजन मन, शरीर तथा चरित्र के भावों का परिष्कार करना है।

पाठ– 23

महान विभूति : दानवीर डॉ. सर हरिसिंह गौर

आइए सीखें: • लगन के साथ लक्ष्य प्राप्ति हेतु परिश्रम करने का दृष्टिकोण एवं अध्ययन के प्रति रुचि विकसित करना।• शब्दों का प्रयोग, समास, वाक्यांश के लिए एक शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय की जानकारी और अपठित गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देना।

पाठ परिचय– प्रस्तुत पाठ में डा. सर हरिसिंह गौर की यशस्वी जीवन–गाथा को उनकी लगन शीलता, परिश्रमी प्रवृति, सेवाभाव, शिक्षा निर्माता, दानशीलता और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने भाग्य का निर्माण करने वाले अनूठे व्यक्तित्व के रूप में उभारा गया है। डॉ. गौर विधि वेत्ता, प्रसिद्ध अधिवक्ता और दानवीर के रूप में अविस्मरणीय विभूति हैं। वे आज भी हम सबके लिए प्रेरणा पुँज हैं।

सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता, शिक्षाविद् एवं सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरिसिंह गौर का जन्म छब्बीस नवम्बर सन् अठारह सौ सत्तर ई. में शनीचरीटौरी, सागर (म.प्र.) में हुआ था। उनके पिता का नाम ठाकुर तख्तसिंह गौर और माता का नाम श्रीमती लाड़ली बाई था। उनके बचपन का नाम हरप्रसाद सिंह गौर था। उनका बाल्यकाल अभावों में बीता। माँ ने बड़े संघर्ष के साथ उनका पालन–पोषण किया था। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा सागर में और इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा पहले जबलपुर बाद में नागपुर में पूरी की। आगे की शिक्षा के लिए उन्होंने नागपुर के हिसलप कालेज में प्रवेश लिया। उस समय वे अंग्रेजी और अर्थशास्त्र में ऑनर्स करनेवाले पहले छात्र थे। अठारह वर्ष की आयु में वे इंग्लैण्ड चले गए, जहाँ उन्होंने डाउनिंग कॉलेज और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र तथा अर्थशास्त्र में एम. ए. और कानून की उपाधि प्राप्त की।

सन् 1892 में इंग्लैण्ड से लौटकर उन्होंने भण्डारा में सेंट्रल प्रॉविंस कमीशन में अतिरिक्त सहायक आयुक्त पद पर कार्य किया पर जल्दी ही उससे त्यागपत्र देकर वकालत आरंभ कर दी। उनका भरा–पूरा परिवार अत्यन्त सुखी रहा। उनकी पत्नी श्रीमती ओलिविया एक विदुषी महिला थीं। उन्होंने सन् 1905 ई. में डी.लिट. की पहली उपाधि लंदन विश्वविद्यालय और फिर 'ट्रिनिटी' कॉलेज डब्लिन से प्राप्त की।

सन् 1921 ई. से सन् 1936 ई.तक वे दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति रहे। इसके बाद दो वर्ष तक उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति का दायित्व सँभाला। दिल्ली एवं नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें डी. लिट. की मानद् उपाधि से सम्मानित किया। माह जनवरी सन् 1925 ई. में अंग्रेज सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में 'सर' की उपाधि प्रदान की। डॉ. हरिसिंह गौर ने चालीस वर्ष से अधिक समय तक अखिल भारतीय स्तर पर वकालत की। उन्होंने प्रिवी कौंसिल में भी कई मुकद्दमे लड़े और वहाँ भी अपनी सफलता के झंडे गाड़े। वे हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के सभापति और हाईकोर्ट बार कौंसिल के सदस्य भी रहे।

शिक्षण संकेत– पाठ का शुद्ध वाचन करते हुए बच्चों से भी शुद्ध वाचन करवाएँ। छात्रा/छात्राओं को लगन के साथ अध्ययन करने की प्रेरणा दें। मध्यप्रदेश के ऐसे ही दान–दाताओं, राष्ट्रप्रेमियों, विद्वानों की चर्चा करें।

वह अपूर्व बुद्धि और अद्भुत वाक्शक्ति वाले अधिवक्ता के रूप में प्रसिद्ध थे। उनकी अद्वितीय प्रतिभा, मौलिक सूझबूझ, तीव्र स्मरणशक्ति उनके प्रत्येक शब्द में आत्मविश्वास के साथ झलकती थी। न्यायालय में उनका परिवाद प्रस्तुत करने का ढंग ओजस्वी, अनोखा एवं रोचक होता था। डॉ. हरिसिंह गौर का गहन विश्वकोषीय ज्ञान, अनुभव और दूरदर्शिता अपूर्व थी। उनका अंग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार था। लेखन प्रतिभा से युक्त उनकी ख्याति में उस समय और भी वृद्धि हुई जब वे कानून की पुस्तकों के लेखक के रूप में सामने आए। मात्र बत्तीस साल की आयु में ही उनकी 'लॉ ऑफ ट्रांसफर ऑफ प्रापर्टी एक्ट' पुस्तक प्रकाशित हुई। इसके बाद उन्होंने 'भारतीय दण्ड संहिता की तुलनात्मक विवेचना' और 'हिन्दू लॉ' पर पुस्तकें लिखीं जो आज भी विधि की महत्वपूर्ण पुस्तकों में गिनी जाती हैं। उनके विधि क्षेत्र में अर्जित व्यापक अनुभव को देखते हुए उन्हें भारतीय संविधान सभा का उप सभापति भी चुना गया। डॉ. हरिसिंह गौर ने कानून शिक्षा, साहित्य, समाज सुधार, संस्कृति, राष्ट्रीय आन्दोलन, संविधान निर्माण आदि में स्मरणीय योगदान दिया।

वह लगभग पन्द्रह वर्ष (सन् 1920 ई. से सन् 1935 ई.) तक केन्द्रीय विधान परिषद के सदस्य भी रहे। इस अवधि में किए गए उनके कार्य ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। इनमें स्टाम्प और डाकटिकट की भारत में छपाई, अन्तरजातीय विवाह अधिनियम, देवदासी प्रथा का उन्मूलन, हिन्दू रिलीजियस और चेरिटेबल ट्रस्ट की स्वीकृति आदि प्रमुख हैं।

साहित्य के क्षेत्र में भी सारा संसार डॉ. हरिसिंह गौर का लोहा मानता है। वह इंग्लैण्ड की सुप्रसिद्ध साहित्यिक संस्था 'रायल सोसायटी ऑफ लिटलेचर' के सम्मानित सदस्य भी रहे। उपन्यास, काव्य, नाटक, निबंध, आत्मकथा आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं में उनकी कई प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनमें 'दी स्टेपिंग वेस्ट वर्ड एण्ड अदर पोएम्स', 'हिज ओनली लव' 'फैक्ट्स एण्ड फेंसिस' और 'रेमंड टाइम' प्रमुख हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिखी जो 'सेवेन लाइव्ज' (सात जीवन) के नाम से प्रकाशित हुई। उनके लेख जीवन'दर्शन, वैज्ञानिक सोच और प्रगतिशील विचारों पर केन्द्रित हैं। उन्होंने अपने विचार रूढ़िग्रस्त विचारों, अंधविश्वासों और अज्ञान के विरोध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं। बौद्ध धर्म की विवेचना पर लिखे उनके 'स्पिरिट ऑफ बुद्धिज्म' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ को भारत में नहीं अन्य बौद्ध धर्म माननेवाले देशों में भी सराहा गया है।

देश–विदेश में दीर्घ समय तक भ्रमण और कार्य करने के बाद जीवन की सांध्य–बेला उन्हें अपनी जन्मभूमि का ऋण चुकाने सागर खींच लाई। उनके पास शिक्षा, न्याय और राजनीति के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उनका विशद् अनुभव था। वे सोचते थे कि शिक्षा और विकास से वंचित इस धरा के साथ–साथ देश के सुनहरे निर्माण के लिए शिक्षा ही सर्वोत्तम साधन है। 16 फरवरी सन् 1946 ई. को उनके द्वारा सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की औपचारिक घोषणा की गई।

राष्ट्र हित के लिए जिस प्रकार भामाशाह ने अपना संचित धन महाराणा प्रताप को सहर्ष सौंप दिया था, उसी प्रकार भारत माँ के लाड़ले सपूत डॉ. हरिसिंह गौर ने परिश्रमपूर्वक अर्जित धन विश्वविद्यालय स्थापना के लिए दान कर दिया। इस कार्य के लिए उन्होंने आरंभ में बीस लाख रुपये दिए। 18 जुलाई सन् 1946 ई. को सागर नगर के निकट मकरोनिया की पथरिया पहाड़ी पर

हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में सागर विश्वविद्यालय की विधिवत स्थापना हुई। डॉ. गौर ने इस विश्वविद्यालय में प्रथम कुलपति का पद भी सुशोभित किया। उन्होंने अपनी अंतिम साँस लेने से पूर्व अपनी जीवन भर की गाढ़ी कमाई में से लगभग दो करोड़ रुपये की धन–संपत्ति सागर विश्वविद्यालय को अर्पित कर दी। सम्पूर्ण एशिया में किसी एक व्यक्ति मात्र के दान से स्थापित यह विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने उनकी दानवृत्ति को देखकर बहुत ही सटीक कहा था–

"सरस्वती –लक्ष्मी दोनों ने दिया, तुम्हें सादर जय–पत्र।
साक्षी है हरिसिंह तुम्हारा, ज्ञान –दान का अक्षय सत्र" ।।

डॉ. हरिसिंह गौर को अपनी संस्कृति से विशेष लगाव था। उन्हें बुन्देली लोकनृत्य, लोकगीत और खान–पान अत्यन्त प्रिय थे। वे अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान थे पर सागर में रहते हुए वे अपने परिजनों, विद्यार्थियों, नागरिकों से बुन्देली में ही बातचीत करते थे। उनके मन में अपनी मातृभाषा के प्रति अगाध प्रेम था।

बौद्धिक तीव्रता, अथक कार्यक्षमता, गहन संवेदनशीलता और विचारों की स्पष्टता उनके व्यक्तित्व के विशेष गुण थे। उनकी बहुमुखी प्रतिभा, उर्वर मेधा–शक्ति, उत्कृष्ट विवेकशीलता और कठिन परिश्रम ने उन्हें न्यायविद्, विधिवेत्ता, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, कवि, उपन्यासकार, निबंधकार, प्रखर वक्ता और राष्ट्रीय विभूति बनाया। वे एक ऐसे विशेष्य थे जिनकी विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए विशेषण भी कम पड़ जाते हैं।

सन् 1976 ई. में भारत सरकार द्वारा उनकी महान सेवाओं की स्मृति में विशेष डाक टिकट जारी किया। सन् 1983 में सागर विश्वविद्यालय का नाम डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर कर दिया गया। बीस मार्च सन् दो हजार आठ को इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय घोषित कर दिया गया है। डॉ. हरिसिंह गौर सागर विश्वविद्यालय की स्थापना के समय से ही इसे उच्च शिक्षा, विज्ञान, कृषि, विधि, भूगर्भ शास्त्र, चिकित्सा और यांत्रिकीय शिक्षा का केन्द्र बनाना चाहते थे। 25 दिसम्बर सन् 1949 ई. को 79 वर्ष की आयु में देश के महान सपूत डॉ. हरिसिंह गौर का निधन हो गया पर सागर विश्वविद्यालय के रूप में उनकी कीर्ति सदैव अक्षुण्ण रहेगी।

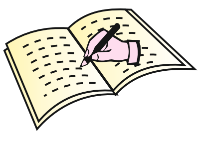

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न– 1 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोण से खोजकर लिखिए–

अभाव	विभूति
अक्षय	विदुषी
अद्वितीय	विधिवेत्ता
अर्जित	रूढ़िग्रस्त

प्रश्न– 2 पाठ के आधार पर सही जोड़ी बनाइए–

डॉ. हरिसिंह की गौरव गाथा	राणा प्रताप को
विश्वविद्यालय की स्थापना	प्रेरणा दायिनी
डॉ. हरिसिंह गौर की पत्नी	डॉ. हरिसिंह गौर
भामा शाह ने संचित धन दिया	ओलरिया

प्रश्न– 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में लिखिए–

(क) डॉ. हरिसिंह गौर का जन्म कब और कहाँ हुआ?
(ख) डॉ. गौर कौन–कौन से विश्वविद्यालयों में उपकुलपति रहे?
(ग) डॉ. गौर को 'सर' की उपाधि से किसने विभूषित किया है?
(घ) उन्होंने किस प्रशासकीय पद से त्याग पत्र दिया था?
(ड़) सागर विश्वविद्यालय की स्थापना कब क्यों और किसने की थी?

प्रश्न– 4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए–

(क) डॉ. गौर के विद्यार्थी जीवन पर प्रकाश डालिए।
(ख) डॉ. गौर को कुशल और सफल अधिवक्ता के रूप में क्यों जाना जाता है?
(ग) डॉ. गौर भामा शाह क्यों कहलाए?
(घ) डॉ. गौर ने शिक्षा जगत में बहुत सेवाएँ की हैं उस कथन को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न– 5 "सरस्वती लक्ष्मी दोनों ने दिया तुम्हें सादर जय पत्र" का आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा–अध्ययन

प्रश्न– 1 निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

शिक्षाविद्, विभूति, अधिवक्ता, औपचारिक

प्रश्न– 2 निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करते हुए उनके समासों के नाम लिखिए।

लालन–पालन, कानून–शिक्षा, सरस्वती–लक्ष्मी,
सांध्य वेला, देश–विदेश

प्रश्न– 3 निम्नलिखित में प्रयुक्त उपसर्ग और प्रत्यय पहचान करके अलग लिखिए–

अक्षय, उपकुलपति, सपूत, सहर्ष, सफलता
दूरदर्शिता, ऐतिहासिक, कार्यक्षमता

प्रश्न– 4 निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक–एक शब्द लिखिए–

वकालत करने वाला
जो थोड़ा जानता है
जो कभी न हो सके
जिसके आर–पार देखा जा सके
विद्या अध्ययन करने वाला

प्रश्न– 5 निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

झण्ड़ा गाड़ देना, लोहा मानना, घी के दिए जलाना, आँख का तारा होना।

प्रश्न– 6 नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर लिखिए।

इस संसार में सबसे अमूल्य वस्तु है 'समय'। इस संसार में सभी वस्तुओं को घटाया बढाया जा सकता है। पर समय नहीं। समय किसी के अधीन नहीं रहता। न रह समता है और न किसी की प्रतीक्षा करता है विद्यार्थी जीवन में समय का अपना महत्व है। समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति सदैव सफल होकर एक श्रेष्ठ नागरिक बनता है। समय का सदुपयोग तो केवल उदयमी और कर्मठ व्यक्ति कर सकता है। आलस्य समय का सबसे बड़ा शत्रु है विद्यार्थियों को इस शत्रु से सावधान रहना चाहिए।

क. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
ख. समय का सबसे बड़ा शत्रु कौन है?
ग. कौन–सा व्यक्ति श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है?
घ. समय का सदुपयोग कौन–सा व्यक्ति कर सकता है?

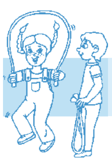

योग्यता विस्तार

- डॉ. हरिसिंह गौर की तरह शिक्षा जगत में अपना अमूल्य योगदान करने वाले व्यक्तियों की जानकारी संकलित कीजिए।
- अपने प्रदेश के विश्वविद्यालयों के नाम की सूची कक्षा में चर्चा करके बनाइए।
- भामा शाह के विषय में जानकारी प्राप्त करके उनके दान के विषय में दस वाक्य लिखिए।

पाठ - 24

महर्षि परशुराम

आइए सीखें : ● पौराणिक कथाओं का महत्व ● महर्षि परशुराम का जीवन चरित्र ● विशेषण, तद्‌भव, संधि

हमारा देश महापुरुषों का देश माना जाता है। हमारे देश ने ही सम्पूर्ण विश्व में मानवता का संदेश दिया है। समाज और परिवार के लिए ताना–बाना बुनने का कार्य भी इन्हीं महापुरूषों की देन है। ऐसे महापुरुषों की भारत वर्ष में लम्बी श्रृंखला है। महर्षि परशुराम सृष्टि के ऐसे प्रारम्भिक महापुरुषों में अग्रणी माने जाते हैं, जिन्होंने सामाजिक एकता और उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके प्रमुख कार्यों में मानवीय सद्‌गुणों की प्रतिष्ठा के साथ–साथ शस्त्र और शास्त्र के शिक्षण की गणना भी की जाती है। महर्षि परशुराम को समाज द्वारा ईश्वर का अवतार भी माना जाता है। मानव जीवन में संतुलन एवं सार्थकता की निरंतरता बनाए रखना महर्षि परशुराम की शिक्षा का मुख्य उद्‌देश्य रहा है।

पौराणिक संदर्भों के अनुसार महर्षि परशुराम का जन्म त्रेतायुग में वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को हुआ। मान्यता अनुसार इनकी जन्मभूमि वर्तमान मध्यप्रदेश में इन्दौर के निकट 'जानापाव' पर्वत मानी जाती है। इनके पिता महर्षि जमदग्नि ओर माता रेणुका थीं। महर्षि जमदग्नि का आश्रम माँ नर्मदा किनारे महष्मिति (वर्तमान महेश्वर) में था, जहाँ वे तपस्या करते थे। महर्षि ऋचीक इनके पितामह और महर्षि भृगु इनके प्रपितामह थे। भृगुकुल में जन्म लेने के कारण इन्हें 'भार्गव परशुराम' भी कहा जाता है। बचपन में इन्हें 'राम' कहा जाता था। भगवान शिव से शिक्षा प्राप्त करने और 'शिव' द्वारा दिए गये 'विद्युद्‌भि' नामक परशु धारण करने के कारण वे 'परशुराम' कहलाये।

शस्त्र और शास्त्रों में निपुण महर्षि परशुराम ने द्वापर युग में देवव्रत (भीष्म), द्रोण (द्रोणाचार्य), कर्ण आदि को शस्त्र विद्या की शिक्षा दी थी क्योंकि वे समाज में शस्त्र शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। साथ ही उन्हें केरल के कलरीपायट्‌टु की उत्तरी शैली वदक्कन कलरी (वर्तमान मार्शल आर्ट) के संस्थापक आचार्य के रूप में भी माना जाता है। गुरुकुल परम्परा के महान प्रतिनिधि महर्षि परशुराम का शक्तिशाली शरीर और शस्त्र ज्ञान उन्हें अन्याय के विरूद्ध होने वाले युद्धों में अपराजेय बनाता रहा तो उनकी शास्त्र ज्ञान सम्पन्न बुद्धि उन्हें समाज में न्याय की स्थापना के लिए सदैव प्रेरित करती रही है।

महर्षि परशुराम ने सामाजिक उत्थान की दृष्टि से तत्कालीन दक्षिण भारत के समुद्र तटवर्ती निवासरत् उपेक्षित जनसमूहों को संगठित किया, उन्हें शिक्षित और संस्कारित कर

शिक्षण संकेत– बच्चों से पौराणिक कथाओं के संबंध में चर्चा करें। पाठ में आए शब्दों का शुद्ध उच्चारण कराए। पाठ में आए अन्य पौराणिक पात्रों पर चर्चा करें।

समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित किया। यह पुराण प्रसिद्ध आख्यान युग –युग से यह संदेश देता रहा है कि मानव समाज में आत्मरक्षण और सामाजिक सुख संरक्षण के लिए शास्त्र–ज्ञान के साथ–साथ शस्त्र–बल की आराधना भी अत्यावश्यक है। शर्त यह है कि शस्त्र–सिद्धि पर शास्त्र–ज्ञान और मानवीय विवेक का अनुशासन हो। परशुराम इसी शस्त्र–शास्त्र की समन्वित शक्ति के प्रतीक हैं और यह उनके शस्त्र–सिद्धि को प्रमाणित करता है। राज्यभोग के प्रति उनका त्याग उनके समुन्नत शास्त्र–ज्ञान का सबल साक्ष्य देता है। ऐसे समन्वित व्यक्तित्व से ही लोकरंजन और लोकरक्षण संभव है।

वर्तमान भारत का केरल, गोवा और कोंकण क्षेत्र भी महर्षि परशुराम की कर्मभूमि मानी जाती है क्योंकि महर्षि परशुराम द्वारा ब्राह्मणों को सम्पूर्ण भूमि दान कर देने पर उन्होंने अपने स्वयं के निवास हेतु समुद्र से कुछ भूमि प्रदान करने की याचना की, तब समुद्र ने उन्हें अपना परशु समुद्र जल में फेंकने को कहा। परशुराम द्वारा समुद्र में फेंककर पहुँचाए गये परशु तक की भूमि समुद्र ने अपने जल से खाली कर वह भूमि परशुराम को सौंप दी। यही भूमि वर्तमान में केरल प्रदेश के नाम से जानी जाती है। इसी प्रकार परशुराम द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र वर्तमान अरूणाचल प्रदेश में भी उनके परशु द्वारा निर्मित कुण्ड का उल्लेख मिलता है जिसे 'प्रभुकुठार' के नाम से भी जाना जाता हैं

महर्षि परशुराम धरती पर वैदिक संस्कृति का प्रचार–प्रसार करना चाहते थे इसीलिए उनके द्वारा भारतवर्ष में अधिकांश गाँव बसाए गए। वे सदैव अपने गुरुजनों और माता–पिता की आज्ञा का पालन करते थे तथा सदैव बड़ों का सम्मान करते थे। उनका भाव यह था कि सृष्टि अपने प्राकृतिक सौंदर्य अर्थात् पशु–पक्षियों, वृक्षों, फल–फूल आदि से आच्छाादित हो।

महर्षि परशुराम को विष्णु के छठवें अवतार के रूप में भी मान्यता हैं। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि पुराणों, धर्मग्रंथों में उनकी यही छवि अंकित है। रामावतार के समय जनकपुरी मे सीता स्वयंवर के अवसर पर हुए शिव धनुष भंग की जानकारी प्राप्त होने पर महर्षि परशुराम ने वहाँ पहुँचकर अपना आक्रोश प्रकट किया, क्योंकि यह उनके गुरूजी का धनुष था। इस प्रसंग में परशुराम का श्रीराम के भ्राता लक्ष्मण से संवाद भी हुआ। परशुराम ने श्रीराम को देखकर यह सोचा कि यह अवश्य ही कोई पूर्ण अवतारी पुरूष हैं फिर भी मैं इनकी परीक्षा लेकर देखता हूँ। तब परशुराम ने अपना दिव्यास्त्र 'शाङ्र्ग' नामक धनुष जो विष्णु का धनुष था उसे श्रीराम के हाथों में देकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने को कहा। राम ने प्रस्ताव स्वीकार कर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा दी जिससे महर्षि परशुराम का संदेह दूर हो गया अब उन्हें यह विश्वास हो गया कि राम के अवतरित होने से यह पृथ्वी और सम्पूर्ण समाज सुरक्षित रह सकेगा। अंत में महर्षि परशुराम श्री राम का अभिवादन कर स्वयं तपस्या करने चले गये।

महर्षि परशुराम भारतवर्ष की चिरन्तन सनातन परम्परा के भी सच्चे प्रतिनिधि हैं। विश्व का इतिहास साक्षी है कि दुष्ट शक्तियाँ जब सामूहिक स्तर पर अधिक शक्तिशाली हो उठती हैं और न्याय, नियम एवं समस्त मानवीय मूल्यों को उपेक्षित कर देती हैं तथा शास्त्र उन्हें रोकने में असमर्थ सिद्ध होते हैं तब शस्त्र–शक्ति ही उनके अभिमान को नष्ट करके सुव्यवस्था बनाने में सक्षम सिद्ध होती है। परशुराम का शस्त्र–प्रयोग मानव स्वभाव के इस

सत्य को पहचानता है। परशुराम शास्त्र और शस्त्र के संतुलित प्रयोगकर्ता हैं। वस्तुतः वे आत्मगौरव से दीप्त मनुष्य की अस्मिता के रक्षक प्रतीक पुरुष हैं। जनसाधारण के बीच परशुराम को भगवान विष्णु के छठे अवतार के रूप में मानता है। ग्रन्थों में उन्हें 'चिरंजीवी' कहा गया है। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि धर्म–ग्रंथों और पुराणों में उनकी यही छवि अंकित है।

महर्षि परशुराम महापुरुष के रूप में सर्वत्र मान्य हैं। महापुरुष किसी एक देश एक युग, एक जाति अथवा एक धर्म तक सीमित नहीं होते हैं। वे तो सम्पूर्ण मानवता, समस्त विश्व की विभूति होते हैं। उन्हें किसी भी सीमा में बॉधना ठीक नहीं हैं महर्षि परशुराम में हमारे राष्ट्रीय जीवन का सत्य और शौर्य साकार हुआ है। वे चिरंजीवी–चिरस्मरणीय हैं।

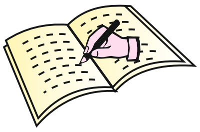

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न– 1 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोण से खोजकर लिखिए–

पौराणिक –	अक्षय –	प्रपितामह –
पितामह –	अस्त्र –	शस्त्र –
संस्थापक –	बलिष्ठ –	सनातन –
भार्गव –	चिरंजीवी –	अपराजेय –
चिरस्मरणीय –	दिव्यास्त्र –	

प्रश्न–2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(क) महर्षि परशुराम का जन्म किस तिथि एवं किस स्थान पर हुआ था ?

(ख) महर्षि परशुराम के माता–पिता कौन थे ?

(ग) बालक परशुराम ने किससे शिक्षा प्राप्त की ?

(घ) महर्षि परशुराम ने किस–किस को शस्त्र–विद्या सिखाई थी ?

(ङ) महर्षि परशुराम में कौन–कौन से गुण थे ?

(च) शस्त्र और शास्त्र ज्ञान का समन्वय क्यों आवश्यक है ?

(छ) महर्षि परशुराम द्वारा 'सामाजिक उत्थान' हेतु किए गए प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

(ज) केरल और अरूणाचल प्रदेश से महर्षि परशुराम का क्या संबंध है? लिखिए।

प्रश्न–3 खाली स्थान भरिए –

(क) भगवान परशुराम के पितामह .... थे।

(ख) ऋषि भृगु के वंशज .... कहलाते हैं।

(ग) महादेव शिव से प्राप्त परशु का नाम ....था

(घ) परशु द्वारा निर्मित कुण्ड का नाम .... है।

दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर छाँटकर लिखिए –

(क) महर्षि जमदग्नि का आश्रम स्थित था।

(अ) नर्मदा नदी के तट पर (ब) यमुना नदी के तट पर

(स) गंगा नदी के तट पर (द) ताप्ती नदी के तट पर

(ख) भगवान परशुराम का जन्म किस युग में हुआ –

(अ) द्वापर (ब) त्रेता

(स) सतयुग (द) कलियुग

भाषा-अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए –**

   कथा, अस्त्र–शस्त्र, आचार्य, आराध्य, प्रकृति

2. **निम्नलिखित शब्दों में आए विशेषण को अलग–अलग लिखिए –**

   आदर्श ऋषि, बलिष्ठ शरीर, वीर बालक, महान व्यक्ति,

3. **निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए –**

   परशु , गौ , मातृ , पितृ , मनुष्य

4. **संधि विच्छेद कीजिए –**

   द्रोणाचार्य , दिव्यास्त्र , महर्षि

5. **पाठ में आए हुए योजक–चिह्न वाले शब्दों की सूची बनाइए। जैसे – शस्त्र–शास्त्र**

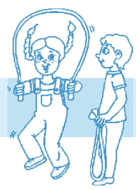

योग्यता विस्तार

1. महर्षि परशुराम से संबंधित अन्य कथा–प्रसंगों का अध्ययन कीजिए।
2. विश्व के महान व्यक्तियों की जीवनियों का अध्ययन कीजिए।
3. प्रसिद्ध पौराणिक महापुरुषों के जीवन की किसी घटना पर आधारित नाटक या एकांकी का अभिनय कीजिए।
4. विभिन्न धर्मों के प्रमुख ग्रंथों और महापुरुषों के बारे में इंटरनेट या पुस्तकालय से जानकारी प्राप्त कीजिए और उनकी सूची बनाते हुए उनका परिचय लिखने का प्रयास कीजिए।
5. पाठ में आए पात्रों और घटनाओं के बारे में अन्यान्य स्रोतों से भी जानकारी प्राप्त कर उसे अपनी पुस्तिका पर लिखिए।

विविध प्रश्नावली - 3

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सही जोड़ी बनाइए

महेश्वर	विक्रम संवत
धर्मरथ	पथ
नव संवत्सर	जायदाद
वसीयतनामा	नर्मदा
पथिक	भगवान राम

2. सही विकल्प चुनिए-

(1) सिर घोट मोट पर चुटिया थी लहराती

थी तोंद लटककर घुटनों को छू जाती ।

पंक्ति में रस है-

(क) अद्‌भुत (ख) हास्य (ग) शान्त (घ) करुण

(2) 'वन' का पर्यायवाची शब्द है-

(क) गिरि (ख) अरण्य (ग) तटिनी (घ) अचल

(3) 'पृथ्वी' सूर्य की परिक्रमा लगभग दिनों में पूरी करती है-

(क) 360 दिन (ख) 306 दिन (ग) 365 1/4 दिन (घ) 365 दिन

(4) इतिहास से सम्बंधित शब्द के लिए प्रयुक्त होगा-

(क) इतिहासिक (ख) ऐतिहासिक (ग) ईतिहासिक (घ) येतिहासिक

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. सम्राट विक्रमादित्य ने .... संवत् का प्रचलन प्रारम्भ किया था।
2. महेश्वर को सूर्यवंश के राजा .... ने बसाया था।
3. भगवान राम .... से ही विजय प्राप्त करने पर बल देते हैं।
4. रौद्र रस का स्थायी भाव .... है।
5. महाराजा की बातों से .... विश्वास हो गया ।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. धर्म रथ के चार घोड़े कौन-कौन से हैं ?
2. महेश्वर पर किन-किन सभ्यताओं का प्रभाव पड़ा है ?
3. 'बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स' पुस्तक के लेखक का नाम बताइए।
4. मोहन ने गाँधी जी की किस बात पर चलने का प्रयास किया ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रावण की मृत्यु किस कारण हुई थी ?
2. तलवार के पराक्रमी वीरों के नाम लिखिए।
3. पूर्णामांत और अमांत किसे कहते हैं ?
4. शारदीय और बासंतीय नवरात्रि किसे कहते हैं ?
5. सुन्दरता की मृगतृष्णा किन दृश्यों से पता चलती है ?
6. वसीयतनामें के न्याय को जाते समय मिली युवती ने राजा को अंधा क्यों कहा ?
7. शेरसिंह ने मोहन और बच्चों से किस बात पर शर्मिंदगी व्यक्त की ?
8. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए

   प्रथम , सफलता , अनुराग , माँग , सम्मुख

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. धर्मरथ के माध्यम से रचनाकार हमें क्या शिक्षा देना चाहता है ? समझाइए।
2. गुड़ी पड़वा किस उपलक्ष्य में तथा किस प्रकार मनाया जाता है ?
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' पथिक से क्या कहना चाहते हैं ? समझाइए।
4. रूपक अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए।
5. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए-

   ''किसी लोलुप नजर ने यदि हमारी मुक्ति को देखा।
   उठेगी तब प्रलय की आग जिस पर क्षार सोई है।''

6. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

"राधा का मुख मानो कमल समान अति सुन्दर"

पंक्ति में उपमेय क्या है?

पंक्ति में उपमान क्या है?

वाचक शब्द क्या है ?

प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।

7. 'अपना स्वरूप ' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

8. 'नन्हा सत्याग्रही' पाठ से क्या शिक्षा मिलती है? अपने शब्दों में लिखिए।

9. शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'पथिक से' कविता के कम से कम दो पद्यांश लिखिए।

10. 'वसीयमनामे का रहस्य' कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

11. रेडक्रास संस्था के उद्देश्यों को लिखिए।

12. निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

विद्यालय में छात्र का चरित्र निर्माण होता है। निष्कपट और निस्वार्थ भाव से सेवा करने का पाठ भी यहीं सीखता है। गुरुआज्ञा का पालन और राष्ट्रप्रेम का संदेश भी यहीं मिलता है। यथाशक्ति मानवता को पोषित करने का भाव भी यहीं मिलता है। वास्तव में विद्यालय व्यक्तित्व निर्माण की कार्यशाला और राष्ट्र धर्म को अंकुरित करने की पौधशाला है।

1. गुरु की आज्ञा मानने का संदेश कहाँ मिलता है?
2. रेखांकित शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए ।
3. पंक्तियों में आए सामासिक पद छाँटकर विग्रह कीजिए।
4. विद्यालय में छात्र क्या-क्या सीखता है ?

विशेष :-

इसके अतिरिक्त शिक्षक छात्रों से कुछ मौखिक प्रश्न भी करें जिससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का आकलन हो सके ।

शब्दकोश

अ, आ

अमल – निर्मल, पाप रहित
अकस्मात – अचानक
अखंड – जिनके टुकड़े न हो सके
अधम – नीच, पापात्मा
अभंग – अटूट, अखंड
अभिमान – घमण्ड
अम्बुज – कमल
अमान्त – अमावस्या को समाप्त होने वाला पक्ष
अलंकरण – सजावट
आयुध – हथियार
अवशेष – वह जो बचा रहे, शेष भाग
अविचल – स्थिर
अधीरा – बैचेन
असमंजस – दुविधा
आकृति – शक्ल, आकार
आघात – टूट प्रहार, ठोकर
आततायी – अत्याचारी, कष्ट पहुँचाने वाला
आत्महीनता – मन की हीन भावना
आर्थोपैडिक – हड्डियों से सम्बन्धित
आर्द्रसुख – वर्षा का आनन्द
आभामण्डित – तेज से युक्त
आश्वासन – आशा बँधाना, तसल्ली देना
अपराजेय – कभी भी पराजित न होने वाला
आसन्न – निकट, आसपास
आहुति – यज्ञ में डाली जाने वाली हवन सामग्री
अक्षय – जिसका कभी नाश न हो।
अस्त्र – फेंककर चलाए जाने वाला।

इ, ई

इरादा – इच्छा, विचार, संकल्प
इहलोक – यह लोक
ईर्ष्या – दूसरों की उन्नति देखकर जलना, डाह

उ ऊ

उच्चरहि – बखान करना
उत्कट – प्रबल, तीव्र
उत्कृष्ट – श्रेष्ठ, बहुत अच्छा
उत्खनन – खुदाई
उत्फुल्ल – प्रसन्न
उत्तरदायित्व – जवाबदेही, जिम्मेदारी
उत्सव – पर्व
उधारे – उद्धार किया
उन्मुख – अग्रसर, किसी ओर जाता हुआ
उर – हृदय

ऋ

ऋतु – एक ही तरह के मौसम का बहुत समय तक रहने की अवधि

ए, ऐ

एकाकीपन	–	अकेलापन
एकाग्रता	–	तल्लीनता
एकनिष्ठ	–	एक ही पर श्रद्धा रखने वाला

क

कटक	–	सेना
कंठगत	–	गले में अटकी
कमन्द	–	फन्देदार रस्सी, जिसे फेंककर लोग ऊँचे मकानों पर चढ़ जाते हैं।
कवच	–	शरीर की रक्षा करने वाला आवरण
कर्मठ	–	कार्य के प्रति समर्पित
कर	–	हाथ, टैक्स
कराल	–	कठोर
कृपाना	–	तलवार
कलुष	–	मन के विकार, मलिन भाव
कार्तिकादि	–	कार्तिक माह से प्रारम्भ होने वाला
कुधर	–	पर्वत
कुंकुमथाल	–	रोली की थाली
कुंभकला	–	घड़े पर की गई नक्काशी
कूतना	–	संख्या जानना, तौल आदि का अन्दाजा लगाना
कूप	–	कुआँ
कृत्यकृत्य	–	धन्य हो जाना
कृष्णत्व	–	कालापन, श्यामरंग
केन्द्रित	–	केन्द्र में स्थित
केहरिनाद	–	सिंह गर्जन
कोकिला	–	कोयल
कोटि	–	करोड़, श्रेणी
कोतवाली	–	थाना
कोदंडा	–	धनुष

क्ष

क्षतविक्षत	–	बुरी तरह घायल, कुचला हुआ
क्षमता	–	योग्यता, सामर्थ्य
क्षार	–	राख, खारा

ख

खता	–	दोष, चूक, अपराध
खनावै	–	खोदता
ख्याति	–	प्रसिद्धि, यश
खरीददार	–	खरीदने वाला
खुशामद	–	चापलूसी, चाटुकारी
खूँखार	–	हिंसक, निर्दयी, अत्यधिक क्रूर

ग

गज	–	हाथी
गयउ छपाई	–	छिप गया
गहे	–	पकड़ लिया
गर्जहि	–	गरजना
गाहक	–	ग्राहक
गुरुभाई	–	एक ही गुरु के शिष्य आपस में गुरुभाई कहलाते हैं।

गुहार - पुकार

ग्रन्थावली - वह पुस्तक जिसमें कई ग्रंथों का समावेश हो।

घ

घन - बादल

घनेरे - बहुत से

घर्षण - रगड़, घिसना

घृणा - नफरत, जुगुप्सा

घोर - भीषण

च

चतुरंगिनी अनी - चतुरंगी सेना

चरणाघात - पैर की ठोकर

चल-दल - पीपल के पत्ते

चाव - शौक, रुचि

चाका - पहिया

चित्त - मन, ध्यान

चिरन्तन - बहुत दिनों से चला आने वाला

चैत्रादि - चैत्रमास से प्रारम्भ होने वाला

चिरंजीवी - सदैव जीवित रहने वाला

चिरस्मरणीय - लम्बे समय तक याद रखने योग्य

छ

छाँडि - छोड़कर

छुभित - क्षुब्ध

छेरी - बकरी

ज

जग - संसार

जटिल - कठिन

जननी - माँ, माता

जयंती - जन्मदिन

जलकण - पानी की बूँदे (यहाँ अर्थ है-आँसू)

जस - यश, कीर्ति

जाके - जिसके

जादुई - जादू से भरी

जान - सुनकर, समझकर

जायजाद - सम्पत्ति

जिजीविषा - जीने की इच्छा

जियत - जीते जी

जीवन्त - जीवित, सजीव

जीवन यापन - जीवन-निर्वाह जीवन बिताना

जूथ - झुंड, दल

जोरी - जोड़ी

जौहर - आत्मसम्मान की रक्षा हेतु स्त्रियों द्वारा किया गया सामूहिक आत्मदाह। राजपूतों की एक परम्परा

ठ

ठट्टा - दल, भीड़

ठाऊँ - स्थान, जगह

ठाकुर मन के - मन के मालिक

त

तजि - छोड़कर

तत्परता - मुस्तैदी

तन्मयता – एकाग्रता, किसी में लीन हो जाने का भाव

तम – अंधकार

तरक्की – उन्नति, पदोन्नति

तरु – वृक्ष, पेड़

तल्लीनता – किसी काम में दत्तचित्त हो जाना

तसल्ली – आश्वासन

ताके – उसके

ताम्रपत्र – ताँबे का पत्तर, प्रशस्ति-पत्र

तारतम्य – अनुक्रम, क्रम

ताहि – उसको

तिकड़म – जुगाड़, चतुराई

तृण – तिनका

तेग (तंग) – तलवार, कृपाण

त्र

त्रोन – तरकश

द

दम – इन्द्रियों का वश में होना

दसानन – रावण, दस सिर वाला

दृढ़ – मजबूत

दफा हो जाना – चला जाना

दनुज – दानव

दहलती – थर्राती, डर के मारे काँपती

दादुर – मेंढक

दुर्भाग्य – बुरा भाग्य

दुविधा – असमंजस

दूरदर्शी – दूर तक की बात सोचने वाला

दूर्वादल – हरी-भरी घास

दौलत – धन, सम्पत्ति

दिग सिन्धुर – दिग्गज, दिशाओं के हाथी

दुर्भाग्य – बुराभाग्य

दुहाई – पुकारना

दिव्यास्त्र – दैवीय अस्त्र

ध

धरोहर – वह वस्तु या द्रव्य जो कुछ समय के लिए दूसरे के पास इस विश्वास से रखी जाए कि माँगने पर उसी रूप में मिल जाए।

धारणा – विचार

ध्रुपद – गायन की एक विशेष शैली

ध्यानस्थ – ध्यान करना

धर्मक्षेत्र – धर्मभूमि

न

नगण्य – तुच्छ, किसी गणना में न आने योग्य

नलद – बादल

नव-संवत्सर – एक वर्ष की अवधि का समय

नवेली – युवती

नफिरि – तुरही

नाना-बाने – अनेक वर्ण

नाचीज – तुच्छ

नारीत्व – नारी की शक्ति, स्त्रीत्व

निकाय – समूह

निज-निज – अपनी-अपनी

निदान – कारण, अन्त में, उपचार

निर्झर – झरना

नियति – भाग्य

निरर्थक – बेकार

निशाचर – राक्षस

निशि – रात्रि, रात

निष्काम – बिना स्वार्थ के, बिना किसी कामना के

निष्पक्ष – बिना भेदभाव के

निस्संकोच – बिना संकोच के

निस्तब्ध – बिना हिले डुले

निसान – नगाड़ा

नुस्खा – वैद्य या हकीम द्वारा रोग दूर करने के लिए लिखी गई औषधि का पर्चा

नूरमंजिल – लखनऊ में स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल

न्यायप्रिय – न्याय जिसे प्रिय हो

प

पनव – प्रणव, एक प्रकार का बाजा

परहित – दूसरों का हित

पताका – झंडा, परचम

पदकंज – चरण कमल

पदत्रान – जूते

परसु – परसा

पथिक – राहगीर

पदार्थ – चीज, वस्तु

पयोधि – समुद्र

पर्यवेक्षण – अच्छी तरह से देखना

पौराणिक – पुराणों में लिखीं या वर्णित।

पितामह – दादा (पिता के पिता)।

पर – पंख, परन्तु

प्रतीति – विश्वास

पार्थ – अर्जुन का एक नाम

पाषाण – पत्थर

पाहुन – मेहमान, अतिथि

पियासौ – प्यासा

पीर – संत, महात्मा

पुंज – समूह

पुरातात्विक – पुरातत्व सम्बन्धी

पुराविद – प्राचीन इतिहास आदि विषयों की जानकारी रखने वाला

पौरुष – वीरता

पुरुषत्व – पुरुष की शक्ति

पुलकावलि – आनन्द से रोमांचित होना, अत्यधिक प्रसन्नता

पूर्णिमान्त – पूर्णिमा को समाप्त होने वाला

पंछी – पक्षी

प्रकांड – सर्वश्रेष्ठ, अत्यधिक

प्रच्छन्न – छिपा हुआ, गुप्त

प्रणेता – पथ-प्रदर्शन करने वाला, रचनाकार, लेखक

प्रतिपल – हर क्षण

प्रयत्न – कोशिश

प्रशस्ति – प्रशंसा, बड़ाई

प्रागैतिहासिक – लिखित इतिहास से पहले के इतिहास से सम्बन्धित

प्राविट – वर्षाऋतु , पावस

प्रेरे – प्रेरित

प्रलय – सृष्टि का अंत, महाविनाश

प्रपितामह – दादा के पिता।

प्रेक्षण - देखने की क्रिया

फ

फलक - पटल, तख्ता

फर्स्ट-एड - प्राथमिक उपचार

ब

बंदिनी - महिला कैदी

बदतमीजी - अभद्रता, बुरा व्यवहार

बहु - बहुत प्रकार के

बाँकुरी - टेढ़ी

बिनु - बिना

बिरुदैत - विख्यात

बिसारी दे - भुला दे

बुद्धिदीप्त - मेघावी, तेज बुद्धिवाला

बुलफ्रेम माइनिंग - बुलफ्रेम नामक कच्ची धातु का खनन

बलिष्ठ - बलशाली/शक्तिशाली/बलवान।

भ

भाष्य - टीका, व्याख्या

भूधर - पर्वत, पहाड़

भार्गव - भृगु के वंशज।

म

मत्स्य - मछली

मन्तव्य - विचार, मत, राय

मन्द्र - गंभीर

मध्यस्थता - बीच-बचाव, तटस्थता

मधुकर - भौंरा, भ्रमर

मनभावन - मन को अच्छा लगने वाला

मनीषी - पण्डित, ज्ञानी

मरणोपरान्त - मरने के बाद

मर्सिया - शोक-गीत

मुँडेरों - छत पर चारों ओर बनी मेड़

मुक्ति - आजादी

मुफ्तानन्द - मुफ्त का आनन्द लेने वाला

मूलमंत्र - मूल तत्व

मृग-तृष्णा - (एक प्रकार का भ्रम) रेगिस्तान में रेत पर सूर्य की किरणें पड़ने पर जल का भ्रम होता है।

महामानव - बड़े-बड़े मनुष्य

मृगराज - सिंह

मर्म - भेद, रहस्य, सार

य

यथापूर्व - पहले की तरह

याचक - माँगने वाला

र

रज - धूल

रण - युद्ध

रण गाकुरी - रोद्ध (बुद्ध की कुशलता)

रुचि - पसन्द

रेडक्रास - पीड़ित मानवता की सेवा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन

ल

लक्ष्य - उद्देश्य

लहू - रक्त

लहे - प्राप्त करे

लालसा - कामना, इच्छा

लिप्सा - चाह, इच्छा

लीन – मग्न, रत
लेई – लेना
लोलुप – लालची

व

वक्तव्य – कथन, बात
वखानि – वर्णन करना
वध – मारना
वंदि – वन्दना करके
वृन्द – समूह
वनस्थली – वनभूमि
वरिष्ठ – अधिक अनुभवी
वसुधा – पृथ्वी
वसीयत – वसीयत सम्बन्धी लिखित आदेश
वात्सल्य – बच्चों के प्रति प्रेम
वापी – बावड़ी
वारि – जल, पानी
विच्छिन्न – अलग किया हुआ, काटा हुआ
विजिटिंग कार्ड – पहचान पत्र, वह कार्ड जिसमें स्वयं का परिचय रहता है।
विरद – यश, कीर्ति
विरासत – उत्तराधिकार में प्राप्त
विलक्षण – अद्‌भुत, अनोखा
विलुप्त – गायब हुआ
विवाद – मतभेद, झगड़ा
विश्व-विख्यात – संसार में प्रसिद्‌ध
विषाद – दुख, उदासी
विसर्जन – छोड़ देना, त्याग देना
विहगवृन्द – पक्षियों का समूह
वीणा वादिनी – वीणा बजानेवाली, सरस्वती
बैज – पहचान पत्र (जो कमीज या कुर्ते की जेब में लगा रहता है।
व्यक्त करना – प्रकट करना, कहना
व्यथा – कष्ट, दुःख
व्यापक – फैला हुआ

श

शंका – संदेह
शमन – दमन, शांत
शहीद – किसी अच्छे कार्य के लिए प्राणों का बलिदान करने वाला
शास्त्र – ग्रंथ
शृंगार – सजाव, सजना, सजाना
श्रद्‌धांजलि – मरने के बाद श्रद्‌धा प्रकट करने हेतु व्यक्त शब्द
शस्त्र – हाथ से चलाए जानेवाले।

स

संसार रिपु – जन्म-मृत्यु रूपी शत्रु
समर – युद्‌ध
सहनाई – शहनाई
संस्कृति – प्राचीन सभ्यता, आचरणगत परम्परा
संग्राम – युद्‌ध
संवत्सर – संवत्, वर्ष
संवर्द्धन – विकास, वृद्‌धि, बढ़ाव
सकपकाना – घबराना
सनातन – प्राचीनतम/आदिकाल से।
संस्थापक – स्थापना करनेवाला।

सर्वतोन्मुखी	– सभी प्रकार का
सहस	– सहस्त्र, हजार
सहानुभूति	– संवेदना, हमदर्दी
साधक	– साधना करने वाला
साष्टांग	– आठ अंगों (सिर, आँख, हृदय, पैर, हाथ, मन, कर्म और वचन से प्रणाम करना।
सिद्धि	– सफलता
सिहरती	– रोमांचित होती
सुगमता	– आसानी
सुधि	– खोज-खबर
सुभट्टा	– उत्तमवीर
सुलभ	– आसानी से मिलने वाला
सुलूक	– व्यवहार
सूक्ति	– सुभाषित, अच्छा कथन
सूर	– शूरवीर
सूत्रबद्धता	– रस्सी में बँधी
सोनवलाक	– एक प्रकार का पक्षी
सौतन	– पति की दूसरी पत्नी
सौरज	– शौर्य
संक	– डर
सनेह	– स्नेहपूर्वक
स्यंन्दन	– रथ
समार	– रिपु
सितिमुख	– वाण

ह

हतप्रभ	– निस्तेज, शिथिल, आश्चर्य चकित
हतोत्साहित	– जिसका उत्साह समाप्त हो गया है
हलाकान	– व्याकुल, व्यग्र
हाहाकार	– रोने, चिल्लाने की मिश्रित आवाजें
हुँकार	– गर्जना

कक्षा - 8

अभ्यास प्रश्न-पत्र

(हिन्दी एवं सहायक वाचन पर आधारित)

1. **सही विकल्प चयन कर लिखिए-**

(अ) महेश्वर नगरी नदी के तट पर है-

(क) नर्मदा (ख) चम्बल (ग) सोन (घ) बेतवा

(आ) सिकन्दर की छाती दहलती थी-

(क) हिन्दुस्तान की तलवार से (ख) बिजली के गरजने से

(ग) अपनी प्रजा से (घ) गीत-संगीत से

(इ) 'खेड़ा सत्याग्रह' नाम पड़ा-

(क) अंग्रेजों के विरूद्ध बखेड़ा करने से

(ख) खेड़ा के किसानों के लगान के कारण

(ग) अंग्रेजों को खड़ा करने (घ) अन्याय के विरोध में

(ई) मन, वचन और काया से इंद्रियों को अपने वश में रखना कहलाता है-

(क) अहिंसा (ख) अस्तेय (ग) ब्रह्मचर्य (छ) अपरिग्रह

(उ) 'सत्याग्रह शब्द का संधि विच्छेद है-

(क) सत्य+ग्रह (ख) सत्य+आग्रह (ग) सत्या+ग्रह (घ) सत्याग+रह

2. **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -**

(अ) अधिक फूल खिलने के कारण पटना का नाम .... भी था।

(आ) मुण्डा जन जाति में 'सिंग' का अर्थ है .... ।

(इ) एक समय में सौ प्रकार की बातें सुनकर दोहराने वाले व्यक्ति .... कहलाते है।

(ई) शांतिनिकेतन की स्थापना .... ने की थी।

(उ) गुप्तवंश भारतीय इतिहास में .... के नाम से विख्यात है।

(ऊ) धनुरासन में शरीर की आकृति............................के समान हो जाती है

(ऋ) ईश्वर में विश्वास करने वाला....................... कहलाता है।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(अ) 'गाँव में रहनेवाले व्यक्ति' के लिए एक शब्द लिखिए।

(आ) 'विचार' और 'हस्तक्षेप' शब्दों के लिए आगत (विदेशी) शब्द लिखिए।

(इ) नारी तथा पुरुष शब्दों में 'त्व' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए।

(ई) 'नारी' और 'जल' शब्दों में उचित विशेषण जोड़कर लिखिए।

(उ) उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण लिखिए।

(ऊ) निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कर लिखिए–

पण्डित, आत्मज, तरुणी, पत्नी

(ए) जुगुप्सा किस रस का स्थाई भाव है?

(ऐ) मोहन जाएगा? इस सम्बोधन से यदि वाक्य प्रश्नवाचक बन जाए तो इस आरोह- अवरोह को क्या कहेंगे?

1. बलाघात 2. अनुतान 3. मात्रा-संतुलन

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3 से 5 वाक्यों में दीजिए–**

(अ) जब बहू ने दर्पण देखा तो वह व्याकुल क्यों हो गई? उसके अनुभव अपने शब्दों में लिखिए।

(आ) 'बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' में सालिम को कैसे अनुभव हुए?

(इ) संगीत का सामाजिक महत्व कब और क्यों बढ़ जाता है?

(ई) कारकों के चिह्न (परसर्ग) कौन-कौन से हैं?

(उ) मोहन पढ़ने में चतुर है 'और' मोहन गाना गाता है इन वाक्यों को जोड़कर संयुक्त वाक्य बनाइए।

(ऊ) 'वसीयत नामे का रहस्य' अथवा 'याचक और दाता' नामक कहानियों में से किसी एक का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ए) पाषण युग का मानव किस प्रकार का जीवन जीता था?

(ऐ) प्राणायाम के लाभ बताइए।

(ओ) सत्याग्रह आश्रमवासियों को किन नियमों का पालन करना पड़ता था?

(औ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

"मेरे स्वराज्य का ध्येय अपनी सभ्यता की विशेषता को अक्षुण्ण बनाए रखना है। मैं बहुत-सी नई बातों को लेना चाहता हूँ, पर उन सबको भारतीयता का जामा पहनाना होगा। भारत ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है ऐसा तभी कहा जा सकेगा, जब जनता यह अनुभव करने लगेगी कि उसे अपनी उन्नति करने तथा रास्ते पर चलने की आजादी है।"

- गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
- स्वराज्य का ध्येय क्या है?
- पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है ऐसा कब कहा जा सकेगा?

5. (अ) अपने प्रधानाध्यापक को साँची घूमने जाने के लिए तीन दिवस के अवकाश हेतु आवेदन-पत्र लिखिए।

अथवा

अपनी माताजी को एक पत्र लिखकर शाला की बाल-दिवस की गतिविधियों के बारे में बताइए।

(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए-

1. गणतंत्र दिवस 2. तुलसीदास 3. कम्प्यूटर 4. मेरा प्रिय शिक्षक

(इ) गांधीजी ने फिनिक्स आश्रम की स्थापना क्यों की?

6. (अ) निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

न इसका अर्थ हम पुरुषत्व का बलिदान कर देंगे।
न इसका अर्थ हम नारीत्व का अपमान सह लेंगे॥
रहे इंसान चुप कैसे कि चरणाघात सहकर जब,
उमड़ उठती धरा पर धूल, जो लाचार सोई है॥

अथवा

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।
इन्द्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन
फिर-फिर आए जीवन में सावन मन भावन

(आ) निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

"ऋषि-मुनियों और साधकों की हजारों वर्षों की तपस्या एवं परिश्रम का प्रतिफल है संगीत। कहा जाता है कि जिस समाज में कला का स्थान नहीं होता वह समाज भी प्राणहीन हो जाता है।"

अथवा

"चाँद आता है तो चाँदी जैसी चमक उठती है, सूरज आता है तो उस जैसी ही तप उठती है।"

विशेष :-

शिक्षक छात्रों से कुछ मौखिक प्रश्न भी करें जिसमें उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का आकलन हो सके।

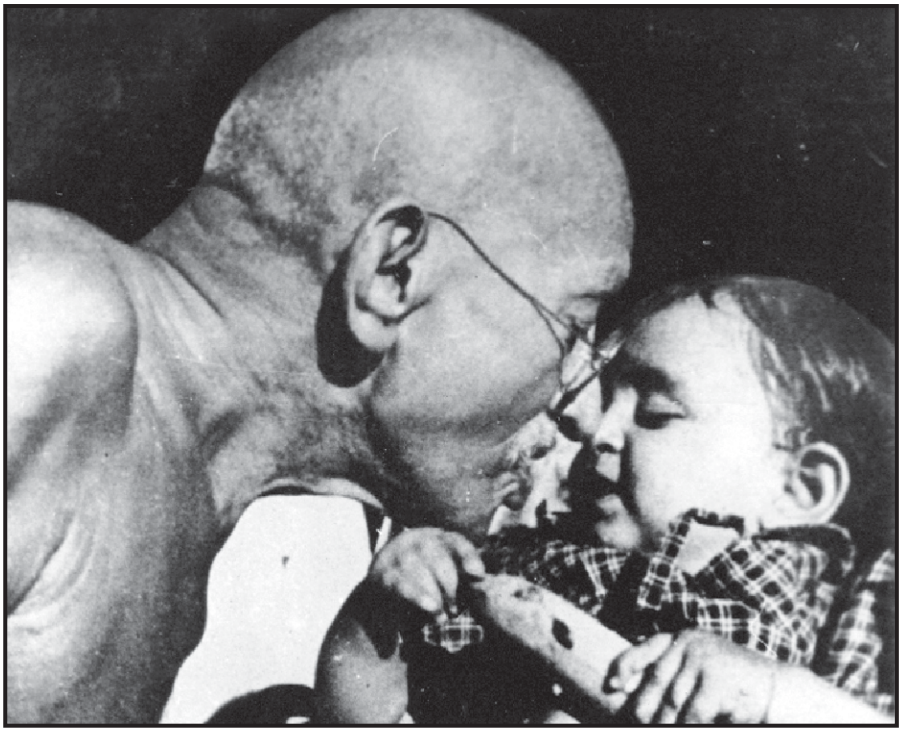

विद्यार्थियों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिए जिससे वे संसार के महान धर्मों को आदर के साथ सीख सकें।

–महात्मा गांधी

राष्ट्र-गीत

वन्दे मातरम्

श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय : आनन्दमठ

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।
शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकित यामिनीम्।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्।।
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्त्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह–

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हो;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके ; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।